

JAINA INSCRIPTIONS.

*Containing Index of Places, glossary of names of Shrāvaka Castes and Gotras
of Gachhas and Achāryas with dates.*

BY

Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,
Vakil, High Court, Examiner, Calcutta University; Member, Asiatic Society of
Bengal; Behar & Orissa Research Society; Sahitya Parishad, Calcutta;
Jaina Shwetambar Education Board, Bombay; &c. &c.

• PART I.

(With plates)

CALCUTTA,

1918

Printed by
PUNDIT KRISHNA GOPAL MISHRA
at the
B L. PRESS

1-2, Machuabazar Street, Calcutta Except pp 1—62
Printed by Ramdhn Singh at the Vishvavinode Press, Azimganj
AND

Published by V J JOSHI, Hony Manager,
Jaina Vividha Sahitya Shashtra Mala Office, Benares City.

जैन लेख संग्रह ।

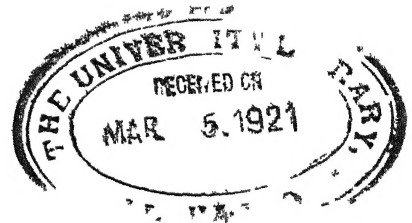
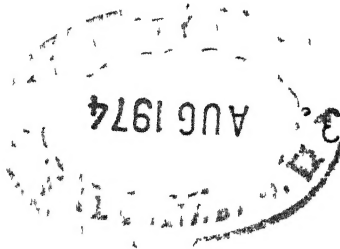
कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त ।

प्रथम खण्ड ।

संग्रहकर्ता

पूरणचन्द नाहर, एम. ए., बि. एल.,

वकील, हाईकोर्ट, रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक
सोसायटी बेंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार-उड़िसा आदि के
मेंबर, विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २



कलकत्ता

वीरसंवत् २४४४

मूल्य—५)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही हैं। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हीं के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूँ ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखतेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्गरेजी जर्नेल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी घुस पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहां के लेख देखे बिना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि उसका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूँ। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूँ, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से शीघ्र क्षय हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं:—

- १ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
 ३ । कुर्शिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।
 ५ । आचार्यों के नाम, शिष्यों के नाम, पहावली ।
 ६ । देश, नगर, ग्रामों के नाम । ७ । कारिगरो के, खोदनेवालों के नाम ।
 ८ । राजाओं के, मंत्रियों के नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरोंक विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संवत्, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुज्ञ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरूपसे पाया नहीं जाता है—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि “ओसवाल” ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उवपश [४] ऊपश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओसवाल । लिखना निष्प्रयोजन है कि यहा सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक ‘ओसवाल’ हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्यों के नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें बिल्कुल नहीं हैं। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसा बहुतसी कठिनाइया मिलती है, स्थान २ में प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पडा नहीं गया है।

यह “लेख संग्रह” संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पडा है सो सुज्ञ पाठक समझ सकते हैं; “नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।” अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहांके जैन लेखों को प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना ।

कलकत्ता }
 इ० सं० १९१५ }

निवेदक—
 पूरणचन्द नाहर ।

सूचीपत्र ।

पत्रांक

पत्रांक

अजिमगंज [मुर्शिदाबाद]

सुमतिनाथजीका मन्दिर	१
पद्मप्रभुजीका	३
नेमिनाथजीका	४
चिंतामणिजीका	५
संभवनाथजीका	६।२१
शान्तिनाथजीका	७
सांवलीयाजीका	८
राय बुधसिंहजी का घर दे०	७

बालूचर [मुर्शिदाबाद]

आदिनाथजीका मन्दिर	८
विमलनाथजीका	१०
संभवनाथजीका	१२
सांवलीयाजीका	१५
दादाजीकास्थान	१७
रायधनपतसिंहजीका घर दे०	१४
किरतचन्दजीका घर दे०	१५

कठगोला [मुर्शिदाबाद]

आदिनाथजीका मन्दिर	१७
-------------------	-----	-----	----

महिमापुर [मुर्शिदाबाद]

नगत्शेठजीका मन्दिर	१८
--------------------	-----	-----	----

कासिमबाजार [मुर्शिदाबाद]

नमिनाथजीका मन्दिर	१९
-------------------	-----	-----	----

दस्तुरहाट [मुर्शिदाबाद]

नीर्य मन्दिर	२१
--------------	-----	-----	----

कलकत्ता

धर्मनाथ स्वामीका मन्दिर	२२।६४
महावीर स्वामीका	२७
चंद्रप्रभुजीका	२८
शीतलनाथजीका	२९
माधोलालजीका घर दे० (बडतला)	३०
माधोलालजीका घर दे० (मुर्गिहट्टा)	३१
जीवनदासजीका घर दे०	३२
पद्मालालजीका घर दे०	३५
आदिनाथजीका देरासर	३१।६३

चंपापुरी [भागलपुर]

वासुपूज्यजीका मन्दिर	३२
----------------------	-----	-----	----

नाथनगर (भागलपुर)

सुखराजजीका घर देरासर	३७
----------------------	-----	-----	----

भागलपुर

वासुपूज्यजीका मन्दिर	३८
----------------------	-----	-----	----

काकंदी [विहार]

सुविधिनाथजीका मन्दिर	४१
----------------------	-----	-----	----

क्षत्रिय कुंड [विहार]

महावीर स्वामीजीका मन्दिर	४२
--------------------------	-----	-----	----

गुणाया [विहार]

श्रीमहावीरजीका मन्दिर	४२
-----------------------	-----	-----	----

पावापुरी [विहार]

समवसरण	४४
जलमन्दिर	४५
गांव मन्दिर	४५

विहार			पत्रांक	पत्रांक		
				चिकागो [अमेरीका]		
मथियान महलाका मन्दिर	५२	डा० कुमार स्वामी	६६
चन्द्रप्रभुजीका	५४	इङ्ग्लेन्ड		
आदिनाथजीका	५५	मे० लुबार्ड
राजगृह				जयपुर [राजपूताना]		
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	५८	व्यापारीओंके पासको मूर्तिपर	...	६७
विपुलगिरि	६४	अजमेर [राजपूताना]		
रत्नगिरि	६५	बारली गाव से प्राप्त पत्थर
उदयगिरि	६६	घनारस [काशी]		
स्वर्णगिरि	६७	सुतडोला का मन्दिर	...	६८
वैभार गिरि	बट्टीजीका	...	६९
कुंडलपुर				पटनीडोलेका
आदिनाथजीका मन्दिर	७०	सुन्नीजीका
पटना				रामचन्द्रजीका	...	१००
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	७१	प्रतापसिंहजीका	...	१०२
दादावाडी	८३	कुशलाजीका	...	१०१
स्थुलभद्रजीका मन्दिर	८२	सिंहपुरी [घनारस]		
शेठ सुदर्शनजीका	८३	कुशलाजीका मन्दिर	...	१०३
समेत शिखर				मिर्जापुर		
ऋजुवालुका	८४	पचायती मन्दिर
मधुवन	धनसुखदासजीका	...	१०५
टोकके चरणों पर	८६	दिल्ली		
तेजपुर [आसाम]				चेलपूरीका मन्दिर	...	१०६
रायमेघराजजी का मन्दिर	८३	नवघरेका	...	१०९
म्युनिक [जर्मनी]				चिरेखानेका	...	११६
जादुघर	८६	छोटे दादाजीका	...	१२३
				हजारामलजीका घर दे०	...	१२१

पत्रांक

पत्रांक

अजमेर ।

गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर	१२४
सम्भवनाथजी का	१२७
दादाजीकी छत्री	१३३

जयपुर ।

यति श्यामलालजीके पास मूर्तियों पर	१३४
यति किशनचन्दजीके पास मूर्तियों पर	१३५

जोधपुर ।

महावीर स्वामीजीका मन्दिर	१३६
केसरीयानाथजीका	१४१
मुनिसुब्रत स्वामीजीका	१४३
धर्मनाथजीका	१४४

दिनाजपुर ।

चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर	१४६
-----------------------------	-----	-----	-----

धुलेबा रिखभदेव (मेवाड़)

केसरीयानाथजीका मन्दिर	१४८
दादाजीकी छत्री	१५१
पगलीयाजी	१

पालीताणा (काठियावाड़)

मोतीसुखीयाजीका मन्दिर	१५२
शेठ नरसिंह केशवजीका	१५३
शेठ नरसिंह नाथाका	१५४
शेठ कस्तुरचन्दजीका	१
गोडी पार्श्वनाथजीका	१५५
यति करमचन्द हेमचन्दका	१५८
बडा मन्दिर (गांवमें)	१
दिगांबरीका पञ्चायती	१६०

शत्रुंजय पर्वत ।

साकरचन्द प्रेमचन्दकी दुक	१६०
प्रेमाभाई हेमाभाईकी	१६१
प्रेमचन्द मोदीकी	१
शेठ वाल्हाभाईकी	१६३
शेठ मोतीशाकी	१६४
मूल (आदिश्वरकी)	१

राणकपुर ।

आदिनाथजीका मन्दिर	१६५
-------------------	-----	-----	-----

सादही ।

पार्श्वनाथजीका मन्दिर	१७२
-----------------------	-----	-----	-----

नाकोडा ।

जैनमन्दिर	१
-----------	-----	-----	---

बालोतरा ।

शीतलनाथजीका मन्दिर	१७४
केसरीयानाथजीका मन्दिर	१७६

वाढमेड़ ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका	१७८
यति इन्द्रचन्दजीका उपाश्रय	१७९
गोपोंका	१

मेडता ।

आदिनाथजीका मन्दिर	१८०
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	१८१
वासुपूज्यस्वामीका	१८२
धर्मनाथजीका	१
आदिश्वरजीका नया	१८४

पत्रांक			पत्रांक		
चिन्तामणिपार्श्वनाथका ,,	...	१८७	केकिंद ।		
कड़लाजीका ,,	...	१८६	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	२२२
महावीरजीका ,,	सेवाही ।		
तपगच्छका उपाश्रय	१८१	महावीरजीका मन्दिर	२२६
ओसिया ।			सांडेराव ।		
महावीर स्वामीका मन्दिर	१६२	शान्तिनाथजीका मन्दिर	२२८
सन्धियाय माताका ,,	...	१६८	नाना ।		
डुंगरीके चरण पर	१६६	जैन मन्दिर	२२६
पाली ।			लालराई ।		
नौलखा मन्दिर	जैन मन्दिर	२३१
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	२०४	हटुंदी		
लोढारो वासका ,,	...	२०५	महावीरजीका मन्दिर
शान्तिनाथजीका ,,	माताजीका ,,	...	२३३
सोमनाथजीका ,,	खण्डरमें मिला हुआ पत्थर पर	२३४
नाडोल ।			जालेर ।		
भादिनाथजीका मन्दिर	२०६	महावीरजीका मन्दिर	२४१
ताम्र शासनमें	२०८	चोलुखजीका ,,	...	२४३
नाडलाई ।			तोपखानामें	२३८
भादिनाथजीका मन्दिर	२१२			
नेमिनाथजीका ,,	...	२१७	हरजी ।		
कोट सोलंकी ।			जैन मन्दिर	२४३
जैन मन्दिर	२१८	जूना ।		
घाणेराव ।			जैन मन्दिर	२४४
जैन मन्दिर	जूना बेटा ।		
बेलार ।			जैन मन्दिर	२४५
भादिनाथजीका मन्दिर	२१९	नगर गांव ।		
फलोदी ।			जैन मन्दिर	२४७
बड़ा जैन मन्दिर	२२१			

पन्नांक				पन्नांक			
सांचोर				वधोणा			
जैन मंदिर	२४८	जैन मन्दिर	२६७
रत्नपुर				लाज-नीतोडा			
जैन मंदिर	२४८	जैन मन्दिर	२६७
बिलाडा				नोदिया			
जैन मंदिर	२५०	जैन मंदिर	२६६
बोहिया (मारवाड़)				कोटरा			
जैन मंदिर	२५०	जैन मंदिर	२६६
कोटार [गोड़वाड़]				वरमाण			
जैन मन्दिर	२५१	जैन मन्दिर	२६९
किराडू				लोटाना			
कुमारपालका जीर्ण मन्दिर	२५१	जैन मन्दिर	२६६
सुंधा पहाड़ी .				माकरोरा			
जैन मन्दिर	२५३	जैन मन्दिर	२६६
घटियाला				घबली			
जैन मन्दिर	२५६	जैन मंदिर	२७०
पिंडवाडा				सीवेरा			
जैन मन्दिर	२६२	जैन मंदिर	२७०
वीरवाडा				जीरावल पार्श्वनाथ			
जैन मन्दिर	२६५	जैन मंदिर	२७०
बसंतगढ़				अंजारा पार्श्वनाथ			
जैन मन्दिर	२६५	जैन मंदिर	२७३
पालडी				कापडा पार्श्वनाथ			
जैन मन्दिर	२६५	जैन मन्दिर	२७३
कालाजर				अलवर			
जैन मन्दिर	२६६	जैन मंदिर	२७४
कामद्रा				पटना-म्युम्ह्यम			
जैन मंदिर	२६६	पाषाणके चरणो पर	२७७
उधमा							
जैन मन्दिर	२६६				

लेखांक

लेखांक

प्रतिष्ठा स्थान ।

अजमेर	५६६
अजिमेगञ (मुर्शिदाबाद)	८५७६१४२
अतरी	४०
अलवर	१०००
अष्टार	५३२
अहमदाबाद	६६७१११२३५६३६०३७२३८२
					४४४५२६
अहिलाणी	४४८
आगरा	२९५३०७३०६३१०३११
					३२२१४३३५०६
आमेण	१२५
आरामपुर	३२७
आवरणी	७६८
आसलपुर	८५६
इडर	६२७
इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	५२६
उदयगिरि (राजगृह)	२५३१२५४१२५५
उदयपुर	६४५७४४
उन्नतनगर	६८७
उपकेश (ओसिया)	१३४
उमापुर	४८९
अजुवालुका	३३६
कडी	३५
कमलमेरु	४८३
कर्पटहेटक	६८१
कलकत्ता	८७
कलवर्मा	६७४१६७५१६७६

कलागर (कालाजर)	६५६
काकदी	१७३
काकर	४८१
कायपा	४७१
कालघरी	६४
कालुपुर	६६७
कास्माबजार (मुर्शिदाबाद)	८१८४
कीराट कूप	६४२
कोठारा	६५२
कोरडा	१०६
खहेडा	८९६
खुदीमपुर	२२१
गणवाडा	६४७
गधार	३९१६०८६५३७६६
गुनशिला	१७७१७८१७६१८०
गुब्बर ग्राम (बडगाव)	२७१
ग्रेहडी	३
गोरईया	५५४
गोलकुंडा	७७२
गोलीपा	४७६
चंपकदुर्ग	८५०
चंपकनर	४८४
चपानगर	१४३१६५
चपापुरी	१३७१४६१५८
चिमणीया	५१०
चुपरा ग्राम	६२४
जयनगर	१६३
जलवाह	२७९
जवाच	१६

लेखांक			लेखांक		
जाणांधारा	...	२८३	नन्दियाक (नोदिया)	...	६६३
जालोर	...	८३७।६०५	नल	...	२९१
जावरनगर	...	७१५	नलीतपुर	...	६५४।६५५
जावालीपुर	...	८६६।६००	नागपुर	...	५८०।६१३
जीरावला पार्श्वनाथ	...	६७३।६७६	नाणा	...	८६०
जीर्णदुर्ग	...	६७७	नापलीया	...	६
जैनगर	...	५१६	पत्तन	...	२१।५१।५४।११।१५५
जोधपुर	...	६१२।८२८।८३८		...	५०४।५४०।५५६।५६८।८५१
झूझणू	...	१२१	पाटण	...	७०६
डिडिला ग्राम	...	९६६	पल्लिका	...	८०६।८१३।८१४।८१५।८१६
ढेढेया	...	५६८	पालिका	...	८३०
तिजारा	...	४२१	पाली	...	८२५।८२६।८२७
दंतराई	...	७४	पल्यपट्ट	...	६०६
दधालीया	...	४६६	पाटलिपुत्र	...	३०५
दिलि	...	५२७	पाटलिपुर	...	३२०।३२८।३३०
दिवसा	...	६२४	पाडली	...	३२९
द्विपवन्दर	...	१३०	पाडलीपुर	...	३१३।३१४
देवक पसन	...	६६६।६७०	पडलीपुर	...	२७३
धंधूका	...	६	पटना	...	३१५
धमडका (कच्छ)	...	१२३	पाटझलि (पालडी)	...	९५५
धांदू	...	४२३	पाटरी	...	४२२
धार	...	६२१	पानविहार	...	३६
धुलेवा	...	६२७।६४६	पावापुरी	...	१८४।१९०।१९२।१९३।२०६।२१०
नडुल	...	८३७।८३६।८४५।८६२	पींडरवाडा	...	७३।६४५।६४६।६४८
नट्टल	...	६४३।६४४	पीडवाडा	...	६४६।६५०।६५१
नडूल डागिका	...	८४१।८४३।८४६।८५७	प्रयाग	...	१४५
नडुलाइ	...	८४१।८५४।८५६।८५८	फलवर्जिका	...	८७०।८७१
नाडलाई	...	८४७			
नन्दकुलवती	...	८५२			

लेखांक

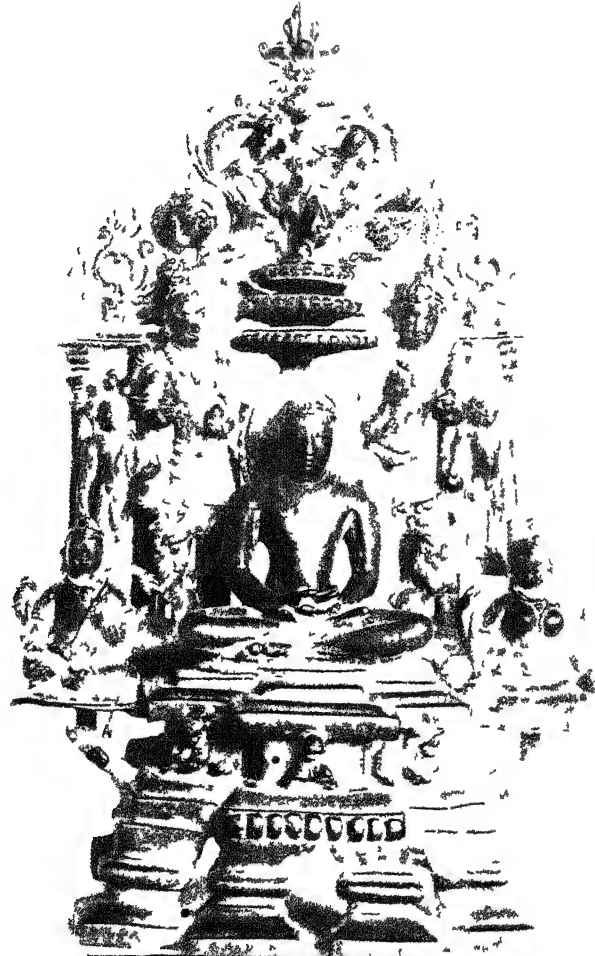
लेखांक

प्रतिष्ठा स्थान ।

अजमेर	५६६
अजिमगञ्ज (मुर्शिदाबाद)	८५७६१४२
अतरी	४०
अलवर	१०००
अष्टार	५३२
अहमदाबाद	६६७१११२३५६३६०३७२३८२
					४४४५२६
अहिलाणी	४४८
आगरा	२९५३०७३०६३१०३१९
					३२२१४३३५०६
आमेण	१२५
आरामपुर	३२७
आवरणी	७६८
आसलपुर	८५६
इडर	६२७
इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	५२६
उदयगिरि (राजगृह)	२५३१२५४२५५
उदयपुर	६४५७४४
उन्नतनगर	६८७
उपकेश (ओसिया)	१३४
उमापुर	४८९
अजुवालुका	३३६
कडी	३५
कमलमेरु	४८३
कर्पटहेटक	६८१
कलकत्ता	८७
कलवर्मा	६७४१६७५१६७६

कलागर (कालाजर)	६५६
काकंदी	१७३
काकर	४८१
कायषा	४७१
कालघरी	६४
कालुपुर	६६७
कास्माबजार (मुर्शिदाबाद)	८१८४
कीराट कूप	६४२
कोठारा	६५२
कोरडा	१०६
खहेडा	८९६
खुदीमपुर	२२१
गणवाडा	६४७
गधार	३९१६०८६५३७६६
गुनशिला	१७७१७८१७६१२८०
गुज्जर ग्राम (बड़गांव)	२७१
ग्रेहडी	३
गोरईया	५५४
गोलकुंडा	७७२
गोलीषा	४७६
चंपकदुर्ग	८५०
चंपकनर	४८४
चपानगर	१४३१६५
चपापुरी	१३७१४६१५८
चिमणीया	५१०
चुपरा ग्राम	६२४
जयनगर	१६३
जलवाह	२७९
जवान	१६

लेखांक			लेखांक		
जाणांधारा	...	२८३	नन्दियाक (नोदिया)	...	६६१
जालोर	...	८३७।६०५	नल	...	२७१
जावरनगर	...	७१५	नलीतपुर	...	६५४।६५५
जावालीपुर	...	८६६।६००	नागपुर	...	५८०।६१३
जीरावली पार्श्वनाथ	...	६७३।६७६	नाणा	...	८६०
जीर्णदुर्ग	...	६७७	नापलीया	...	६
जैनगर	...	५१६	पत्तन	...	२१।५१।५४।११।१५५
जोधपुर	...	६१२।८२८।८३८		...	५०४।५४०।५५६।५६८।८५१
झांझणू	...	१२१	पाटण	...	७०६
झिडिला ग्राम	...	९६६	पल्लिका	...	८०६।८१३।८१४।८१५।८३२
ढेढेया	...	५६८	पालिका	...	८३०
तिजारा	...	४२१	पाली	...	८२५।८२६।८२७
दतराई	...	७४	पल्यपट्ट	...	६०६
दधालीया	...	४६६	पाटलिपुत्र	...	३०५
दिल्लि	...	५२७	पाटलिपुर	...	३२०।३२८।३३०
दिवसा	...	६२४	पाडली	...	३२९
द्विपबन्दर	...	१३०	पाडलीपुर	...	३१३।३१४
देवक पसन	...	६६६।६७०	पडलीपुर	...	२७३
धंधू का	...	६	पटना	...	३।५
धमडका (कच्छ)	...	१२३	पाटझलि (पालडी)	...	९५५
धादू	...	४२३	पाटरी	...	४२२
धार	...	६२१	पानविहार	...	३६
धुलेवा	...	६२७।६४६	पावापुरी	...	१८४।९६-।१६२।१६७।२०६।२१०
नडुल	...	८३७।८३६।८४५।८६२	पीडरवाडा	...	७३।६४५।६४६।६४८
नडुल	...	६४३।६४४	पीडवाडा	...	६४६।६५०।६५१
नडूल डागिका	...	८४१।८४३।८४६।८५७	प्रयाग	...	१४५
नडुलाइ	...	८४१।८५४।८५६।८५८	फलवर्द्धिका	...	८७०।८७१
नाडलाई	...	८४७			
नन्दकुलवती	...	८५२			



ಶ್ರೀ ವೈಷ್ಣವೇಶ್ವರೇಶ್ವರ
ಪ್ರತಿಷ್ಠಾಪನಾಯಕನಿಂದ

Metal Image (Ardha Padmāsana) with inscription in
Southern Character (back), in possession of the Author

JAIN INSCRIPTIONS



जैन लेख संग्रह ।

ग्रान्त - पूर्व ।

जिला मुर्शिदाबाद । स्थान अजिमगञ्ज ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर * ।

धातुर्यों के मूर्ति पर ।

[I]

ॐ ॥ श्री सरवाल गङ्गे असांमूकेन कारित ॥ संतु १११० × ।

* नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है । स्वर्गीया श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलालचन्दजी तत्पुत्र संग्रह कर्त्ताके परम पूज्य पिता राय सेताबचन्द नाहार बाहादुर हैं । पूर्व मन्दिर गङ्गास्रोतसे नष्ट हो जानेसे आप यह नवीन चैत्य संवत् १९५४ में निर्माण करवाया है । प्रथम मन्दिरका लेख- ॥ श्री ॥ सं १९१३ मिति वैशाख सुदि ५ शुक्रवासरेश्री जिन भक्ति सूरि साखायां उ० श्री आनन्द बल्लभ गणि । नत् गिण्य पं । प्र । सदालाभ मुनि उपदेशात् श्री अजिमगञ्ज बास्तव्य नाहर श्री खड्गसिंहजी तत्पुत्र श्री उत्तमसिंहजी तत्भार्या श्री मयाकुमर एषः श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संघाय समर्पितश्च विधिना सतां ॥ जं । यु । प्र । श्री जिन सौभाग्य सूरिजी विजय राज्ये ॥ श्री रस्तुः ॥ कल्याणमस्तुः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ १ ॥

× यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्ति के पीछे खुदा भया है, अक्षर बढ़ोत प्राचीन है । मुसलमानोंने चितौर दहल करनेके पूर्वमें यह मूर्ति वहां पर थी ।

[2]

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गढे प्रग्वाट झातीय व्य० उदा जार्वा-
चत्त तत्पुत्र जोला जार्वा डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मूडनेन श्री गढेश श्री मेरुतुंग सूरिणामुप-
देशेन ज्ञाता श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ।

[3]

संवत् १४७९ वर्षे पोष वदि ५ शुके ग्रेहमी वास्तव्य श्रीमाल झाती श्रे० प्रतापसींह
जा० सोहगदे सुत झूदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विंवं कारितं पूर्णिमा गढे
प्रतिष्ठितं श्री सूरि जिनबल्लज सूरि ।

[4]

सं० १५१० व० फा० शु० १२ उकेश बंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रजला सु०
साजण जा० जइसिरि पु० षेढा जा० कणसिरि पेता जा० लषमसिरि पुत्र ३ काळु खेमधर
देवराज जा० चांझू सा० हापाकेन जा० ३ गूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे
श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पट्टः कारितः तपा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिजिः प्रतिष्ठितः ।

[5]

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुके श्री उपकेश झाती. नाहर गोत्रे सा० लेला पु० लाघा जा०
रोहिणि पु० चांपा साळू लादा सहितैः पितु श्रेयसे श्री श्रेयांस नाथ विंवं का० प्रति० श्री
श्रीबो० ग० श्री बिजयचंद्र सूरि पट्टे ज० श्री साधू रत्नसूरिजिः ।

[6]

संवत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुके श्री श्रीमाल झा० व्यव० आका जार्वा रातलदे
सुत लांवाकेन जा० मानू नापा निमि । श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्र० पिप्फ० श्री मुनि सिंधु
सूरि पदे श्री अमरचंद्र सूरिजिः ॥ नापलिया ग्रामे ।

(३)

[7]

संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे । सी० श्री राजा जा० रजमन्नदे पु० दोसा ठाकुर घना हाथी लीवा हाथा जा० हरषमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतैः श्री पार्श्वनाथ विंबं कारापितं श्री संडेर गळे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० देमासुंदर पदे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

[8]

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे उकेश वंशे लूणीया गोत्रे साः धीमा पुत्र साः सधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनन्नद्र सूरिजिः खरतर गळे ।

[9]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीमाल झातीय सा० लाईयाफेन चार्या गांगी पुत्र हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रमाई श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गळे श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । धंधूका वास्तव्य ॥

[10]

संवत् १५५० वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ ओकेश झातीय चारडा सुत मेहा चार्या पदमाई श्रेयसे जणसाखी पताकेन श्रीवासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिनदंस सूरिजिः ।

[11]

संवत् १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्तमाने मालवक देस ॥ उपकेस झातौ सा० देवसी जा० देमा पु० सा० सागा जा० रूपणं पुत्र जसपाल जा० लक्ष्मी पुत्र रत्ना विंबं प्रतिष्ठितं । तपा गळे श्री हेमवत्त (विमल) सूरिजिः ॥

(४)

[12]

संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर
जट्टारक गह्वेश ज० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर ज० श्री जिन सौजाग्य सूरिजिः कारितं च
श्रीमाख बंशे टाक गोत्रे मोह्या दास पुत्र हनुतसिंहस्य जार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयर्थ ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत् १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल ज्ञाती खिगा गोत्रे समदडीया उडकेण०
सुहडा जा० सुहागदे पु० कम्माकेन जा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन
स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गह्वे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक्क
सूरिजिः ।

[14]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख बदि ४ गुरौ उंसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० सरवण
जा० राणी सुत सा० सिंघा जा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना जार्या विरणि सुत सा०
पुनपाल सा० सोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं
प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सुदि ० प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० बेता जार्या मदी सुत व्य०
जोजाकेन जा० राजू त्रातु राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयर्थ श्री शांतिनाथ विंबं
का० प्र० तपागह्वे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिजिः सिरुत्रा बास्तव्य ।

(५)

दो० स० हेमाकेन जा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिनिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रबौ उंशवाल झातीय जण्णारी गोत्रे सा० गेदहा पु० सो * पी जा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अजिनंदन विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गछे ज० श्री विजयचंद्र सूरि पढे श्री साधुरत्न सूरिनिः ।

[18]

संवत् १५२७ वर्षे बै० व० ११ बुधे लांवडी बास्तव्य उकेश झातीय व्य० बीमसी जा० वानू पुत्र व्य० गणमा जा० वाबू पुत्र व्य० केदहाकेन जा० मानू बृद्ध जा० घूषा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुब्रत स्वामी चतुर्विंशति पद कारितः प्रतिष्ठितः ॥ * वस्त्रगत चांइ सगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंबदणीक * गछे प्रतिष्ठा कारिता । * (अक्षर अस्पष्ट है) ।

[19]

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दली० वंश डुल्लह गोत्रे ठ० पादहणमीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ विंबं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पढे श्री जिनसुंदर सूरयस्तपढे श्री जिनदर्ष सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

[20]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० बठा जा० वाखहदे सु० रुदा जा० पदह सु० ठिरा णिरा आंवा सह लषा युतेन श्री पद्मप्रभु विंबं कारितं उपकेश गछे ककुदा-चार्य संताने ज० श्री देवगुप्त सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥

(६)

[21]

संवत् १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य सा० सांडा जार्या लषमाइ सुत
बीर पाखेन जार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तथा
गङ्गाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिश्चिरं नंदतात् ।

[22]

॥ रौप्य के मूर्ति पर ॥

संवत् १९३३ का जैष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिर्थाका उस वंशे दुधे-
ड़िया गोत्रे बाबु हर्षचंद तत्पुत्र बाबु बिसनचंडेन कारितं पुनर्जिया विजय गढे श्री शांति
सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री संजवनाथजी का मंदिर ॥

[23]

संवत् १९११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ दिने ज० झातीय श्री वरलक्ष गोत्रे नागु संताने
राजा जार्या राजलदे सुत सह सावळू राणा हुदा श्री मल्लयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंड
प्रज स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहन्नृगे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि
पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिजिः शुभं ॥

[24]

संवत् १९४६ वर्षे माघ सु० १० रवौ श्री श्रीमाल झा० सं० जूजच जार्या सं० जरमादे
सुत सं० समरसी जार्या धनाइ सु० रा० अर्जन केन जार्या अहिवदे पु० सं० राणा शाणा
प्र० कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंबं कारि० प्रति० श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर
सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिजिः । बुगुज ग्राम ॥

(७)

[25]

संवत् १५६३ वर्षे माह बदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल झातीय लघु शाखायां । व्य०
केसव जा० जरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । त्रा० व्य० आसाकेन जार्या अमरादे जात
व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिजिः श्री
स्तम्भ तीर्थे । कुतवपुर बास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

[26]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे उस्वाख झातीय सूरणा गोत्रे साह शिवदास
जिनदासकेन गृहे जार्या नाई नारिग सुत जात राजपाल सहितेन मातृ नारिग श्रेयोर्थ श्री
कुंथुनाथ विंबं श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारापित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गढे नंदिवर्द्धन
सुरि पदे नयचंद सुरिजिः ॥

[27]

संवत् १७०० वर्षे फागुण सु० १२ — — — — गढे जद्वारक शुभकीर्त्ति उपदे-
सात् अत्ताल झाती गोपल गोत्रे सं । दोर राज जार्या सेदल पुत्र सं० चेरह राज जार्या जीरी
पुत्र बालूमणी नित्यं प्रणमंति ॥

[28]

॥ श्री शांतिनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५१० वर्षे पौ० सु० १५ शुके उपकेश झातीय फ० शिवा जा० प्रीमलदे सुत फ०
रामाकेन जा० आसू प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री तपा
मह नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सुरिजिः ॥

[29]

॥ राय बुधसिंहजी छुधेड़िया का घरदेरासर ॥

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश वंशे सेठि गोत्रे श्रे० सीधरेण जा०

बिरी सुखूणी पु० थावरसिंह । जटादि युतेनं स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंभं का० प्र० श्री खर
तर गछे श्री जिनजड सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ।

॥ श्री सांवलियाजी का मंदिर — रामबाग ॥

[30]

संवत् १५४६ माघ वदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासू जा० लाडो
नामन्या पु० सिवराज जार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री
अजितनाथ विंभं का० प्र० उपकेश गछे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिजिः ॥

जिला — मुर्शिदाबाद । स्थान — बाबूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परका लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत्विश्वमादित्य राज्यात् संवत् १७४५ मिते । श्री शास्त्रिवाहन
शकाब्दाष्टके १७१० प्रवत्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे
श्री तपगङ्गाधिराज जट्टारक श्री विजय जैनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर बारनट्ट
ठजलानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्मचार धुरंधर साहजी श्री केशरी
सिंहजी तस्यजार्या धर्म कर्मणि रता बीबी सरूपोजी पं० । श्री ज्ञानविजय गणिरुपदेशात् ।
स्वगृह जिन विंभं स्थापनार्थं ॥ बाबूचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं० ज्ञान
विजय पं० गंजरीर विजय गणिजिः । यावत्वरामुमेरोद्रि । यावच्चैलोक्य ज्ञाखरं । तावत्तिष्ठत्

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुजांवर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर बिज-
योर्जित ज्ञान लक्ष्मी ॥ यस्योपदेश वचनाय्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो वञ्चूव
१ ॥ तत्पदे क्रमतोरवीव विजय जैनैन्द्र सूरिश्चर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो वासोचरे
द्वंगके ॥ श्री संघेश सहायता शुतरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज नक्ति
बशतः कारापितायं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरिश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम
चूमान्यः श्री रुद्धि बिजयोजवत् ॥ ३ ॥ तद्विव्य जाव बिजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्यं
प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुजतः ॥ ४ ॥ नदं नवतु संघस्य नदं प्रासाद कारके
तथा नदं तपा गङ्गे नदं नवतु धर्मिणां ॥

॥ धातुर्येपरका लेख ॥

संवत् १४९० वैशाख सुदि ५ जार उडिया गोत्रे । सा० जोंदा सुत । सा० पदाकेन पु०
फासु रजनादि सहितेन स्वचार्या पदम श्री पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंभं श्रीहेमहंस सूरिजिः

संवत् १५१३ बै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत महीया श्रेयसे
त्रातृ हीराकेन त्रातृज कुसूया सुतेन श्री शांतिनाथ विंभं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पक्षे श्री
रत्नासिंह सूरिजिः ॥

संवत् १५२० वर्षे माघ वदि ५ गुरौ ऊपकेश ज्ञातीय श्रे० तेजा चा० तेजलदे पुत्र जूठा
चा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयार्थ संनवनाथ
विंभं का० श्री साधू पुर्णिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरिणा मुपदेशेन प्र० श्री बिजयनद्र सूरिणा
कडी वास्तव्यः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शु० ३ दिने सा० अरसी जाया रानू पुत्र सा० लूणाकेन जार्या टीसू प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सी हा सहजा सीहा जा० होरू श्रेयोर्य श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्र० श्री कारंट गच्छे श्री — सूरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमालान्वये डढडा गोत्रे साह श्री चंड पुत्र चौतादहण अजय राजा रायमल्ल आसधीर आजा जार्या केली पुत्र सा० योगा इहहा शकतन पासा नरपाल साह सहसमल्ल पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमल्ल पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इहहा जार्या इहहादे पुत्र सहसमल्ल सीहमल्ल साह आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र पेता जइनमल । पेता पुत्र जैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सूरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी कांमंदिर ॥

संवत् १४०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनि० दुगड़ गोत्रे सा० धीडा पु० डाडा पुत्र साटा हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रूढहा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० बृहज्जीय श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥ शुभं नवतुः ।

संवत् १५१५ वै० व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संतारी पुत्र सा०

कर्म सीहैन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुब युनेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुवत बिंव का० प्र० तथा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल गोत्र सा० लाला जा० लखनादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला लीला रामपाल जार्या आंनू पुत्र लोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुवत बिंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[42]

उं संबत १५७६ वर्षे श्री खरतर गछ जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पादह सा० लकू जा० नीप्पा रा—सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ जौमे श्रीमाल झातीय ढोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदास जार्या वा० ईडाणी ताज्यां पूण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंव कारितं प्र० खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिजिः । श्री जिनजानु सूरीणामुपदेशेन । अजाईः ४१ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[44]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि । आसोज सुदि ९ तिथो बुधवारे रू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र छठमीपत्त चि । धनपत्त ठत्रसिंघ श्री आदिजिन बिंव कारापितं वा० सदालाज प्रतिष्ठितं ॥ ज्ञान्ति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिर्थी । मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पञ्चरोंपरका लेख ॥

[45]

संवत् १८४४ मिते वैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचर पुरे । ज० श्री जिनचंद्र सूरि जी
बिजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० दामाकल्याण गणिः । तच्च कुमागदि
युतानामुपदेशतः श्री मकसूदावाद बास्तव्य समस्त श्री सद्देन श्री सम्भव जिन प्राप्तादः
कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चैत्य वर्णनं । निधान कटोर्नवज्जिर्मनोरमै । विगुह्य देवः कलशैर्विराजितं ॥
सुचारु धंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चतुस्तपाका प्रकौरः
प्रकाम । माकारयद्भूनमनिन्द्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टयुद्धीन् । पापात्मनश्चावततः
कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीजि । जेव्यात्मजिर्नृरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्ये
प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोंके मूर्तिपर ।

[47]

उं संवत् १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठग लाधू जार्या धर्मिणि पुत्र सं० अचज्ज
म० हीराकेण जा० रङ्गादे पुत्री सेनाइ प्रमु० बुद्धिमान् युतेन श्री चंद्रप्रज विवं कारितं श्री
स्वरतर गळे श्री जिनचंद्र सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय ठग लाधू जार्या धर्मिणि पुत्र सं० अचज्ज
दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन पहिराजादि युतेन स्वश्रे-

(१३)

यसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पदे श्री जिन
सुन्दर सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनहर्ष सूरिवरैः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुणै श्री उपकेश वंशे सं० देवदा चार्या दूवदादे पुत्र वरुणा
सुभ्रावकेण चार्या मेघू पुत्र जयजइता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अखल गछेश्वर श्री जय
केसरि सूरिणासुपदेशेन श्री सम्भवनाय विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं १५२४ वर्षे मार्गशर्ष सुदि १० शुके उपकेश झातौ । आदित्वनाग गोत्रे सं० गुणधर
पुत्र सं० कालण जा० कपूरी पुत्र सं० केमपाल जा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन जातु पास
दत्त देवदत्त चार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रज चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः
श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक सूरिजिः श्री जट्टनगरे ॥

[51]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुके उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा जा० कपूरी पु० सा०
आसा जा० नाऊं पु० हर्षा जा० मनी जा० साइया रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी नमि०
श्री वासुपूज्य विंवं उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[52]

उं संवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ सोमं आन्दाइ झातीय बु० गांगा बु० मुजा पुत्र बु०
महिराज जा० रमाइ आविकया श्री वासुपूज्य विंवं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर
सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कव्याणं चूयात् ।

[53]

सं १५३४ वर्षे उपकेश झातीय बांज गोत्रे सहवी जाटा जा० जयतलदे पु० माणिक

अगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्ले प्राग्वाट ज्ञातीय म० पादहा पुत्र म० पांचा जार्या
बाइदेऊ पुत्र म० नाथा जार्या आ० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज
जीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं
कुतव पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपट्टे श्री सौजाग्य नन्दि सूरिजिः श्री पत्तन वारतव्यः ॥

[55]

सं १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जेठा जा० मट्हाई पुत्र
सोनाकर जा० बाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूष्णिमा पद्मे श्री मुनि रत्न सूरिणा-
मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

[56]

संवत् १९०३ शाके १९६० प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मछुदावाद
वास्तव्य लंसवाल ज्ञाती बृद्धशाखायां साह निहालचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ
जिन विंव कारापितं । खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । तप्पा सागर गच्छे ।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[57]

सं १९१० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ जार्या महताब कुंवर चंद्रप्रज पञ्च-
तीर्थीका । उ । सदा लाजेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९४३ आषाढ़ शुक्ल १०
स्वात्मनः कल्याणार्थ ।

किरतचन्दजी सेठिया का घरदेरासर—चावलगोला ।

[58]

सं० १५३३ वैशाख बदि ४ प्राग्वाट व्य० अषा जा० आढळी पुत्र व्य० नरसीहेन जा०
पह पु— साढटादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंवं का० प्र० तपा रत्नशंखर सूरि
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर—कीरतबाग ।

[59]

पाषाण के मूर्तियोंपर ।

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंडे श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-
जीत्कानामुपदेशेन । उस बंशे मांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी तत्पुत्र सा० उदय
चंद्रजी तत्पत्नी तथा उस बं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फतेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ
आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री मत्पार्श्वनाथ विंवं कारापितं । प्रतिष्ठितश्च वि०
सूरिजिः श्री जानुचंद्रेति आचंडार्कचिरं नन्दतात्नञ्ज श्रूयाश्चिञ्च ।

[60]

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंडे श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-
जीत्कानामुपदेशेन उस बं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी
तत्पत्नी तथा उस बंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फतेचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द
चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य विंवं कारापितं । प्र० सूरि श्री जानुचंद्रेति ज्ञात
श्रूयाश्चिञ्च सदा ॥

[61]

पाषाणके चरणोंपर ।

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रबासरे उस बंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

(१६)

जी तत्पुत्र सा० लक्ष्मणचन्द जी तत्पुत्र बाइ अजयोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यदिन गण-
धर पाहुका काराणितं ।

[62]

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०
श्री लक्ष्मणजी तत्पुत्र बाइ अजयोजीकेन श्री बाबुजी प्रथम गुज्जम गणधर
पाहुका काराणितं ।

[63]

सं० १८६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुलाधिप श्री जिनदत्त सूरिणां चरण
स्थापन श्री सदाशिवे श्री जिनदत्त सूरिणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्तियोंपर ।

सं० १९१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द जा० राजू पुत्र नाथू जार्जा रूपिणि
मातृ-नाइका केन जार्जा लीलू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ दिवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री सोमजुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्येः ७ ॥ कालधरी ॥

[65]

सं० १९३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरु रजीआण गोत्रे हुवड़ दातीय दोली तालुर सी ॥
नात हुसी लुन दोली बाबाकेन ६२ गज दासा पौगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंजनाथ दिवं
कारितं हुवड़ गछे श्री सिधदत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीतकुञ्जर गणि ।

[66]

सं० १९३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल झा० सा० गेआ जा० जाऊ सु०
सा० साजण जा० मदीयरि सु० सा० लटकण जा० गुराइ सु० सा० सोम सा० पासा

(१७)

सहस्राख्यैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्टः पूर्णिमा पट्टे श्री पुष्करत्न
सूरीणामुपदेशेम कारितः प्रतिष्ठितश्च बिधिना श्री अहमदाबाद नगरे ।

श्री दादास्थान का मन्दिर ।

पाषाण के चरणोंपर ।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत् १८२१ मिति माघ सुदि १५ दिने मङ्गलवार जी श्री १०० श्री
समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०१ श्री ... शास्त्रायां
पंक्तितोत्तम प्रवर श्री ९ श्री जीमजा श्री साङ्गजी तत्तिष्य पं० बांधाजी तत्तिष्य ... ज्ञारी
नन्दस्य लक्ष्मणेन सुआवक पुण्य प्रजावक कातेख गोत्रे साहजी श्री सोजाचन्द जी तत् ज्ञातृ
मोतीचन्द जी श्री मत् बृहत खरतर गळे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूडामणि जट्टारक प्रचु
श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०९ श्री जिनकुशल सूरि श्री श्रीश्च-
राणां पातुता कारापिता मङ्गलदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिजिः ॥ शुभमस्तु ।

[68]

संव १८९६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुभवारि बृहत् श्री खरतर गळे
जं० । यु० । ज० । श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सफाया ज्ञानार्थ पावन प्रधान बुद्धि
निधान । श्री मङ्गलध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर गणिविद्यारथां चरण स्थापन ॥
साहजी हूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधरिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रतापसिंह जी आग्रहण
प्रतिष्ठितं श्री रत्तुः कल्याणमस्तुः ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर - कठगोडा ।

[69]

ॐ संवत् १८८९ वर्षे पौष यदि १० गुरौ श्री नीमा झासीय मं० गङ्गा नदी सप्तश्रु २०

(१८)

सुतेन सह स्वयरेण स्वश्रेयसे श्री जीवतस्वामि श्री सुपार्श्वनाथ विंव कारापितं प्रतिष्ठितं श्री
बृहत्तपा पक्षे श्री रत्नसिंह सुरिजिः शुजंजवतु ।

[70]

सं० १५३० वर्षे माघ सुदि ४ शुके सांख्योसण वासि प्राग्वाट झा० व्य० सोना जा० साज
पु० व्य० नारद बंधु व्य० विरूआकेन जा० वीद्वहणदे पु० देधर मेला साइयादि कुटुंब युतेन
निज श्रेयसे श्री सम्जवनाथ विंव का० प्र० श्री तपा गछे श्री लक्ष्मीसागर सुरिजिः ॥

[71]

सं० १५०३ शाके १९६० प्रवर्त्तमाने माघ कृष्ण ५ मृगु अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल
झाती बृद्ध रामबाणां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह विसंघजि तत्चार्या रुषमणी स्वअर्थे श्री
आदिश्वर जिन विंव जरापितं श्री शांतिसागर सुरिजिः प्र० ॥

श्री जगरसेठजी का मन्दिर — महिमापूर ।

[72]

सं० १५२२ वर्षे माघ बदि १ गुरो प्रा० झा० म० जेसा जा० सुरी पुत्र सर्वणेन जा०
रूपाइ मन्त्र पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंव का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पक्षे श्री
पुण्यचंद्र दुरीणार दिक्षेन विधिना श्री विजयचंद्र सुरिजिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ व० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० होरा जा० रूपादे पुत्र व्य० देपा जा०
गीमति पु० गांगाकेन जा० नाथी पुत्र मेरा जातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ विंव
का० प्र० तपा गछे श्री लक्ष्मीसागर सुरिजिः । पीरवाड़ा ग्रामे मुंठलिया बंशे श्रीः ।

(१९)

[74]

सं १५७९ वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश झातौ बलहि गोत्रे राका शाखायां सा०
यासड जा० हापू पु० पेथाकेन जा० जीका पु० १ देपा छूदादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ
श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने ज० श्री सिद्ध
सूरिजिः दन्तराइ वास्तव्यः ।

[75]

स्फटिक के बिंब पर ।

सं १७१० ब० ज्येष्ठ सु० १ श्री स्तम्भ तीर्थ बा० उकेश झा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति
जा० शिवा श्री कुन्धुनाथ बिंब प्र० श्री विजयानन्द सूरिजिः । तप (नय) करण ।

[76]

रौप्यके मूर्ति पर ।

सं० १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथी । उंसवाल बंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक चन्दजी स्वधर्म
पत्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन बिंबं चिरं जयसात् ॥ श्रेयोस्तुः ॥
जय जयतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमबजार ॥

[77]

धातुयोंके मूर्तिपर ।

सं० १४८० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपकेश झातीय आयचणाम गोत्रे सा० आसा जा०
बाहि पु० राजू नाहू जा० रूपी पु० खेमा तादहा सावड़ श्री नमीनाथ बिंबं का० पूर्वतलि०
पु० आत्मा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ।

(२०)

[78]

सं० १५१९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्मा पुत्र सा० पासा जा० पूनादे पुत्र साना पाझनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं स्वपु ण्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सुरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुखसङ्गे जट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १७७९ वर्षे मिती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं काकरेचा मोत्रे सा० बीरदास पुत्र क्षमीपतिकेन ।

[81]

सम्बत् १७७० वर्षे मिती माह वदि ३ बार गुरु दिने कारितमिदं पंकित मुनिचंद्र गण्डि बरेण प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिनिः --- कास्मावाजार --- ।

[82]

सं० १७७१ मिति आषाढ़ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका कारापिता सेठिया गुलाबचन्द ॥

[83]

सं० १७२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वमगतः । श्री राश्वचंद्र सुरि गढे ।

॥ सम्बत १७६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ए शुजदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सूरिजी सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सङ्गेन । कास्मावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्ज्वलैः । पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जिः १ ॥

॥ श्री सम्जवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

पाषाणको विशाल मूल बिंब पर ।

॥ श्री बीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ शालिवाहन १७९७ माघ शुक्ल एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने बङ्गदेशे मधुदावादांतर्गताजिमगञ्ज वासी बृहत थोस बंशे लुंपक गच्छे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तज्जार्या महताव कुमर्य तत् बृहत पुत्र राय खद्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाता राय धनपतिसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतिसिंह नरपतिसिंह सपरिवारेन श्री सम्जवजिन बिंबं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महाबीर जी परिकर सहित कारापितं जिक्कुरियां सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सूरिजिः ॥

जोर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ जगवते नमः ॥ सम्बत अठारह सै ग्यारह (१७११) कृष्ण द्वादसी श्रृगु वैशाख । ॐ सवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मज्जौन धर्मकी साख ॥ सज्जाचन्द के अमरचन्द सुत निन सुत मुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह जागीरथी तीर विश्राम ॥



कलकत्ता — बड़ावजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्बत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १७७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवहि मुनि शशी
१७३९ । संख्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलषष्टि तिथौ बुधवासरे श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राणां
प्रासादोद्यम् । श्री कलकत्ता नगर बास्तव्यः श्री समस्त सङ्गेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर
गह्वेश जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥

[88]

धातूयों के मूर्त्तिपर ।

सम्बत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रज्ञ सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो — — — ।

[89]

सं० ११९९ वैशाख सु० ३ बुधे सौ० जेदड़ सुत सा० बहुदेव हीर जट्टाज्यां मातृ राज
श्री श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिजिः ।

[90]

सम्बत १३४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० महं० सांदा सुत महं० राजा
श्रेयसे ससुत महं० मालहिवि श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[91]

सं० १३७९ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद्र जार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्ति-
नाथ का० श्री हेमप्रज्ञ सूरिजिः प्र० महाहृदाय ।

(२३)

[92]

सं० १४३४ वर्षे ज्यैष्ठ वदि २ गुरौ बरहुड़िया गोत्रे सा० जोजदेव पुत्र मु० सरसति
श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंव कारितं प्र० देवाचार्य सं० — — सूरिजिः ।

[93]

सम्बत १४४९ आषाढ सुदि २ गुरौ श्री अञ्जल गह्वे उकेश वंशे गोखरु गोत्रे सा० नाझूण
चार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंव कारितं प्रति-
ष्ठितश्च श्री सूरिजिः ।

[94]

सं० १४५९ वर्षे ज्यैष्ठ वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रवना चार्या लछलादे पुत्र
सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ विंव का० प्र० श्री — — ।

[95]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उवएस ज्ञातीय व्य० देवराज चार्या जस्मादे पुत्र
धूषा चा० धळूणादे सहितेन पित्रो चातृ रामंसी श्रेयसे श्री पद्मप्रज विंव कारितं प्र० ब्रह्मा-
णीय गह्वे श्री उदयानन्द सूरिजिः ।

[96]

स्वस्ति ॥ सम्बत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीमाख महरोख गोत्रे सा० ईदा सुत
सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विंव प्र० श्री विजयप्रज सूरिजिः ॥

[97]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ अोस वंशे काकरिया गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० साक्षिग
चार्या पद्माईना शान्तिनाथ विंव का० प्रतिष्ठितं कृष्णाय श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

(२४)

[७८]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ उत्तम बंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाद्देव जा० करण पुत्र
सामस जार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंव का० प्र० — — विं
गष्टे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

[७९]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश बंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा०
चंजी पुत्र श्रीरत्नेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंव का० प्र० श्री कृष्णर्षि
गष्टे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

[१००]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्ले श्री श्रीमाल झालीय ठकुर धरणी जार्या बाई गाङ्गी
सुत ठकुर मांरुण जार्या बाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विंव कारितं प्रति-
ष्ठितं आगम गष्टे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कल्याण ॥

[१०१]

सम्बत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ उत्तम बंशे झालीय बहुरा गोत्रे सा० खीमा पुत्र
बरबा जा० वासुदे स० जातृ रट्टा श्री विमलनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाख
गष्टे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

[१०२]

सं० १५१४ वर्षे आषाढ वदि १३ दिने बपुड़ाणा गोत्रे तुंगिला गोत्रे सुत देवराजेन पु०
पद्मराज जुने विंव का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[१०३]

सं० १५१८ वर्षे आषाढ सुदि १० मंत्रिदलीय श्री काणा गोत्रे ठ० लाधू जा० धर्मिणि

(२५)

पु० अचक्ष दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल बीरसेन महिराजादि
युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्बत १५१९ वर्षे कार्तिक वदि ४ गुरु श्रीमाली ज्ञातीय मंत्रि देवा जार्या सहिजू सुत
वरजांगकेन जातु जेसा नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयार्थ श्री अजितनाथादि चतु-
र्विंशति पट्टे कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गच्छे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे श्री बीर सूरिजिः ॥
जेया वास्तव्यः श्री शुचं जवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५२४ बै० शु० १० उकेश वेदर वासि सं० महिराज जार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन
जगिनी पद्माई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ विंव का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि
सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५२४ बै० शु० प्रा० श्रे० पाता जा० बाबू पुत्र जोगाकेन जा० जावड़ि पु० रामदास
जातु अर्जुन जा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ विंव का० प्र० श्री सोमसुन्दर
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[107]

सं० १५३२ वर्षे बै० सु० ६ सोमे श्री उकेश वंशे आजू सन्ताने ज० जोजा पुत्र नखाता
छूता ज० जोढहा नारदाण्यां श्री अजिनन्दन जिन विंव कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री
जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[108]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सु० १० शुके श्री उग्र वंशे जोर गोत्रे सा० सत्यज जा०

काङ्ही पुत्र सा० सीद्दा सुश्रावकेण जा० सूहृदि पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाज्ज रव शिवदास
पौत्र सिद्धपाल प्रमुख कुटुम्ब युनेन श्री अश्वत्थ गहेश श्री जयकेशरि सूरिणामुपदेशन
मातृ पुण्यार्थ श्री कुन्थुनाथ विंव कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्गेन ॥

[109]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ जौमे उपकेश झातीय ठ० धरणी जा० ऊन्नी सु० वेठाखा
जा० कुंती कनसू जतृ आत्म श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंव का० प्रनि० श्री नाणवाध गहेश श्री
धनेश्वर सूरिजिः । कोरड़ा वास्तव्यः ।

[110]

सम्बत १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुके श्रीमाल झातीय माथलपूरा गौत्रे म० हंसराज
जा० हासलदे पु० सा० षेठा जा० षीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंव कारापितं श्री धम,
घोष गहेश ज० कमलप्रज सूरि तत्पदे ज० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[111]

सम्बत १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल झातीय श्रेष्ठ लामण जार्या अजी
सुत वासण रूढ़ा जेसिंग हूड़ा जा० रमादे स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ विंव कारितं
श्री आगम गहेश्रीमुनिरत्न सूरि पदे श्री आनन्दरत्न सूरिजिः प्रतिष्ठितं बूबूयाणा वास्तव्यः ॥

[112]

सं० १५७७ वर्षे फागुण सु० ९ बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तझाया श्री मरु
देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ विंव का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मक्षयार्थ श्रेयोस्तु शुभं जवतु ॥

[113]

सं० १६५० वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य उंसवाख
झातीय । सा० घोघा जार्या कड्हा सुत सा० राजा जार्या अदकु सुत सा० जयतमाल । जार्या

जीवादे सुत सा० ठाकुर नाम्ना जातु सा० पुण्यपाख सा० नाकर स्वनाथ गमतादे सुत लाखजी
बीरजी प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री सम्जवनाथ बिंव कारितं प्र० श्री तपा गढे महानृप
प्रतिबोधक ज० श्री हीरविजय सूरि तट्ट प्रजावक सुविहित ज० श्री विजयसेन सूरिजिः
आचार्य श्री ५ श्री विजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणविजय गणि प्रमुख परिवृतैः ॥

[114]

सम्बत १६९७ वर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य बृद्ध शाखायां
उपकेश झातीय सा० लक्ष्मीधर जार्या बाई लखमादे पुत्री वा० कहे बाई नाम्ना स्वमातृ
सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख युनया श्री नमिनाथ बिंव कारितं प्रतिष्ठा-
पितं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपा गढाधिराज जट्टारक श्री विजयसेन सूरिश्चर पट्टालङ्कार
श्री विजयदेव सूरिश्चर पट्टप्रजाकराचार्य श्री श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

॥ श्री मह वीरस्वामी का मन्दिर — माणिकतला ॥

[115]

सं० १३४० वर्षे — — — — उयसवाल झातीय सा० लाखणा श्रेयर्थ श्री आदिनाथ
बिंव माता चापल श्रेयर्थ श्री शान्तिनाथ बिंव कुमर सिंहेन आत्म पुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ
जार्या लखमादेवी श्रेयर्थ श्री महावीर बिंव सुत खेतसिंह पुण्यार्थ श्री नेमिनाथ बिंव
कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गढे श्री नन्न सूरि सन्ताने श्री कक सूरि पट्टे
श्री सर्वदेव सूरिजिः ।

[116]

सं० १४०४ वर्षे श्री श्रीमाल बंशे सा० लामा सा० हापा सुश्रावकेण पुत्र आढा सहितेन
स्वपुण्यार्थ श्री बर्द्धमान बिंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री
जिनजड सूरिजिः ॥

सं० १५११ वर्षे पोष बदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गह्वे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांझ्या जा० राणा सु० बस्ता प्रा० अलवेसरि नाम्न्या स्वर्तु श्रे० श्री कुन्थुनाथ वि० प्र० श्री विमल सूरिजिः । बगुडा बास्तव्यः ॥

सं० १५३१ वर्षे वैशाख बदि ५ रवौ श्री जावमार गह्वे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे व्य० मीमण जा० हलू पु० सादा जा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — जातृ नेमा पुण्यार्थ समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुबिधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य सन्ताने ज० श्री जावदेव सूरिजिः ॥ सीरोही बास्तव्यः शुभम्भवतु ॥

सम्बत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुके श्री श्रीवंशे सा० अदा जा० धर्मिणि पुत्र सा० बस्ता सा० तेजा सा० बीमा सा० तेजा जार्या खीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ विं० श्री अंचल गह्वेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पत्तन नगरे श्री सङ्गेन ॥ श्रीः ॥

सं० १६६७ ब० उ० झा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० जूपतिना श्री विमलनाथ विं० महोपाध्याय श्री विवेकदर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तपा गह्वेंद्र ज० श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

सं० १५११ वर्षे आषाढ़ बदि ९ मृगा उकेश ज्ञातीय सा० जैसिंग जा० चंजी पुत्रेण

सा० वीदाकेन जा० नषी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खर-
तर गछे श्री जिनजड सूरिजिः ॥ श्री जूँऊणू वास्तव्य ।

[122]

सं० १५१६ कार्तिक वदि २ रबौ श्री जएस बंशे लोढ़ा गोत्रे सा० ठाजू जा० बीमिणि
पु० सा० गजसी जा० जूराइ पु० सा० धना जा० धर्मादे पु० सा० समधरेण जा० सूढवदे
सहितेन वृद्ध जातृ नरपति संसारचंड पुण्यार्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र
पद्धीय गछे श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

[123]

सम्बत १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ श्री जएस बंशे । स० घड़ीया जार्या कपूरी
पुत्र स० गोवल जा० लखमादे पुत्र खेताकेन जातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगह्वा-
धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरिणामुपदेशेन श्री चंडप्रज स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
सङ्गेन ॥ कछदेशे धमड़का ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६३४ वर्षे फा० श्रु० — शः पत्तने सं० माड़णना समस्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस
नाथ विंवं का० प्र० श्री बृहत्तपा गह्वाधिराज श्री हीरबिजय सूरिजिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[125]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि १ रबौ श्री श्रीमाल श्रेष्ठि श्रवण जा० काउं सु० पितृ बीरा
मातृ नाणदे श्रेयोर्थ सुत काढाकेन श्री नेमिनाथ विंवं कारितं श्री — पू — ण — रत्नसूरि पढे
श्री साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितो विधिना श्री सङ्गेना आमेण वास्तव्यः ।

(३०)

[126]

सम्बत १५५७ वर्षे माघ बदि १२ बुधे प्रा० सा० गेला जा० चाडू सुत सा० राजा वना
तपा हरपाल जा० जीवेणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारापितं श्री कुन्थुनाथ
बिंवं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणेत नगरि गोत्र लीवां ।

[127]

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल झतीय दो० शिवा जा० सिरियादे शृङ्गारदे
सुत दो० धनसिंहेन जा० जांविहा सा० कुंअरि जा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे
श्री शान्ति बिंवं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[128]

सं० १५६१ वर्षे बै० सु० १० रवौ श्री तातहरु गोत्रे सं० जेठू जार्या जिष्टूहो पुत्र० ३
सा० आढू सा० बुडू सा० ठाहड़ तन्मध्यात् सा० ठाहरु जार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे
स्वपुण्यार्थच श्री सुमतिनाथ बिंवं का० प्र० श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त
सूरिजिः ॥

माधोलाखजी डुगड़ का घरदेरासर — बड़तला ।

[129]

जे सं० १५१५ वर्षे आषाढ़ बदि २ श्री उकेश वंशे बरड़ा गोत्रे सा० हरिपाल सुत जा०
आसा साधू तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण जार्या सं० रोहिणि पुत्र सं० साजण प्रमुख सप-
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गछे श्री
जिनराज सूरि पदे श्री जिनजड सूरिजिः ।

माधोलाख बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

[130]

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री छीप बंदिर बास्तव्य श्री उकेश

(३१)

ज्ञातीय बृद्ध शाखायां सा० श्री करण जार्या श्री सिरा आदि सुत सा० सोणसी जार्या श्री संपुराई पुत्र रत्न सा० शवराज नाम्ना श्री आदिनाथ बिंव कारितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठितं तपा गळे ज० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[131]

सं १४७५ वर्षे जै० व० ११ रबौ श्रे० धणरी जार्या मच्च सुत सा० ठ० बराकेन स्वजगिनी श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ बिंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागहमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[132]

सं १५७७ व० वैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाली श्रे० बहजा ज्ञा० बहजलदे पु० सा० करणसी ज्ञा० जीवादे काना सहितेन श्री शांतिनाथ बिंव का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि चन्द्र सूरिजिः बरजा बा० ॥

[133]

सं १६०४ वर्षे वैशाख वदि ७ सोमे श्री जंसवाल ज्ञातीय सा० देवदास जार्या बा० देव लदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाल ज्ञा० बा० रतनादे सपत्ने सा० जावड़ ज्ञा० बा० जासलदे तस पुत्री बा० जीवण श्री धरमनाथ श्रा० - जिदास परिवार वृत्तैः ।

४० न० इण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतला ।

श्री रत्नप्रभ सूरि प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध उपकेश (ओसियां) नगर की श्री महावीर स्वामीके मन्दिरके पार्श्वमें धर्मशालाकी नीव खंदनेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्तिके परकरके पश्चातका लेख ।

[134]

उं संबत १०११ चैत्र सुदि ६ श्री कक्काचार्य्य शिष्य देवदत्त गुरुणा उपकेशीय चेत्य गृहे अस्वयुज् चैत्र षष्ठ्यां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिवाहिका जासुल प्रतिमा इति ।

तीर्थ श्री चंपापुरी ।

यह प्राचीन जैनतीर्थ ई. आई रेलवेके लुप लैनके जगलपुरके पास नाथनगर घेसन से मिला हुआ है । यहां चंपापुरी-चंपानगर-चंपा-हालमे जिस्को चम्पनालाजी कहते हैं १२ मां तीर्थङ्कर श्री वासुपुज्य स्वामीके पञ्चकल्याणक जये हैं । यहां श्रवताम्बरी दिगम्बरी दोनो सम्प्रदायके जुदे २ मन्दिर वर्तमान हैं । राजगृहके श्रेणिक राजाका बेटा कोणिक जिस्को अजातशत्रु वा अशोकचंद्र जी कहते हैं राजगृहसे अपनी राजधानी उठाकर यहां चंपामें लायाथा । सुजडा सतीजी इसी नगरकी रहनेवाली थी । तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने यहां ३ चौमासे कियेथे और उनके आनन्दादि मुख्य श्रावकोमें कामदेव श्रावक यहांका रहनेवाला था और जैनागमके प्रसिद्ध दश बैकालिक सूत्रजी श्री शय्यंजय सूरी महाराजने इसी चंपापुरीमें रचा था । वसुपूज्य राजा जया रानीके पुत्र श्री वासुपूज्यस्वामीका चवन जन्म फाट्गुण वदि १४, दिक्षा-फाट्गुण सुदि १५, केवल ज्ञान-माघ सुदि २ और मोहा-आषाढ़ सुदि १४ यह पांच कल्याणक इसी नगरमें जयेथे इस कारण यह पवित्र क्षेत्र है ।

पापाणोंके विंव और चरणोंपर ।

[135]

सं १६६० । श्री धर्मनाथ विंव का० सा० हीरानंदन ० । प्र० श्री जिनचंद्र सुरिजिः ॥

[136]

सं १०२० वर्षे बै० सु० ११ — — — श्री तपा गछे श्री बीरविजय सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥
श्री सङ्केत ।

* यह मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध जगत्सेठके पूर्वज साह हीरानन्दजी है, ऐसा सम्भव है ।

(३३)

[137]

सम्बत १८५६ वर्षे बैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे । तृतीयायां । चंपापुरी तीर्थाधिगज । श्री देवाधिदेव श्री वासुपूज्य जिन बिंबं समस्त श्री सङ्गेन कारितं । कोटिक गण चन्द्र कुलालङ्कार । श्री मत् श्री सर्व सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[138]

सम्बत १८५६ बैशाख मास शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री अजितनाथ स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं । श्री जिनचन्द्र सूरिजिः बृहत् खरतर गङ्गे कारितं मकसूदावाद वास्तव्य — — — ।

[139]

सं १८५६ बैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ ॥ बुधवासरे । श्री चन्द्रप्रज्ञ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं ज० । श्री जिनचन्द्र सूरिजिः । बृहत् खरतर गङ्गे कारितं च । बीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोपचंद तत्पुत्र जेठमलेन श्रेयार्थ ।

[140]

सं १८५६ बैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे । तृतीया तिथौ । श्री महावीर स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं । ज० । श्री जिनचन्द्र सूरिजिः । बृहत् खरतर गङ्गे कारितं समस्त श्री सङ्गेन श्रेयार्थ ।

[141]

सम्बत १८५६ बैशाख मासे शुक्ल प० ३ दिने । श्री शान्तिनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं । खरतर गङ्गाधिराज ज० । श्री जिनलाल सूरि पट्टालङ्कार । ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः कारितं । — — — समस्त श्री सङ्गेन श्रेयार्थ ॥

[142]

सं १८५६ बैशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तिथौ श्री वासुपूज्य स्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेष्टा गोत्रे
— — श्राविकया कारि ॥

(१ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । विमलनाथ — — — अजयराजेन श्रेयार्थ ।)

[143]

॥ सं । १७५६ फाट्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व
सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संबत । १७५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाडुके ।
प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयार्थ ।

[145]

संबत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गढे पुत्कर गणे लोहान्
चार्याम्नाय जट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदास्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर
वास्तव्य सा० क श्री हीराबाल पुत्र कृष्णदास पुत्र सन्नूलाल — — — अग्रवाल प्रजा सा
— — श्री पद्मप्रज — — — प्रतिष्ठा कारिता ।

[146]

सं १७०० आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ बिंवं प्रतिष्ठितं बृहत् — — — सूरिजिः
कारितं च डूगड़ सरूपचंद त्रातु करमचंद हुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयार्थ ।

[147]

संबत १७०७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ बिंवं कारितं मकसुदावाद
वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार ज । श्री जिन
सौजाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गढे ।



(१५)

[148]

सं १९१० मि । फा० कृष्ण २ बुध — — झूगड़ प्रताप — — —

[149]

॥ संवत् १९१५ मिति जेष्ठ शुक्ल द्वितीया तिथौ रबीवारे झूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी ब्रह्मर्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंघ बहादुर तत् लघुच्चाता राय धनपतसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थ । जं । यु० ज० श्री जिनहंस सूरिजी बिजैराज ॥ उ० श्री आणन्दवह्मन् गणि तत् शिष्य उ० श्री सदाशिव गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द सूरि कुंपक गछे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवपदजी श्री चंरा पुरोजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९१५ मिः फादगुन कृष्ण ५ तिथौ । झूगड़ श्री प्रतापसिंघजी तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंघ बहादुर तत्त्रात्र श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं जं० । यु० । प्र० । ज० । श्री जिनहंस सूरिजी बिजैराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभं भूयात् ।

[151]

धातुर्योके मूर्तिपर ।

सं १९०९ वर्षे ज्येष्ठ सु० — रवौ रंगू जा० रमाई — — हेमा हापा खापा पु० साहस जा० लठमीरूपिणि पुण्यार्थ श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ विंव का० प्र० श्री संकेर गछे श्री शांति सूरिजिः ॥ श्रीः

[152]

संवत् १९१७ वर्षे माघ व० १ सोमे प्रा० सं० धारा जा० सबधू सुतेन सा० वेवा बंधुना

(३६)

सं वनाकेन जा० सीत्र प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विं वं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ माध्यमन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं — — — ।

[154]

सं १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरु उकेश वंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा जा० राजें
पु० सा० जोला जा० लडिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कालू सा०
काजा जा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टे का०
प्र० श्री खरतर गढे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जिन
हर्ष सूरिजिः ॥

[155]

संवत् १५०१ वर्षे माघ वदि १० शुके श्री प्राग्वाट झा० बृद्धशाखायां व्य० सहिसा
सु० व्य० समधर जा० बड़ू सुत व्य० हेमा जार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा बर्द्धमान
एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रजावक श्री आर्षदसागर सूरिजिः ॥ श्री शान्तिनाथ विं वं श्री
रस्तु श्री पतन नगरे ॥

[156]

संवत् १५०५ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल झातीय आश्चणी गोत्रे चोर
वेड़ीया शाखायं सं० जइता जार्या जइतलदे पु० सं० चूइड़ा जार्या जूरी सुत जधरण चंद्र
पाल आत्म श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विं वं कारितं श्री उपकेश गढे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति
ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिजिः । — — —

[157]

संवत् १६०३ वर्षे माघशिर सुद ३ शुके प्रा० झा — — बास्तव्य — — जा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champâpur Temple, dated S 1551 (1494 A D)



(३७)

रूग जा० सूरमादे सा० श्री रङ्ग सदारङ्ग अमीपलादि कुटुम्ब युतेन साह स० चवीरेण श्री
सुमतिनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गढे श्री विशाखसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५ — —
सूरिनिः ।

[158]

झींकार यंत्रपर ।

सम्बत १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गढे बख-
त्कार गणे चंपापुरी नगर शुजस्थाने — — —

[159]

सम्बत १६८३ वर्षे मूलसंघे, ज० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयकीर्ति प्रतिष्ठितं
[—] ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर
पाषाणके मूर्तिपर ।

[160]

सं० १८७७ माघ सुदि १३ बुधे औस वंशे कठारा गोत्रीय लाळा जमनादास तज्ञार्या
आसकुवर तथा श्री बासुपूज्य जिन बिंवं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत्
खरतर गढीय श्री जिन — — — ।

पञ्चतोर्थियों पर ।

[161]

सं० १५१९ [—] [—] मंत्रिदलीय श्री काणागोत्र ठ० लाधू जा० धर्मिणि पु० स०

(३८)

अचछ दासेन पु० अग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ विंवं
का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पढे श्री जिनहर्ष सूरिनिः ।

[162]

सम्बत १५७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ मिधूज गोत्रे । स० इम ज०
— — सुश्रावकेण ज्ञा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिल प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ
विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे ॥ श्री जिनरत्न सूरिनिः ॥

झींकारके यत्रपर ।

[163]

सम्बत १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं
श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालपुर श्री जिनचंद्र सूरिनिः जयनगर ब. तटव्य श्री मालान्वधे
भरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रोसनराय बृद्धिचन्द खुसालचन्द सरूपचन्द
मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयार्थ ॥

स्थान — जागलपुर ।

श्री बासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

पाषाणपर ।

[164]

॥ शुभ सं० बीर गताब्दा १४०५ विक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयो-
दश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री बासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक जूम्युपरि ओश बंशे झूगड़ गोत्रे
बृ. शा. बा. श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ बधूः महताबकुमरी स्वजव
सफल करणार्थ इच्छा कृतासिच कालवशात् सं० १९३१ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्म प्राप्तस्य
मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर

तेन द्रव्येण धर्मशाला जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिभिः श्रीसंघ च संजालसी श्री
संघ मालिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री नीकटरीया इमप्रेश राज्ये षष्ठाब्द १८७९ ।

पाषाणैः चरणों पर ।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्म (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्वाण कल्याणक पाडुका ॥
साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु
पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंपा नगरे श्योशवाल वृ । शा । डूगड़ गोत्रे वा । श्री
बुधार्सिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्तार्या महतावकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री लदमी
पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभिः श्री संघस्य शुभंभवतु ॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्बद्धाणर्षि नागेन्दौ राध शुक्लादशी भृगौ मद्धि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत
खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा जाग्यधीर गणि किल मादहू गोत्रस्य प्रण्येन्दोर्वित्तमुद्दिश्य
काव्यकृत् २ युग्मम् ॥ सं० १८७५ मिति वैशाख सुदि १० शुके मिथिला नगर्या ॥ श्री मद्धि
जिन चरणन्यासः ॥

[167]

सं० १८३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य (अजितनाथ, सम्भवनाथ) जिन

* यह चरण दरभङ्गा लैन में सीतामढी छेसनके पास मिथिला नगरी से उठाकर लाया भया है । वहां इस
समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थङ्कर श्री मल्लिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ मां श्री नमि
नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे । श्री मल्लिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीकी कुमरी
थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरके विजय राजा और विप्रा
रानीके पुत्र श्री नमिमाय स्वामीका जन्म श्रावण वदी ८, दीक्षा आषाढ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सु० ११
के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें “ मिथिला ” के स्थानमें “ मयुरा ” नगरी भी देखनेमें आया है । सत्या-
सत्य ज्ञानीगम्य है । चरम तीर्थङ्कर महावीर भगवानका भी ६ चौमासा यहां भयाथा ।

(४०)

बिंवं ओस वंशे डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं ।
मध्वार पूर्णिमा श्री मध्विजय गच्छे जट्टारक श्री जिन शान्तिसागर सूरिजिः ॥

[168]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मध्विजिन बिंविमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश
वंशीय लुंपक गणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य चार्या महताव कुंवरिकस्य लघु
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागच्छीयेन ॥
श्री मिथिलापुरवरे ।

[169]

सं० १९३३ मि । मा । सु । ११ श्री नमिजिन बिंविमिदं मकसुदावाद वास्तव्य ओश
वंशीय लुंपकगणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य चार्या महताव कुंवरिकस्य लघु
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागच्छीयेन
सीतामढ़ी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ए६ वर्षे आषाढ शु० ११ दिनेः रा० जण्फारी गोत्रे जं० सिवा
जा० रत्नादे पु० जं० हेमराज वेला जा० बाखहदे पु० पता — — बिंवं कारापितं पुण्यार्थ श्री
संदेर गच्छे जं० श्री साब सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

छत्तीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकन्दी जी यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लठवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौविशमां तीर्थकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

मूर्तियों पर ।

[171]

संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए महतियाण वंशे मुंरुतोड़ गोत्रे । मं० महणसी पुत्र स० देपाल जार्या मू० महिणि स्वकुटुंबेन ज्ञाता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र — श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर बा० शुजशील गणिजि: — — — ।

[172]

संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतियाण वंशे मुंरुतोड़ गोत्रे । सं० — — राजपुत्र मं० महादेपाल ज० माहिणि पुत्र मं० सिवाई ।

चरण पर ।

[173]

ओं नमः । संवत् १८२२ वर्षे बैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिन-वर चरण कमले शुजे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन जीर्णोद्धारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दत तीर्थोयं काकंदी नामको वरः ।

पाषाण पर ।

[174]

मकरूदावाद अजीमगञ्ज बास्तव्य डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तत्कार्या महताव कुंवर तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तत्पुत्र सहोदर राय अनपनसिंह बहादुरेण न्याय द्रव्येण व्यय बोर प्रभू का जिनालय करापितः लठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं । सं० १९३० मिती वैशाख वदी २ चन्द्रे — — ।

श्री गुनायाजी ।

नवादा (गया लाईन) स्टेशनसे १॥ माईल पर यह स्थान है । इसका नाम शास्त्रमें “गुणशील चैत्य” से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका १४ चौमासा अयाथा । स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तालाव वा बिचमें मन्दिर है ।

धातुके मूर्तिपर ।

[175]

संवत् १५१० वर्षे फागुण वदि १२ उसबालान्वये मूधावा गोत्रे स० — मीला ज्ञा० बीब्हु पुत्र सा० तोब्हा ज्ञा० पर्ई नाम्न्या स्वपुण्यार्थ पद्मप्रज्ञ-विंश कारितं प्र० श्री पद्मानंद सूरिजिः ।

पाषाणके चरणोंपर ।

[176]

संवत् १६०० वर्षे वैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल बंसे चोपरा गोत्रे ठा० बिमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालो तत्पु० जार्या ठकुरेटी यु० ज० श्री जिनकुसल सूरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज सूरि विद्यमाने उपाध्याय अज्ञय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लगे खरतर गछे ।



संवत् १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ जोमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री डूगड़ प्रतापसिंह जीस्कानां जार्या महताव कुंवर तत्कुक्षितोत्पन्न कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर नाझा खपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थ श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्वाण धानतया श्री आदि जिन चरण पाडुका कारापिता श्री जिनजकि सूरि शाखायां उ० सदा दाज गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

सं० १९३० माघ शु० ५ सकल संवेन श्री बीर पाडुका कारापित स्थापितं श्री गुण-
शील चैत्ये आत्महिताय ॥

पाषाण पर ।

सं० १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ जोमे गुणशीले चैत्ये डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्जार्या महताव कुंवर तत्पुत्र चिरू राय बहादुर तत्प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साफल्य कारापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आशंद वल्लभ गणि तत्तशिष्य उ० श्री सागरचंद गणि उप-
देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूत ।

पाषाण पर ।

— । श्री जिनेंद्र जयती । स्वस्ती श्री मद बीरजिनेंद्र सं० २४२९ वि० सं० १९५९ वर्षे वै० वद० ८ बुधवारे श्री तपा गठामनाय धारक सुश्रावक दसा श्रीमाछ झातीये सा० रुपचन्द रंगीछदास देवचन्द पाटनवाला हाछ मुकाम गेवला मुंवाई ये वनना स्मर्तार्थ तत्त बन्धु चतुर चन्द सुत वेछ चन्द वाल चन्द आग चन्द जण = ३ ये ॥ श्री गुणशील चैत्य आ

धर्मशास्त्रा बंधावीठे तथा बेरासरमा पवासणो गोखलाओ दरवाजो जमतीनी बेरी = ४ सहीत सरवे आरसनु काम तथा तलावनी जीत तथा रीपेर बीगेरे जीनोद्धार करावोठे श्री शुभं जवतु सदा । सखाट जाइचंद जगजीवन मीझी पाळीताणा वाखा — — ।

तीर्थ श्री पावापुरी ।

शासन नायक श्री महावीर स्वामीका यह निर्वाण कल्याणक का स्थान जैनीयोंका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है । ३४ मां तीर्थंकर के समवसरण की रचना और उनका मोक्ष यहां जये हैं । लगनसरण के स्थानमें १ स्तंभ वर्तमान है कोई लेख नहीं है । वहांसे प्राचीन चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तलावके पाड़ पर धिराजमान हुये हैं । अक्षितंस्कार की जगह तलाव और मंदिर है । प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ सेतापुरी और १ दिगम्बरी उस तलाव के पाड़में बनाई और कई धर्मसाक्ष्यें हैं ।

लगनसरणजी के प्राचीन चरणों पर ।

[181]

हं सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री — — — — कनकविजय गणिजि: — — — ।
(अक्षर घस जानेके कारण पढ़ा नहीं जात)

जलमंदिर — पावापुरीजी
श्री गौतमस्वामीजीके चरणोंपर ।

[182]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्र ५ इवें गौतम गणधर पांडुका कारापितं उसवाख चोरमिया

गोत्रे नानकचंद जीवनदास प्र० वृ० । ज० । श्री जिन नंदीबर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पयजय
जब उपदेशात् ।

श्री सुधर्मा स्वामीजीके चरणोंपर ।

[183]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं पाडुका श्री सुधर्मा स्वामी कारापितं ओसवाळ झातौ
थाड़ेगा गोत्रे — न सुख प्रतिष्ठितं वृ० ज० श्री जिन नंदीबर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पयजय
उपदेशात् ।

बामे तर्फकी गुमटीमें १६ चरणोंपर ।

[184]

संवत् १९३१ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ चंडबारे श्री वृद्ध गुजराती हुंका गछे
श्री पूज्याचार्य श्रीश्री १०० श्रीश्री अक्षयराज सूरि तत्पद्मावतार श्री अजयराज सूरि
चरण प्रतिष्ठितं सुभावक वातू श्री प्रताप सिंघजी राय धनपत सिंघजी डूगड़ गोत्रीयं
बोड़श महासती चरण कारापितं ॥ श्री जुजंजूपात् ॥ पावापुरीमें — स्थापितं ॥

दाहिने तर्फकी गुमटीमें चरणपर ।

[185]

॥ संवत् १९५३ वर्षे आषाढ शुद्ध पञ्चमि दिने गणि दीप विजयणा पाडुका ॥

गांव मंदिर — पावापुरी ।

पंचतीर्थीपर ।

[186]

सं० १५१९ आषाढ वदि १० मंत्रिदलिय श्री उसियड़ गोत्रे स० मेघराज सु० जिणदास

प्रा० करगिणि पुत्रेण स० शुभकरण ज्ञा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन दातृ जनन्याः श्रेयोर्थं
श्री संजवनाथ विं० का० श्री खरतर श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रति-
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे बैशाख सु० १० दिने श्रीमाधव ज्ञातीय गोत्रे मौठिप्पा सा० रणमध्व पुत्र
सा० दीपचंद जार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गच्छे जट्टारिक श्री जिनहंस सूरि गुरुभ्यो
नमः ॥ प्रतिमा श्री शान्तिनाथ विं० कारितं ॥

पायाणके चरण पर ।

[188]

सं० १६४१ वर्षे बैशाख सुदि ३ गुरौ — — — रुचंद पुत्र जसराज अव्येण जार्या —
श्री वर्द्धमान जिनल्लेखं पाडुका कारा — — ।

[189]

॥ संवत् १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुण्डरीक चरण कमल पाडुके
[— —]

मध्यके चरणपर ।

[190]

॥ पं० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलाशुदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोवब्धिः ॥ संवत् १६९७
बैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री बिहार नगर वास्तव्य श्री कृष्ण जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री
अरत चक्रवर्ति राजान मुख्य मंत्रिदल संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपड़ा गोत्रीय
संघनायक मं० संग्राम । राहदिया गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री बृहत् खरतर गच्छीय
नरमणि मण्डित जालस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित श्री
बीर जिन निर्वाण जूमि श्री पावापुरी समीपवर्त्ति वरविमानानुकार श्री बीर जिन प्रासाद

Footprints (in the centre) Pawapuri Temple, dated S 1698 (1641 A D)



[The image contains extremely faint and illegible handwritten Devanagari script.]

चूनौ धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पाण्डुके महतिषाण श्री संघेन कारिते ।
प्रतिष्ठिते च श्री बृहत्खरतर गङ्गाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री
जिनसिंह सूरि पट्टोदयगिर दिनहर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिजिः ॥ श्रीर्जवतु । श्री
कमल छात्रोपाध्यायाः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य संहिताः प्रणमंति ।

११ गणधरोंके चरणों पर ।

[191]

१ । संवति १६९८ प्रमिते । वैशाख सुदि ५ सोमवारे । श्री बिहार नगर बास्तव्य श्री
जरत चक्रवर्त्ति महाराजात सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दक्षान्वीय नरमणि मंण्डित श्री जिन
चंद्र सूरि प्रबोधित महतिषाण ज्ञाति मण्णन चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सपरिवारेण ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निभूति ॥ २ श्री वायुभूति ॥ ३ श्री व्यक्तस्वामि ॥ ४
श्री सुधर्म स्वामि ॥ ५ श्री मंणिकुपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक
स्वामि ॥ ८ श्री अचलव्राता स्वामि ॥ ९ श्री भेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रज्ञास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति * ।

[192]

। ई० ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहि-
जां हसकल नूर मण्णलाधीश्वर बिजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री बीर
वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री बीर जिन चैत्य निवेशः ॥
श्री रूपन जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री जरत महाराज सकल मंत्रि मण्णन श्रेष्ठ मंत्रि
श्री दल संतानीय महतिषाण ज्ञाति शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसी चार्या
निहालो पुत्र सं० संग्राम लघुजात गोवर्द्धन तेजपाल चोजराज । रोहदिय गोत्रीय सं० पर-

* यह बेदीके अन्दर दवा भया है इस कारण सब पढ़ा नहीं गया ।

माणंद सपरिवार महधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोद्यम बिधायक ठ० छुल्मीचंद कांझड़ा गोत्रीय
म० मदन सामीदास मनोदर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास
गिरिधर संतोदास प्रसादी । वार्तिदिपा गो० गूजरमल्ल षूदड़मल्ल मोहनदास माणिकचंद
बूदमल्ल जेठमल्ल । ठ० जगन नूरीचंद । दान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल मटूकचंद संतोषचंद
सयला गोत्रीय ठ० सिंह कीर्तिपाल बाहूगय केसवराय सूरतिसिंघ । कांझड़ा गो० दयाल
दास नोबालदान कृपालदास मीर सुगरीदान किन्नू । काणो गोत्रीय ठ० राजपाल रामचंद
— — महावीर — — कीर्तिसिंघ ठ० ठवीचंद । जीजीयाण गा० मं० नथमल नंदलाल ।
नान्हड़ा गोत्रीय — — १३ — — दास सुंदरदान सागरमति कमलदास । रो० सुंदर सूरति
मूरति सवलकूनी प्रताप — — ठ० मदमल्ल ज० हरदासपुर — — — ।

पापाणके मूर्तिपर ।

[103]

॥ सिरि देवहि गणि खमा समणा होत्ता तेसि सिरि बीर निवाणाउ नवसय थसीई
वरि सेहिं जिणागम रक्कगा तुछजेह कारणाउ विंवमिणं पद्छावियं सिरि जिण महिंद
सुरीहिं ॥ सं० १९१० वर्षे मा । सु० २ ।

बेदी पर ।

[104]

सं० १९३५ मिति जेठ शुक्ल ५ बुधवाररे इदं बेदिका कारापितं लसमाल हातौ रांका
सेठिया गोत्रे सेठजी श्री लठमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमलजी तत्जात धनसुख दासजी ।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर ।

[105]

माह सुदि १३ दिने — — — सूरिणा पाडुके — — ।

(४९)

[196]

संवत् १६०६ वर्षे - क - - - । प्रवर्त्त - - - : । श्री खरतर गह्वे श्री उपाध्याय रत्न
तिलक सूरिनां त० शिष्येन श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद शाखायां कार
पतं उपदेन - - गुजु - - पाठकस्य - - - श्री रत्नतिलक गणि प्रतिष्ठितं वा० लब्धि
सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ १ ॥

[197]

मूल नायक - - - - राज सत्तासन धारकं । ० । ० गुर्जरे मह - न ति - - गोत्रे
- - ठ० बेनीदास । तुलसीदास - माणिक - - दास - - कारापितं । श्री - - - स्या
पाडुका श्री - - स्य गुरु - - श्री जिन लब्धिसेन सूरि कृता ॥ यस्यां पाडुके बृहत् श्री खर
तर गणा - यं० जुग - - श्री युगप्रधान - - श्री जिनचंद्र सूरि शाखायां श्री उपाध्याय -
श्री रत्नतिलक - - तत्पट्टालङ्कार श्री वाचनाचार्य - लब्धिसेन गणि आदेशेन श्री दलचंद्र
- - याणा बालिङ्गिवा गोत्रे । नैरवन - - ठा० गुजरमल्लेन - - श्री रत्नतिलक वा० - - - त
ठा० - - करेन प्रतिष्ठा पुनमीया - - ।

[198]

॥ संवत् १७०१ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री जिन कुशल सूरिणा पाडुके ॥
महतीयाण चोपड़ा गोत्रे । सङ्गवी तुलसी दास जार्या कल्याणी निहालो पुत्र सङ्गवी संग्राम
सिंह - - - गणिजिः प्रतिष्ठिता श्री पावापुरी समस्त श्री सङ्ग संहिता श्री रस्तु ।

[199]

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ श्री जिनदत्त सूरि सद्गुरुणां श्री जिन
कुशल सूरिणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं० च० श्री जिन महेंद्र सूरिजिः । का । ठा । मो । श्री
सिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन श्रेयोर्थ मानंदपुरे ॥

दाहिने श्री स्थूलजड कोठरी के चरणों पर ।

[200]

श्री ॥ नमनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां (१७९७) नयन रस सरत्वाञ्छन्
शुक्लेषु शाके (१७६१) ॥ सित पटधर पाटो फाट्युने शुक्ल पद्मे जुजगपति तिर्यौ (५)
स्रज्जार्गवे वासरेहैं ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म वृद्धर्थ श्री स्थूलजडाचार्य पादपद्म प्रतिष्ठ
बृहत् खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रज्ञाकर श्री जिन महेन्द्र सूरिणा कारिता उ० ॥
श्री हीरधर्म गणि विनय विद्वत्कुलकज प्रज्ञाकर श्री कुशलचन्द्र गण्युपदेशतः । काशीस्थ
श्री संघैः ॥ बदलिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुन्निलावाजिधेन ॥

[201]

(१) ॥ सं० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पाडुका । (२) ॥ श्री जिन ललित सूरि
पाडुका ।

[202]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिर्यौ १५ गुरुवासरे० बृहत् खरतर
गङ्गे० यु० ज० श्री जिनरंग — — — ।

[203]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक शुक्ल पक्षे राका तिर्यौ १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गङ्गे यु०
ज० श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतनन्दन
गणिनां पादपद्मे स्थाप्यने० वा० जुवनचंद्रेण । वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले जवतः
आ० श्री जिनचन्द्र सूरिणां चरण कमले इमे जवतः ।

श्री चंदनवाला कोठरी के चरणों पर ।

[204]

॥ सं० १७१० प्र० श्री सुजाण बिजयाजी पाडुका ।

(५१)

[205]

सं० १९०० मा वर्षे सिते १२ ॥ बृहत् खरतर गच्छे यु० ज० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां
शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्त्ति विजयायां — — चरण सरसी रुहे
प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौजाग्य विजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[206]

सम्बत १८४८ शाके १९१३ वर्षे मिति बैशाख शुक्ल ३ तिथौ भृगु वासरे श्री मत् खरतर
गच्छे जट्टारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीमहत्तरा मति विजयाकस्य पाडुका शिष्यनी
रूपविजया पावापुरी मध्ये प्रतिष्ठापिते:

[207]

॥ श्री संवत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र वारे श्री मद्बृहद्द्वोंका
गुर्जरधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००० श्रीश्री अक्षयराज सूरिजी चरण कमलौ
स्थापितौ श्री अजयराज सूरिजिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभ्रजवतु =

[208]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर
जिनवर चरण कमले शुभ्रे स्थापिते । हुगली वास्तव्य जस बंशे गांधि गोत्रे बुलाकी दास
तत्पुत्र साह माणिक चंदेन श्री दत्त्रीयकुंरु नगर जन्मस्थाने जन्मकल्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं
करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावन्नजस्तले सूर्य चंद्रमसौ स्थितौ बरौ तावन्नंदतु तीर्थोयं
स ————— !

-[209]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री दत्त्रीकुंरे
संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

सं १८३८ माघ शु० ५ सकल संघेन श्री बीर पाडुका कारापितं स्थापितं श्री पाबापुर्या ।
आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

बिहार ।

बिहार वा सूवेबिहार का प्राचीन नाम “तुंगिया नगरी” था । निकट में विशाला नगरी
भी थी । जैन सहर था । पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे “बिहार” नाम प्रसिद्ध जया ।

धातुओं के मूर्ति पर ।

मधियान महद्वा ।

सं० १४३८ श्री — — तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ
सा देव्हा पुण्यार्थ का० प्र० श्री जिनराज सूरि ।

प० ॥ सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ दिने उकेशं वंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० सवमणेन
पुत्र रतना नरसिंह नयणा ज्ञा० — दादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिन बर्द्धन सूरिजिः ॥

सं० १५०६ माघ सुदि ५ — — बोढा गोत्र — — पुत्र जाऊकेन ज्ञा० जाऊ श्री पु० — —
माळा — ज्ञा० हेम — — नाथू ज्ञा० कुमिमदे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गळे श्री मुक्ति
तिषक सूरि ।

ए।सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ दिने श्री उकेश बंशे छोढ़ा गोत्रे सा० जोळा संताने सा० बीरा जार्या जावलदे पुत्र सा० जाडाकेन पुत्र नीमल बीसल छूदा माका सहितेन श्री बासुपूज्य बिंव कारितं प्रति० श्री खरतर गढाधीश श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार श्री जिन चन्द्र सूरि युगप्रधान गुरुराजौ ।

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नगराज सुत ठ० लघूजार्या धामिणि पु० सं० श्री अवलदासेन पुत्र ठ० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन बीरसेन देपाल पढिराजादि परिवार वृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचन्द्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय शाखायां बायड़ा गोत्रे स० पौमराज जा० सुरदेवी पुत्र ठ० दासू जा० कपूरदे पु० ठ० सदय वध (?) प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंव कारितं प्र० श्री खरतर गढे श्री जिनसुंदर सूरि पदे श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥ श्री ॥

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० श्री नगराज सुत ठ० श्री लघूजार्या धर्मिणि पुत्र स० सिंगारसी जा० कुंवरदे पु० स० राजमल्ल सुश्रावकेण पुत्रादि परिवार सहितेन श्री आदिनाथ मूल बिंवश्चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः खरतर श्री जिन चन्द्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० बरागामेः ॥ ७ ॥

सं० १५२७ वर्षे माघ सुदि दशम्यां बुधे श्रीमाख झातीय स० गजु जार्या धरणी आत्म

श्रेयोय श्री नेमिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचन्द्र सूरि पदे श्री जिन
चंद्र सूरिराजैः ॥ श्री मंरुपे दूर्गे महता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[219]

सं० १४९९ वर्षे फागुण बदि २ गुरौ उपके० सूर गोत्रे सा० सिवराज जा० माकु पु०
पासा सहसा जातु बठराज पुण्यार्थ श्री शितलनाथ विंव का० प्रति० श्री उपकेश गढे ककु-
दाचार्य संताने श्री कक सूरिजिः ॥ ७ ॥

[220]

सं० १५४० वर्षे वैशाख मासे उकेश बंशे दोसी गोत्रे सा० कलू पुत्र सा० लषा जार्या
रुपाई पुत्र० लषमी धरेण जार्या लीलादे सहितेन श्री अजितनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं
खरतर गढे श्री जिनसमुद्र सूरिजिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[221]

सं० १६३० समये फागुण सुदी ५ जौमे श्री मूलसंघ सरस्वति गढे बलात्कार गणे
श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री धर्मकीर्ति देव तत्पट्टे ज० श्री शीलचूषण तत्पट्टे ज० श्री ज्ञान
चूषण अथ ज० सुमित्रनी तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्ति ततशिष्य । मंरुपे आचार्य श्री मेरुकीर्ति
गुरुपदे - जू ॥ मगध देसे । खुदिमपुर बास्तव्य जेसवालान्वये कष्टहार गोत्रे सा० बीरम
तझार्या वंयंत्रयोः पुत्र सहसी तझार्या अजेसिरि त्रयो पुत्रौ प्रथम किनू तझार्या परिमल
तत्पुत्र जिनदास तझार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास जार्या
रुकमिनि मेतेषां मध्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु ॥

लालबाग का मंदिर ।

[222]

सं० १५३९ ब० बै० शु० ३ सोमे प्रा० वृ० मं माईया जा० बरजू पु० सीधर जा० मांजू
पुत्र गोरा जा० रुक्मिणि पु० बर्द्धमान मातृ पितृ श्रे० श्री कुंथुनाथ बि० कारापितं प्र० तपा०
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[223]

सं० १६४३ फा० सि० ११ श्री ह्रीर विजय शिष्य श्री विजयसेन सूरिजिः प्र० आदि
नाथ — — ।

[224]

सं० १७७७ चैत्र सु० १५ — — बिं० श्री जिनहर्ष सूरिणा — — महतावचंदे जार्या
आविका — — ज्या गुलावचंद पुत्र युतया — — ।

[225]

सं० १७९६ ज्येष्ठ वदि ७ ओसवाख झाती जम्मड गोत्रीय बाबु प्रेमचंद तत्पुत्र बिहारी
ल्लाखेन श्री सिद्धचक्र पटं कारापितं प्रतिष्ठितं विष्णुदय गणिना ।

पाषाण पर ।

[226]

संवत् १५१४ जेष्ठ वदि ४ श्री उपकेश झातौ साह श्री शक्तिसिंघ जा० सहजलदे —
— साह सोमा जार्या आपु नाम्न्या आत्म श्रेयसे श्री अजितनाथ बिं० कारितं प्रतिष्ठितं
श्री उपकेश गढे श्री कक सूरिजिः ॥ श्री अजितनाथ प्रणमति बाई आपु नाम्न्या —

[227]

संवत् १६७४ वर्षे -- माघ सुदि ए दिने जेम बासरे श्रवण नक्षत्रे -- -- -- गोत्रे
ठाकुर -- -- ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुलीचंद श्री जिन कुशल सूरिणं पाडुके कारितं ।

[228]

सं० १६७४ शाके १५५५ ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र वदि १३ शुके शुजे मुहुर्ते दक्षिण
देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पटे ज० श्री मूल शृंगार हा -- -- -- बघेरवाल ज्ञातौ स०
श्री तोला ज्ञा० सं -- -- पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ -- -- -- देव ज्ञार्या सोहि -- -- श्रेयोर्थ
-- -- श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[229]

सं० १७३० माघ शुदि ५ -- श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि -- ।

[230]

सं० १७३० माघ शु० ५ सकल संघेन शान्तिनाथ पाडु० कारापिता --

[231]

प्रणमहिये गूणवीस सय वरसे बइसाह -- सुद्ध -- -- बह पियामह सिरि जिन
कुशल सूरि पाय छवणा कारिया सिरिमाल बंसे वदलीया गुत्ते साह कमला वइणा विसाला
सुपइ छिय सयल सूरिहिं ॥ श्री ॥ ;

[232]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः

सं० १७४६ मीती बेसाख सुदी १३ -- -- !

(५७)

[233]

सं० । १९३९ फाट्गुन कृष्ण ९ गुरौ श्री जिन कुशल सूरि पादन्यास । जं० । यु । प्र
ज । श्री जिन मुक्ति सूरिश्चरणामादेशात् श्री दासचंद गणिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सेठ गोत्रीय
ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर वरो

[234]

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संवत् १९५० सि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंघे सरस्वति गढे बला-
त्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्राय सकल कीर्त्ति जट्टारक तत्पट्टे । जट्टारक कनक कीर्त्ति
उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तज्ञार्या केशरबाई खुरदेवाळे प्रति०

[235]

संवत् १९५५ पोस सुद १५ गुरु ॥ श्री लुंपक गढे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठा-
तम् ॥ बाबू लठमीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पाडुकेन्योः
॥ श्री स्थूलजड्र सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरिः ॥

राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है । १० मां तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ठ बदि-० जन्म फाट्गुन सुदि-१२ दीक्षा फाट्गुन बदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है । ११ मां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समय में जरासंधकी जी यही राजधानी थी । १४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । गौतम बुद्ध की जी यही लीला भूमि थी । प्रसेन जित उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी जी १४ चौमासे यहां किये । जंबुस्वामी, धन्ना, शालिजड्रजी आदि बड़े २ लोग यहांके रहने वाले थे । यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड बहुतसे हैं और स्थान देखने योग्य हैं । पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुत्रगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदयगिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैज्रगिरि । पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं । बहुतसे चरण वा मूर्ति इधरसे उधर बिराजमान हैं इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिट्टा दिया गया है ।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति । *

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुलाचलामरगिरि स्थेयः स्थिति स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाजिराम जुजगाधीशस्फटासंस्थितिः । पादासीन दिवस्पतिः शुच फल श्री कीर्त्ति पुष्पोज्जमः श्री संघाय ददातु बांछित फ

(२) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविजोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राजां जय राम लक्षण जरासंधादि जूमीजुजां । जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि श्री शास्त्रिनां संजवः प्रापुः श्रेणिक नूधवादि

*“ जैन तीर्थ गाईड ” के तवारिख सुबे बिहार में उसके ग्रंथकर्ता लिखते हैं कि मथोयान महल्लाके “ मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुआ है — — — संवत तिथि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति (१६) हर्फ उमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है बच्च शाखा बगेरह नाम बेशक मौजूद है ” यह पद कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई । पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया । किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया । पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है । यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था । इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिससे बहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा । यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्ताका भी नाम विद्यमान है पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है ।

(३) जविनो बीराच्च जैनी रमां ॥ १ यत्राजय कुमार श्री शालिग्रन्यादि साधनाः ।
सर्वार्थ सिद्धि संजोग जुजो जाना द्विवापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुत्राजिधोवनि धरो बैजार
नामापिच श्री जैनेन्द्र विहार नूषण धरौ पूर्वाप

(४) राशस्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लज्जं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राजः
गृहानिधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण
महत्तम तीर्थे । श्री राजगृहम

(५) हातीर्थे । गजेंद्राकार महापोत प्रकार श्री विपुत्रगिरि विपुत्र चूडा पीठे सकल
महीपाल चक्रचूडा माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे । सुरत्राण श्री साहि
पेरोजे महीमनुशासति । तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मज्जिक वयोनाम मण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास
दुरदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुहते सुराज्यं
वक्त्रः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुनारा सोयं विजाति जुवि मंत्रि दलीय वंशः ॥ ५ वंशेमुत्र पवित्र धीः
सहज पालाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सद्गुणमणी शृंगारितांगः पुरा । तत्सूनुस्तु
जनस्तुत स्तिहुण पालेति प्रतीतो जव

(८) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहानिधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर
मंरुनाख्यः सद्धर्म कर्म विधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणालिधाम जज्ञे
गृहेस्यः गृहिणी थिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समजवन् जुवने विचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः ।
तत्रादिमास्त्रय इमे सहदेव कामदेवानिधाम महाराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जयति
संप्रति बहाराजः श्री मा

(१०) नू सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । याज्यां जनाधिकतया घनपंक पूर्व देशेपि धर्मः
रथ धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ९ प्रथम मनव माया बहाराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति
सज्जीति रीतिः । प्रजवति पहराजः सद्गु

(११) ए श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्चोढराख्यः ॥ १० द्वितीया च प्रिया
जाति बीधी रिति विधि प्रिया । धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च
दयिताद्या देवराजस्य राजी गुण म

(१२) णि मयतारा पार शृंगार सारा । समजवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनुच
गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कलत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः
पीमराजो ग जानः । प्रथम उदित पद्मः पद्म

(१३) सिंहो द्वितीयस्तदपर घमसिंहः पुत्रिका चाढरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीवर्द्धमान
जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिजंदः । सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत्
सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

(१४) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समजवदशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव महीधर जेद वज्रः
यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश
मतीव विकाशवत्यां चांड्रेकु

(१५) ले विमल सर्वकला विलासः । उद्योतनो गुरुरजाद्विबुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु
मुनि र्गणि वर्द्धमानः ॥ १६ तदनु जुवनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाचूः
सरिर्वजूव जिनेश्वरः । खरतर इ

(१६) तिख्याति यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकर्ता श्रीपंद --- दुगणो वनौ ॥ १७
ततः श्रीजिन चद्राख्यी बजूव मुनि पुंगवः । संवेग रंगशालां यश्चकार च वज्राश्च ॥ १८
स्तुत्वा मंत्र पदाक्षरै रयनितः श्रीपा

दुसरा पत्थर १

(१७) श्र्व चिंतामणिं --- ताकारिणं । स्थानेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रे
नवान्यायके । --- ताऽ जय देव सुरिशुरव स्तेतः परं जङ्गिरे ॥ १९ ---

(१८) --- (जिनवह्मज) --- शांगनोवह्मजो --- प्रियः यदीय गुण
गौरवं श्रुतिपुटेन सौधोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिनः
दत्तसूरिरजवयोगीड्र चूडामणि मिथ्याध्वां

(१९) त निरुद्ध दर्शन — — — — श्रावक यान्य देशि सुगुरुः क्षेत्रे त्र सर्वोत्तमः सेव्यः
पुण्यवतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ ११ ततः परं श्रीजिनचंद्र सूरिर्वचुव निःसंग
गुणास्त नूरिः ।

(२०) चिंतामणि जलितले यदीये ध्युवास वासादिव जाग्य लक्ष्म्याः ॥ १२ पद्मे
लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टांत स्थिति बंध बंधुरमपि प्रक्षीण दृष्टांतकं ।
वादेर्वादिगत प्रमाणमपि यै वाक्यं ।

(२१) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या वचूवु सूतः ॥ १३ अथ जिनेश्वर
सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोचर जास्वराः । जुवि विबोधित सत्कमला करा समुदिता
वियति स्थिति सुन्दराः ॥ १४ जिन प्र

(२२) बोधा हत मोह बोधा जने विरेजुर्जनित प्रबोधाः । ततः पदे पुण्य पदे दसीये मण्यं
छ चर्चा यनि धर्म धुर्याः ॥ १५ निरुंधानो गोत्रिः प्रकृति जरुधीनां विलसितं त्रमद्रश्य
जोतो रस दश कला केलि

(२३) विकलः । उदितस्तत्पदे प्रतिहत तमः कुग्रह मति नवीनो सौ चंद्रो जगनि
जिन चंद्रो यतिपतिः ॥ १६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धारे
सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

(२४) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम जिनपते र्येन सौचै र्यशोत्रि श्रित्रचक्रे जगत्पां
जिन कुशज गुरु स्तपदे जात्र शोत्रि ॥ १७ वाद्यपियत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केली विलो
क्य सरसा हृदि शारदापि । सौजाग्य

(२५) तः सरज संविललास सोयं जातस्ततो मुनि पतिजिन पद्मसूरिः ॥ दृष्टा पदष्ट
सुविशिष्ट निजान्य शास्त्र व्याख्यान सम्यगवधान निधान सिद्धेः । जज्ञे ततो ऽस्त कलिकाल
जना समान ज्ञान क्रिया

(२६) विधि जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ १८ तस्यासने विजयते सम सूरि वर्यः सम्प्रग
दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः । श्रीजैन शासन विकासन नूरि धामा कामापनोदन मना जिन
चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत — — — । श्रीमद्भिहार पुर
वस्थिति बहुराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र बहुराज सक्क-
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरुनान्वय

(२८) मंरुनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरिन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु
श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो जुवन
हिताजिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि चूमिते ब्रजति विक्रम चूभृदनेहसि । बहुल षष्टि दिने श्रुधि
मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मय्यः प्रासाद
एष कलसध्वज मणितो

(३०) ऋः । निर्माप कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता चुपि सुप्रतिष्ठा ॥
३६ श्रीमद्भिर्जुवन हिताजिपेक वर्यै प्रशस्ति रेपाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति
रिव मूर्त्ता ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा नकुर मा

(३१) द्वांगजेन पुण्यार्थ । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाजिधानेन ॥ ३८ इति
विक्रम संवत् १४१२ आषाढ वदि ६ दिने । श्रीखरतर गढ शृङ्गार सुगुर श्रीजिनलब्धि सूरि
पट्टालङ्कार श्रीजिनेन्द्र सूरिणामुपदे

(३२) शेन । श्रीमंत्रि वंश मंरुन ठं० मंरुन नंदनाच्यां । श्रीजुवन हितोपाध्ययानां
पं० हरिप्रज गणि । मोद मूर्त्ति गणि । हर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्वं
देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

(३३) णादि महा प्रजावनया सकल श्रीविधि-संघ समान नंदनाच्यां । ठं० बहुराज
ठं० देवराज सुश्रावकाच्यां कारि — — — — — स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥ शुने
भवतु श्रीसंघस्य ॥ ५ ॥ ॐ ॥

(६३)

गांव मन्दिर-धातुओंके मूर्ति पर ।

(237)

सम्बत् १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४९७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ रवौ ऊ० झा० सा० सपुरा भा० सीतादे पु० कर्मसिंहेन श्री नमिनाथ विंवपितृ मातृ भेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव गुप्तसूरिभिः ।

पाषाण पर ।

(239)

सम्बत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटड़गोत्रे सा० देवराज पुत्र सं० पीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास । श्रीशांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपहं श्रीजिन चन्द सूरिपहं श्री जिन सागर सूरिणां निदेसेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ।

(240)

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्बत् १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे श्रीमुनि सुत्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे मंघी गोत्रे वुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं ।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरुषेतासाह पुत्र्या उमरवाई केन शांतनाथ विंव कारापिता ।

श्री शुभ सम्प्रत १६०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्री वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री बृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान भट्टारक श्री जिनरंग सूरेश्वर शाषायां य० यु० भट्टारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरि राज्ये श्री वाचनाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल वंशोद्भव बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी वीवी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण कारिणी भवतु शुभमस्तु ।

शु० सं० १६०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० ख० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संचीतीकस्य पत्नी चिरोंजी वीवी प्र० का० शुभमस्तु ।

सं० १६११ व० शा० १७७६ प्र० शुचि शु० १० ति० श्रीचन्द्र प्रभ विं० प्र० । भ० । श्री जिन महेंद्र सूरिभिः का० सा श्री हफु-----खरतर गच्छे ।

विपुलगिरि ।

संवत् १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्ल वासरे । श्री बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्प्रार्था संघवण निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुलगिरौ ----- अमै जीर्णा उद्गुरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे----- लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही ।

(૬૫)

(246)

સં. ૧૮૪૮ મિતી કાતિક સુદિ ૭ તિથી । શ્રીસંઘેન । શ્રીત્રિપુલાચલે મુક્તિંગતસ્યાતિ મુક્તકમુને મૂર્તિઃ કારિતા । પ્રતિષ્ઠિતા ચ શ્રીઅમૃતધર્મ વાચકેઃ ।

(247)

સમ્વત ૧૯૩૮ જ્યેષ્ઠમાસે શુક્લ પક્ષે દ્વાદશી ગુરુ વાસરે શ્રીચન્દ્રપ્રજ્ઞ જિન ચરણ ન્યાસઃ પ્રતિષ્ઠિતં વૃદ્ધ વિજય ગણિ પ્રથમ જીર્ણોદ્ધાર માણિકચન્દ્ર ગંધી કરાપિતં વિપુલાચલ દુતિય જીર્ણોદ્ધાર રાય લછમીપતિ સિંહ ધનપતિ સિંહ કરાપિતં । શ્રીરસ્તુ ॥

(248)

સંવત ૧૯૩૮ જ્યેષ્ઠ માસે શુક્લ પક્ષે દ્વાદશ્યાં શ્રી મુનિ સુવ્રત જિન ચરણ ન્યાસઃ વૃદ્ધ વિજય પ્રતિષ્ઠિતં રાય લછમીપતિ સિંહ ધનપતિ સિંહ જીર્ણોદ્ધાર કરાપિતં શ્રીરસ્તુશુભં મૂયાત્ વિપુલાચલ ।

રત્નગિરિ ।

(249)

॥ ઝંનમઃ ॥ સમ્વત ૧૮૧૯ વર્ષે માઘ માસે શુક્લ પક્ષે ૬ તિથી શ્રી નેમિનાથ જિન ચરણ કમલે સ્થાપિતે હુગલી વાસ્તવ્ય ઓશ વંશે ગાંધી ગોત્રે બુલાકીદાસ તત્પુત્ર સાહ માણિક ચન્દેન શ્રી રાજગૃહે રતનગિરૌ જીર્ણોદ્ધાર કરાપિતે ॥ શ્રિયોસ્તુ ॥

(250)

॥ ઝંનમઃ ॥ સમ્વત ૧૮૧૯ વર્ષે માઘ માસે શુક્લ પક્ષે ૬ તિથી શ્રી શાંતિનાથ જિન ચરણ કમલે સ્થાપિતે હુગલી વાસ્તવ્ય ઓશવંશી ગાંધી ગોત્રે બુલાકોદાસ તત્પુત્ર સાહ માણિક ચન્દેન શ્રી રાજગૃહે રતનગિરૌ જીર્ણોદ્ધાર કરાપિતે ॥

(१६)

(251)

॥ अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

(252)

अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमल स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री राजगृहे रतनगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

(253)

॥ अं नमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(254)

॥ अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(255)

अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो कल्याण हेतवे ॥ श्रीः ॥

(६७)

स्वर्ण गिरि ।

(256)

सं० १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० भीमराज पुत्र सं० सिवराजेन । भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुटुम्बेन श्री आदिनाथ विंवंकारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरि पढे श्रीजिन चन्द्र सूरि पढे श्रीजिन सागरसूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्रीखरतर गच्छे ।

वैभार गिरि ।

(257)

सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्रीजिन चन्द्रसूरि विजय राज्ये तदादेशे श्रीवैभार गिरौ मुनि मेरुणा भि० ॥ — श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्रीजिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीषू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

(258)

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्रीजिन चंद सूरिणा मादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः धन्नाशालि भद्र मूर्ति — का० प्र० भीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

अनमः ॥ सम्वत् १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधि गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

(६८)

(260)

॥ श्री सम्बत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते चन्दजी तत्पुत्र सैठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताव रायजी तद्गुर्म पत्नी जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं । स्था० राजगृह नगरोपरि वैभार गिरौ ॥

(261)

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति जेष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिषरे श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं भ० श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(262)

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार गिरि शिषरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । महारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(263)

सुभ सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्रीमत् शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत्स्वरतर ग० श्री जिन रंगसूरीश्वर साखायां वृ० भ० यं० युं० श्री जिननन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल बं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन प्र० का० शुभमस्तु ॥

(264)

अंनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य चरण क० प्र० श्री वृ० ष० ग० भ० श्री जिननन्दी वर्द्धन सूरी वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू पुस्याल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन प्र० का० श्री वैभार गिरे सुभमस्तु ॥

(६६)

(265)

॥ सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमत्पाश्र्व-
नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत् परतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साषायां श्री जिन
नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्
ओ० वं० पुस्यालचन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराणकुंवरश्राविका प्र० का० वैभार गिरे।

(266)

॥ अंनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा०
श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्बृ० ख० ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साषा० श्री जिन
नन्दी वर्द्धन सूरि ब० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्
ओसवाल वंसोद्भव बाबु मोहनलालजी त्कस्यात्मज बाबु हकुमत राय—कस्य गोत्रीय
प्र० कारापित शुभमस्तु । वैभार गिरौ ।

(267)

ॐ नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभ
वा० श्रीचिंतामणि पाश्र्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्बृ० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर
साखा० भ० यं० यु० प्र० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत्
शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् बाबु महताय चन्दस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरांजी
वीवी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे ।

(268)

सं० १९११ व । शाके १७७६ प्र० । शुचिः सुदि । तिथौ श्री नेमनाथपादन्यासो कारा०
प्र० भ० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः का । से० । गो । श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी महाकुमा—तस्या
श्रेयर्थं भवतुः ॥

कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान बडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुर्वर ग्राम नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी (इन्द्रभूति) जी का जन्म स्थान है । बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विश्वविद्यालय और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । गवर्णमेंट के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ भई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उपयुक्त बहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

पाषाणपर ।

(269)

॥ ५ ॥ संवत् १४७७ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंवं का० ।

(270)

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ६ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसो पुत्र म० भीषण कारित श्री महावीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरागोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठा० नीहालो तत्पुत्र भौर्या ठकु-रेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुर्वर ग्राम --कारा पिता बृहत्खरतर गच्छे पूज्य श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अभय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

सम्बत १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्तमाने----- मासि शुक्ल पक्षे सप्तमी गुरु वासरे
 बृहत श्री परतरगच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन
 तस्य भार्यान्हालो श्राविका पुण्य प्रभाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता
 श्री माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रणिष्टा क० श्री उपाध्याय श्री
 रत्नातिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी
 को राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा
 कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य वंशो चन्द्रगुप्त अशोक
 आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वति, भद्रबाहू-आर्य
 महागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी
 और सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है
 सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल बिहार उड़ीसाके शासन कर्ता यहां रहनेके
 कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उत्थति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

संवत् १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ भृगुवासरे श्री पडलीपुरवास्तव्य । श्री सकल संघ समु-
 दायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापितं ।
 काय्य गगेश्वरो तपा गच्छोय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्दजी प्रतिष्ठितं च श्री सकल
 सूरिभिः शुभं भूयात् ।

(७२)

धातुओं के मूर्तिपर ।

(274)

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे सा० अर्जुन पुत्रेण सा० उदय सिंहने भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्री पालादि युतेन आत्मश्रेयसे श्रीचंद प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पढे प्रभ सूरिभिः ॥

(275)

सं० १४८२ वर्षे श्री आदिनाथ विं वं प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे घौरपट श्री देवां कीर्त्ति भटकी घौरिय मुलसंघे सहजै पतिभर्जर्षिः भयमिरि पुत्र उदत्य-षिम्बराजामन । शुभं ॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० पेता भा० पेतलदे पुत्र चाचा वील्हा-देपा पेताकेन डूंगर निमित्त श्री धर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि तिलक सूरिभिः ॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा भा० मालही पु० ऊदा भा० ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन श्रीकातमि० (?) श्रीवासुपुज्य विं वं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शान्त सूरिभिः ॥

(७३)

(279)

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू
नाम्ना भा० चतू पुत्र डूंगशादि युतेन भातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंव का० प्र०
श्री तपा गच्छेश श्री रत्नशेषर सूरि पुरंदरैः ॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ सीणुरा वासि प्रा० वा० माई (?) आज्ञा बाकुंसुत सम-
घरेण भा० राजू पुत्र गानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंयु विंव का० प्र० तपागच्छे
श्री रत्नशेषर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आर्चंद्रार्कं जपतत् ॥ श्री ॥

(281)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि१ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाधू भार्या धर्मिणि
पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन
स्वश्रेयार्थे श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरसरगच्छेश्री जिन सुन्दर सूरिपदे
श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(282)

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० सान्हा भा० कल्ह पुत्र सं-नरसिंह
भा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना भातृ साहसमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व
श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री -रिभिः : ॥ देप । तप--श्री ॥

(283)

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रात् सुत सा० आल्हा भा० सोनी
पुत्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य विंव कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य वासियाः ॥

(७१)

(284)

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय चैवरीया गोत्रे सा० केलहण भा०
ऋणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साभू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंव कारि०
प्र० श्री स्वरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(285)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लीवडी वास्वव्य सं० खेमा भा० गोरी श्राविकया
पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री
कुंथनाथ विंव का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

(286)

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वामी
प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

(287)

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देलहाणधा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण द
श्री शांतिनाथ विंव का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

(288)

सं० १५३८ वर्षे आषाढ वदि ५ स--र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल --- श्री ॥

(289)

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय मांडिया गोत्रोय सा० अजिता
पुत्री सा० लाषा भार्या आढी सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंव कारितं स्र पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

(७५)

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पट्टालंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

(290)

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र
सा० तक्तनेनेदं पार्श्वनाथ विवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री
जिनराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(291)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्र सा० आसा
भा० कुंअरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विवं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः
॥ नलकच्छे ॥ (?) ॥

(292)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ३ शुक्ले श्री श्री (?) वंशे । सा० माला भा० खाजू नाम्ना
सुण्यो (?) जावड़ शी० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरिणा-
मुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं कारितं श्री संघेन ॥ श्रेयोऽयं ॥

.(293)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अन्नयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अन्नय
मंदिर गणि अन्नय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शान्तिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं तिस्र तपा
पट्टे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः ।

(294)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उसवाल ज्ञातीय नवलषा गोत्रे साहचान 'भा०-
जसिरि पु० पदमा-णापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्वज पूण्यार्थं श्री

(७६)

शितलनाथ विंवं कारितं प्र० नागोरी तपागच्छे भ० श्री राजरत्न सूरिभिः वधणोर वास्तव्यः श्री ॥

(295)

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० नानजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र--
एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लिः ॥ श्री ॥

(296)

सं० १८५६ वर्षे वैशाख सुदि३ बुधे वीवी मेंभाजी श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं सर्व समुदायेन ।

(297)

सं० १७४० वर्षे मार्गशिर ---- श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ।

(298)

सं० १७६३ वै० सु० २ ---- पार्श्व—

(299)

सं० १७६३ व० फा० व० १४ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ --- ।

(300)

सं० १७७१ वर्षे शाके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुके मान्नपूर वास्तव्य वीराणी गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० भीमसी तत्पुत्र सा० मयाचंद वासी हार्जीपुर पटना

(૭૭)

કાતેન શાંતિવિંવં ગૃહીતં શ્રી મેદિની પૂરે પ્રતિષ્ઠિતં શ્રી તપાગચ્છે મં વિજયરત્ન સૂરિ રાજ્યે
પં જય વિજય ગણિભિઃ ॥ શ્રી ॥

(301)

સં ૧૭૮૬ વર્ષે માઘ સુદિ ૧૫ દિને ચોઢરિયા ગોત્રે સાં જીવણ રામજી ખાર્યા મન
સુષદેજીઃ । સુત જગતસિંઘજી વિંવં કારાપિતં ।

(302)

સં ૧૮૨૦ વર્ષે મિઃ મિ-સુ ૩ શ્રી મં શ્રી જિન લામ સૂરિ - - - -

(303)

સં ૧૮૨૦ વર્ષ મિઃ માં સુ ૫ શ્રી મં જિન લામ સૂરિ પ્રં ધીર ગોત્રે શ્રેં મોતીચંદ
કારી - - - જિનઃ - - ।

(304)

સં ૧૮૨૦ મિં ફાં કૃં ૨ બુધ દૂગડ મહતાવ કુધર કાં પ્રં સાગર - - - - શ્રી અમૃત
ચન્દ્ર સૂરિ રાજ્યે

(305)

૨૪ જિન માતા પદ્મપર ।

સંવત ૧૮૪૮ મિતિ ખાદ્ર સુદિ ૧૧ તિથી ॥ શ્રી પાટલિપુત્રે માલહૂ ગોત્રે સાં હુકુમચ-
ન્દજી પુત્ર ગુલાવચન્દ ખાર્યા ફુલ્લો વીવી કયા ઇષ્ટ સિધ્ધર્થે શ્રી ચતુર્વિંશતિ જિન માતૃ
સ્થાપના કારિતા પ્રતિષ્ઠિતા ચ શ્રી જિનમક્તિ સૂરિ પ્રશિષ્ય શ્રી અમૃત ધર્મ વાચનાચાર્યેઃ
શ્રી રસ્તુ ।

(७८)

(306)

सं० १९०० मिः आषाढ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विं वं प्रति० खरतर भट्टारक गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशे दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दोलतरामेन स्वश्रेय सोर्थम् ।

पाषाण के मूर्तियों और चरणों पर ।

(307)

(चन्द्रप्रभ विं वपर)

सम्बत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे स० ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० घनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विं व प्रति —

(308)

संवत् १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रूर पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य बिं वं प्रतिष्ठापितं ॥

(309)

॥ श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संचपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन बिं वं प्रतिष्ठापितं स० चागाकृतं ।

(310)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० पेतसी लघुभ्राता सा० नेतसा

(७९)

युतेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य विंवं प्रतिष्ठापितं सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती लोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्तादे पुत्र सा० पेतसी भा० भक्तादे पुत्र सा० — सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री विमलनाथ विंवं प्रतिष्ठितं सा० क्रूरपाल — ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री क्रूरपाल सं० सोनपालैः स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ श्रीधर्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ विंवं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा करापितं बीराणी गोत्रे पाडली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ६ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द बीराणी गोत्रे — — — प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ६ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र० बीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शान्तिनाथ ॥

(८०)

(३१६)

॥ सं० १७८६ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय बेमचन्द जीना पादुका ॥

(३१७)

॥ संवत् १८१६ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक चंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥

(३१८)

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरी गोवर्द्धन सुत सरूपचंदेन प्रति महि - - नाथ विंभं कारापितं ।

(३१९)

॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२६ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(३२०)

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैशाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्गृहत्वरत्न गच्छे भट्टारक श्री जिन अक्षय सूरि पहालं कृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य । समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

(३२१)

॥ सम्बत् ॥ १८७७ ॥ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणां चरण पादुका प्रतिष्ठिता भट्टारक श्री जिन अजय सूरि पहालंकृत श्री जिन



(८१)

चन्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द्र तत्पुत्र श्री भग्गुलाल कीर्तचन्द्र तत्पौत्र किसनप्रसाद अन्नय चंद्रादि सपरिवारेण स्वश्रेयोऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

(322)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

(323)

॥ संवत् २४९ वर्षे वेशाष सुदि ३ श्री मुलसंघे भट्टारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे---

(324)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज पापडिवाल सहैरभ-सा श्री राजसी संघ राबल ॥

(325)

॥ संवत् १६०४ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रुरवंशे महाराजधिराजजी श्री मत्त स्याहजा राज्य भ० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे भ० श्री देवेन्द्र कीर्तिजी सदांमनाये सरस्वती गच्छे वलात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभां ।

(326)

संवत् १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमो गुरौ ढाकामध्ये ---- काष्ठा संघ माथुर गच्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म भट्टारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल मांगलु गोत्रे सा० गुलाल दास भा० मुलादे पुत्र० । सावलसिंघवी भमरसिंघवी केसर सिंह वि- - - प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके - - - - ढाकायां प्रतिष्ठा । - - - पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

(८२)

(327)

नेमनाथजीके विंवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्ठासं (घ) मायुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य
याम्नाय भ० देवेन्द्र कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० जगत् कीर्त्तिदेव तत्पदे भ० ललित कीर्त्तिदेव
तत्पदे भ० राजेन्द्र कीर्त्तिदेव हदाम्नाय अग्रोत् कान्वय वासिल गोत्रे सा० श्री सौषीलाल
तत्पुत्र बाबु मुनिसुव्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंव प्रतिष्ठा कारापिता
आरामपुर वास्तव्य --- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

(328)

॥ श्री संवत् १९१० शाके ॥ १७७५ साल मित्ती वैशाख शुक्ल पंचम्यां गुरौ पाटलीपुर
सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटरु मल
तत्पुत्र सीवनलाल प्रतिष्ठा कारापितं श्रीरस्तु ।

(329)

श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत् १८४८ वर्षे मार्गशिर वदि ५ सोमवासरे श्री पाटली वास्तव्य श्री सकल संघ
समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्यं स्याग्रेस्वरी श्री तपा
गच्छीय श्राद्धः श्री लोढा श्री गुलाबचन्दजी प्रतिष्ठि तंसकल सूरिभिः ।

(330)

चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं
कारयित्वा तत्र तेषां चरण न्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यैः ॥

(८३)

सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

(३३१)

चरण पर ।

अव्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठिसुदर्शनस्य इमे पादुके संप्रतिष्ठिते सकल संघेन शुभसंवत्सरे ॥

दादा वाड़ी ।

(३३२)

संवत् १६८२ मार्गशिर्ष शुदि ५ सा० कटार मल तस्यात्मज सा० कल्याण मल पुत्र चिंतामणि श्रीजिन कुशल सूरि० भ । वेगमपुर वास्तव्य ।

(३३३)

संवत् १६९९ वर्षे पूर्व देशे पाडलिपुर नगरे वेगमपुर --

(३३४)

तपागच्छै भ० श्री ५ श्रीहीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः पं० चंद्र कुशल गणि नित्यं प्रणमतिश्च । सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी गोत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द प्र० क० पाडलीपुरे ।

(३३५)

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८४४ वर्षे शाके १७०९ प्रवर्तमाने मिति माघ मासे शुक्ल पक्ष सूरिशाखायां साध्वी महत्तरा सुजान विजयाजी तत् शिष्यणी दीप विजयाजी तत् शिष्यणी अंते वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी मनसा रामेन प्रतिष्ठा कारापितं शुभमस्तु ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १६ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । तलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइड से लिया गया है ।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

(३३६)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या मेहताव कुवर सत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ भ्राता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १६३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

(३३७)

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंवं प्रतिष्ठितं -- ।

(३३८)

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य शून्य स्वामी गणधर विंवं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

(८५)

(३३९)

संवत् १८७७ - - श्रीपार्श्व विवं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं - - सांवत् सिंहज पदार्थ मल्लेन - - ।

(३४०)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविवं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा महतावी - - मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

(३४१)

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विवं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या फत्ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(३४२)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विवं कारितं ओशवंश दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

. (३४३)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविवं कारितं ओशवंशे नवलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद् महारकखरतर गच्छ श्री जिनाक्षयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(३४४)

सं० १८८७ वर्षे ---श्री ऋषभ जिनविवं कारितं प्रतिष्ठितं ---।

(८६)

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८८७) नेत्रषण गणधरायुते शके (१७६२) फाल्गुनांतिमदले सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ जिनमूर्तिः कारापितं श्री० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत युतया बृहत्स्वरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सूरिणा प्रतिष्ठिता ।

(346)

सं० १८०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंवां का० --- ।

(347)

सं० १८१० शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंवां प्रतिष्ठितं बृहत्स्वरतर गच्छे --- ।

टोंकपरके चरणों पर ।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ।

(349) .

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० चंद्रे । श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्भिजय गच्छे । महारक । श्री जिन शान्तिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च ॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसालचन्देन श्री संभव पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ॥

(६७)

(351)

संवत् १९३० । माघे । । शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन कारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(352)

॥ सं० १९३३ का जेष्ठ शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन चंद्र सागर सूरि पटोदय प्रभाकर भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां । स्थापितांच । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(353)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रोय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(354)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णोद्धार रूपा । गुजर्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । म । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(355)

॥ सं १९४९ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण स्थापितं प्रति । म । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(८८)

(३५६)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-
पादुका कारापिता प्र० ।

(३५७)

संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार
रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तया स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे ।
भट्टारक । श्री जिन शांति सुरिभि । प्रतिष्ठितं च ।

(३५८)

॥ संवत् १८४८ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ बुधवारि । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य
चरण न्यासः श्री संचाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भट्टारक ।
श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(३५९)

॥ संवत् १८३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका ।
अहमदाबाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा विजय
गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(३६०)

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा । अहमदाबाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता कारापित
च । मलधार पूर्णिमा । श्री मद्भिजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम । श्री श्री जिन शांति
सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(८६)

(361)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(362)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री शीतल नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(363)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(364)

॥ संवत् १८३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय गच्छे । भ । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(365)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(366)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री विमलनाथ जिनेंद्रस्य पादुका जीर्णोद्धाररूपि । गुजरात का श्री संघेन । तथा स्थापना कारापिता । मलधार श्री विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भट्टारकं । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

(६०)

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत
प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

(368)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्भिजय गच्छे
भट्टारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

(369)

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते माघोत्तम माघे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षौ नवमी तिथौ
सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री दम्भेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता
वृहत् खरतर भट्टारकोत्तम भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र
सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

(370)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार
रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता ।
पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भट्टारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥
स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(६१)

(372)

॥ संवत् १६३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाइ पेम चंदेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

(373)

॥ संवत् १६२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री कुंथुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

(374)

॥ संवत् १६३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री कुंथु जिनेंद्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बई वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता -- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रभाकर -- भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

(375)

॥ सं० १६२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

(376)

॥ संवत् १६३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तया स्थापना कारापिता मल ॥ पूर्णिमा । विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।

(६२)

(३७७)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंदेन ।
श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता प्र ० श्री तपा गच्छे ।

(३७८)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता
मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । भट्टारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभि
प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

(३७९)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुब्रत
जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(३८०)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार
रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री मद्विजय
गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

(३८१)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमि-
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(६३)

(382)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरणपादुका ।
जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा-
पिता । पूर्णिमा विजय गच्छे महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

तेजपूर (आसाम)
रायमेवराजजीका मंदिर ।

(383)

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्री० सानंद भार्या हीसू
सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थे श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(384)

सं० १८४३ का मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां -----

(385)

सं० १८५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे ॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री
जिनदत्त सूरि नाम पादुका का० ।

. कलकत्ता

श्री कुमारसिंह हल - नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट ।
धातुर्योके मूर्त्ति पर ।

(386)

श्रीपार्श्वनाथ विंव ।

ब्रह्माण सत्त्व संयकः श्रियावे सुनः सुपुण्यक श्री द्वः (?) सीलगण सूरि भक्तस्प (?)
द्रकुले कारयामास संवत् १०३२

(६४)

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेशराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पालहण रालहणाभ्यां
स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

ॐ श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) वालान्वय सारभूतः ।
यो विस्तु (श्रु) तोसौ सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तस्माच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३६ फा सु० २ गुरौ ॥

(389)

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ० केश ज्ञातीय बापणा०
सा० छाहउ त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन मातृपितृ
श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडाबजार-पंचायति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पत्नीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥
करिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर ।

(391)

॥ संवत १५०६ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर भार्या म्यापुरि सुत पूजाकेन भार्या सोही सुत बीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पद कारितः । आगम गच्छे श्री अमरसिंह सूरि पद श्री हेमरत्न सूरि गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(392)

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० मरगदे सुत सा० हृदाकेन भा० करमी पु० पालहादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विं० का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि पद श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(393)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशाषायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः ।

कलकत्ता अजायब घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

(394)

--संवत १-८४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंबहरा सं० केशव सुत सं० मंडिलक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदेसुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-मेघाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री जीवणि प्रमुख रामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ विं० कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छ नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पहालंकरण भ० श्री उदय बल्लभ सूरिभिः श्री ज्ञान सागर सूरि युक्तो प्रतिष्ठितं ।

(६६)

(395)

संवत् १६०८ वर्षे माघ वदि ६ गुरौ प्राग्वाट ज्ञाती सा० राघव भा० रतना सा० नर-
सीआ भा० सुजलदे सा० रणमल भा० वेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ विंव
प्रतिष्ठितं ।

म्युनिक (जर्मनि) के जादुघरके धातुकी मूर्ति पर ।

(396)

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्टिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुडाकेन
भा० सुहवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंव कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र
सूरि पहे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु ।

डाः कुमार स्वामिके पास ' समवसरण ' के चित्र पर ।

(397)

संवत् १६२० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री मदुत्तराघ गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यमाने
लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्तियों पर ।

(398)

सं० १५२७ पौष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० सहिजक तत्पुत्र श्री० डूंगर भा०
आ० सुडि सपरिवार भा० सहिजलदे धरमसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री
कुंथुनाथ विंव का० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(६७)

(399)

सं० १५३३ वै० शु० १२ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० तालहा भा० राजु पु० सा० लिमघाक
तत् भा० रत्न रुद्रु भ्राता सा० किवालय मेघ आदि सपरिवारेन श्री कुंथुनाथ विंवं का०
प्रति० श्री तपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्री वसंतनगरे ।

जैपुरके वेपारियोंके पासकी मूर्तियों पर ।

(400)

सं० १४०५ वैशाख सु० ३ श्री उएस गच्छ तातहड़ गोत्र प्र० साः-उज भा० ब्रह्मादे वही
पुत्र संघ० सा० चाडूकेन सकुटुंबेन श्री रिषभविंवं का० प्र० श्री ककुदा चार्य संताने श्री कक्क
सूरिभिः ॥

(401)

सं० १५१२ वर्षे वै० शु० ५ ओसवाल गोत्रे सा० महणा भा० महणदे सुत सा० सीपा
केन भा० सूलैसरि प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ विंवं का० श्री कक्क सूरिभिः ॥

अजमेरराजपुताना म्युजिउमके वारलि गांवसे प्राप्त पत्थर पर । *

(402)

--- विरय भगवत (त) -- थ -- चतुरासि तिव (स) -- (का) ये सालिमा-
लिनि -- रंनि विठमाफिमिके --

* इसमें श्री महावीर स्वामिका नाम और ८४ वर्षमें मध्यमिका नगरका जो कि चित्तोड़से ४ कोस उत्तरमें था उसका
है और यह ई० ३ । ४ पूर्व शताब्दि का बहोत प्राचीन लेख है ऐसा विद्वानोंका विचार है।

* बनारस *

काशीदेशका यह वाराणसी वा बनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है । हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है । यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पौष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं । महल्ले भेलुपुरा और भदेनीमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं । यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ-वदि ३ केवल ज्ञान भया है । निकटमें बौद्धोंका सारनाथनामक प्राचीन स्थान है ।

सुत टोलेका मंदिर ।

पंच तीर्थों पर ।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्री० मूंघा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थे श्री शितलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक सूरि पद्वे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

(404)

सं० १५५६ वर्षे आषाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्री० जावड़ भार्या पूरी सुत घर-णाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शांतिनाथ विंवं श्री निगमागमा भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

(६६)

बट्टर्जीका मंदिर ।

(405)

सं० १५१९ वैशाख शु० ५ प्राग्घाट सा० सिधा भा० लादां सु० साह हीराकेन भा० संजत्री प्रमुख सुरत श्री-जिनावति का० प्र० तपा रत्न शेखर सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

(406)

सं० १४८५ वर्षे आ० सुदि १० रवौ मालहू -- ऊ० ज्ञा० साह बीजड पु० साह हरपाल भा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं राजावर्त्तक रत्नमयं सपरिकरं का० प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

(407)

सं १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ३ जोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंह आतृपरी पनपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

(408)

संवत् १२५७ ज्येष्ठ सु० १० महेष्ठीराचार्य --- स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिनाः ॥

(१००)

रामचन्द्रजी का मंदिर ।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूरणा गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जगद भार्या
जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्री० महावीर वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे
श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्यै श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५६ ज्यैष्ठ्य वदि १२ शनौ सूरणा गो० सा० अमर भा० अइहव दे सुत सा० ताला
सालहा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० भ० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पालहण
देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिघा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ
विंवं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरिन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥
शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा ---
पु० --वालहा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशोदेव
सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५४६ वर्षे ज्यैष्ठ्य सुदि १३ घेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीजदेवी गोवेद पु० पीमा
पु० सा० सिंघण सुमेरु आत्म पुण्यार्थं कुंथुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे भ० गुण कीर्त्ति
सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन ।

(१०१)

(414)

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवौ श्रीमाल मउवीया गोत्रे सा० परसंताने सा०
पहराज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्श्वनाथ विंव स्वपुण्यार्थं
कारितं । प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन बिलक सूरिप० श्री जिनराजसूरि पहे श्रीभिः ॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर-रामघाट ।

(415)

सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीषण्डेरकीय गच्छे श्रीवाहड़ भार्य धीरु पु० धरा
---मयणलल---णिग भार्या केलहण सहितेन विंव कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः ।

(416)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उके० व० सा० रेडा भार्या रण श्री पुत्र पद सादा
जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ विंव का०
प्रतिष्ठितं च॥ श्री ॥

(417)

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कौरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उवणश वंशे
डागलिक गोत्रे साह धना पु० स० पासवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथ
विंव कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपहे सद गुरु चक्रवर्त्ति महारक श्री सावदेव सूरिभिः ।

(418)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ वदि १ मन्त्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नाग राजसु० लडू भार्या
धर्मिणि सु० सं० श्री केवल दास भार्या वीर सिंधि पु० स० सूर्यसेन श्रावकेण श्री कुंथनाथ
विंव कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपहे श्रीजिन सुन्दरसूरि पहे श्री
जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(१०२)

(419)

सं० १५१९ आषाढ वदि-मंत्रिदलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० धर्मिणिपु० स०
अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विंव का० प्र०
श्रीजिन भद्र सूरि पढे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

(420)

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराजभा० माणिकि सुत देवदत्त भा०
रूपार्ई सुत साह कर्म सिंहन भार्या हंसार्ई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ विंव
का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे ।

(421)

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या
सुहवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रभ
स्वामि विंव कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रत्न सूरि प्रतिष्ठितं त्रिजारा नगरे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

(422)

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मंडलिक
सुत कामा भार्या कामीदे सुत आभूषण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ
विंव का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः ।

(423)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० बेला मातर
भार्या सोही सु० महिराज जिणदास महिपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयोर्थं श्री
श्रेयांस विंव आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना
घांटू वास्तव्यः ॥

(૧૦૩)

સિંહપૂરી ।

(424)

સં. ૧૫૩૪ વર્ષે માર્ગ સુદિ ૧૦ શનૌ પ્રાગ્વાટ જ્ઞાતીય સા. રાજ ખાર્યા વારુ પુ. સા. અસપતિ ખા. અસલ દેવી માઈ સુત ગુણરાજ સરાદિ કુટુંબ યુતેન શ્રી મુનિ સુવ્રત વિવં કારિતં પ્રતિષ્ઠતં શ્રી વૃહત્પાચ્છે શ્રી ઉદયસાગર સૂરિભિઃ ।

(425)

ચરણ પર ।

સં. ૧૮૫૭ મિતિ ચૈત્રક માસે કૃષ્ણ પક્ષે ષષ્ઠ્યાં કર્મવા-પૂજ્ય મહારક શ્રીજિન હર્ષ સૂરિ વિજયરાજ્યે શ્રીસિંહપૂર ગ્રામેતેષાં કેવલોત્પત્તિ સ્થાને ગાંધિ ગોત્રીય મયાચંદ પ્રમુખ સમસ્ત શ્રીસંઘેન શ્રી શ્રેયાંસારુયા નામેકાદશાનાં લોક નાથાનાં પાદન્યાસઃ કારિતઃ પ્ર. શ્રીજિન લાભ સૂરિણાં શિષ્યૈઃ ઉપાધ્યાય શ્રીહોરધર્મ ગણિભિઃ સ્વરતર ગચ્છૈ ।

મિર્જાપુર ।

પન્નાયતી મન્દિર ।

(426)

શ્રીપાર્શ્વનાથ વિંવ પર ।

સં. ૧૩૭૯ વર્ષે ઉપસજ્ઞાતીય વાવેલા ગોત્રે દેવાત્મજ સા. ઘીકા પુત્ર સંઘપતિ જ્ઞાજ્ઞા સુત સા.— જૂકેન પિતૃ શ્રેયસે કા. પ્રતિ. શ્રી કૃષ્ણર્ષિગચ્છે શ્રી પ્રસન્ન ચંદ્ર સૂરિભિઃ ॥

(427)

સં. ૧૪૨૦ વર્ષે વૈશાખ શુદિ ૧૦ શુક્રે શ્રી શ્રી માલજ્ઞાતીય ઠ. ઘીજા ખાર્યા મોહનદેવિ શ્રેયસે સુત જોલાકેન શ્રી પાર્શ્વનાથ વિંવ કારિતં પ્રતિષ્ઠિતં ત્રિભવીયા શ્રીધર્મદેવસૂરિ સંતાને શ્રીધર્મરત્ન સૂરિભિઃ ॥

(१०४)

(428)

सं० १४८२ व० वैशाख वदि १ प्र० झूलर गोत्र सा० लाहड भा० बाहिणदेपु० महिराज
जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री
मलयचद्र सूरिपट्टे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

(429)

सं० १४९० व० वैशाख वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तत्सुताभ्यां
स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विवं कारितं प्रति० श्रीहेम हस सूरिभिः ॥

(430)

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमेश्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जस-
मादे सुत रागा भीमा पीमाभिः आत्षेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विवं का० प्र०
श्री पोपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपट्टे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

(431)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवौ उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्ट सा० माडण भा० मोहणि
पु० कालहा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं
पूर्णिमापक्षे जयचन्द्र सूरिपट्टे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

(432)

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवौ उप० ज्ञातीय कठउड गोत्रे सा० वरसा भा० मालही
पु० रामा भाडा राजा चांदा भा० मरधू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्र-
प्रभस्वामि विवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे भ० श्री सोमकीर्ति सूरिभिः सद्रंछ-
लिया नगरे ।

(१०५)

(433)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय
लोढा गोत्रे गावं-ज्रा स० ऋषभदास भार्या रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संचाधिपे
स्वानुवर दुनोचंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर
सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विंव प्रतिष्ठापितं ॥

(434)

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंथुनाथ जिन विंव दू० विसनचंदेन कारितं प्रति-
ष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

(435)

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्रीपार्श्वनाथ वि० प्र० श्री पार्श्वनाथ वि० प्र० श्री जिनमहेन्द्र
सूरिण्युपदेशेन कारिता । सेठ उदयचन्द्र धर्म पत्नी महाकुमारिभिदया । वाचनाचार्य श्री
चारित्र नन्दन गणिभिर्देश---

(436)

सं० १८८७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ विंव प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० वोहरा
नाथूराम पत्नी साहवां नाम्न्यात्म श्रेयसे वाचक चारित्र नन्दन गण्युपदेशतः ॥

सेठधनसुखदासजी का मंदिर ।

(437)

सं० १८८३ वर्षे माह वदि १ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० नरपाल भार्या नयणादे
सुत देपाकेन श्रीपद्मप्रभ विंव कारितं प्रतिष्ठितं । -- गच्छे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥

(१०६)

(438)

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने वघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा० सीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महु पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ त्रिवं करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

(439)

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्श्वविं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं । छजलानी चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चौरडिया मनुलाल वधू - -

(440)

सं० १८९७ का० भु० ५ श्रीपार्श्वविं प्र० श्रीजिन महेन्द्रसूरिणा का० । सकल श्रीसंचै ।

देहलि बा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था । हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिसको छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़ेदादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

चेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्तिपर

(441)

सं० १९६३ मार्गशिर सुदि १ आं गागसादेव धम्मोयम्- -(आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता)

(१०७)

(442)

सं० १५१६ वर्षे जे० व० ११ शुक्रे सोमसर वासि उकेश सा० मेहा भा० मालहणदे पुत्र सधाकेन भा० सलही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं-- श्री कक्क सूरिभिः ॥ सचिंतीगोत्रे ॥

(443)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे लोढा गोत्रे सा० हरिचन्द गोगा गोरा संताने साधु आसपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परवत्त सांडादि युतेन भातृ पूनपाल पुण्यार्थं श्रीपाश्वर्नाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमहंस सूरि पट्टे भ० । श्रीहेम समुद्र सूरिभिः ॥

(444)

संवत् १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्री० कटाया भा० राउं सुत धुना भा० हमकू सुत चांपाकेन भा० धर्मिणि नामाणिकादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं नेमिनाथ विंव कारितं प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिभिः अहमदावादे ।

(445)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उकेश वंशे साधुशाखायां सा० पाचाभा० पालहणदे तोलही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० चेताकेन तोलही पुत्र भांभां जालहा रूपा चांपा चरमा युतेन सा० पोपा पुण्यार्थं श्री मुनि सुव्रत का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(446)

सं० १५३६ माघ शुदि ५ दिने प्राग्वाट ज्ञाति सा० काजा भा० सारु पुत्र सा० हापा केन भा० नाई प्रमुख कुटुंब युतेन श्री चन्द्रप्रभ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री ५ लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(૧૦૮)

(447)

સંવત ૧૫૬૦ વર્ષે જ્યેષ્ઠ વદિ ૪ દિને શ્રીમાલ વંશે સિંધુડ ગોત્રે ઘ. અમય રાજ ખાર્યા
આમલદે પુત્ર ચડ. ઠકુરસીહેન ખા. ઠકુરાદે પુત્ર ઘ. ખારમલ્લ પ્રમુખ પરિવૃત્તેન શ્રી
આદિ જિન વિવં કારિતં પ્રતિષ્ઠતં શ્રીચત્ર ગચ્છ શ્રી પૂજ્ય શ્રી જિનહંસ સૂરિભિઃ ।

(448)

સં. ૧૫૬૬ વર્ષે ફાગુણ સુદિ ૩ સોમે બ્રહ્માળીયા ગચ્છે બહુરા હીરા ખા. હીરાદે પુ.
જીદા સોમા રૂપા પુણ્યાર્થે શ્રી શાંતિનાથ વિવં કા. પ્રતિષ્ઠિતં શ્રી ગુણસુન્દર સૂરિભિઃ
અહિલાળી ।

(449)

॥ શ્રી પાર્શ્વનાથ સં. ૧૬૦૫ ફાગુણ સુદી દસમી ચરવડિયા ગોત્રે ગાગપત્ની ત્વર-
મિની પુત્ર પેતુ લઘુ પ્રનમલ ગુરુ શ્રી જિન ખદ્ર સૂરિ રુદ્રપલા ગચ્છે ખ. શ્રી ખાર્વાતલક
સૂરિભિઃ પ્રતિષ્ઠિતં શ્રી સમેત સિખર ।

(450)

સં. ૧૬૧૨ વર્ષે જ્યેષ્ઠ સુ. ૧૧ શનૌ ઉકેશવંસે----- ।

(451)

સં. ૧૬૬૦ વર્ષે ફાગુણ વદિ ૫ ગુરુવાસરે મહારાજાધિરાજ મહારાજા માનસિંઘ
જી રાજે શ્રી મૂલસંઘે આમ્નાયે વલાત્કાર ગણે સરસ્વતી ગચ્છે કુંદકુંદાચાર્યન્વયે ખ. શ્રી
વિર્ઘી કીર્તિ સ્તદામ્નાય ષંડેલવાલાન્વયે પોસ ॥ સં શ્રી હોલા ખા. કોસિગદે પુ. ખ. શ્રી
કચરાજ ખા. ઉમદે કોઉમદે ગુજરિ પુ. ૨ થાતુ દાનુ સં શ્રીરાયત ખા. રચનદે---પુ.
હરદાસ ---ખા. મહિમાદે લાઢમદે -- ।

(१०६)

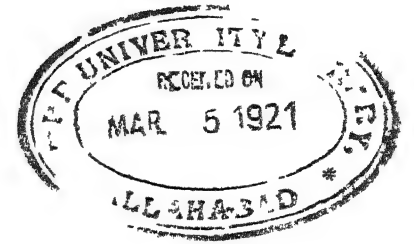
(452)

सं० १६७७ मार्ग शु०-रघौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व विंवा का०
प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(453)

सं० १६८१ व० फा० शु० १० भ० चंद्रकीर्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०
नीमा भा० सरूपादे ।

(454)



नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासरे- -सुश्रावक
पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥
श्रीमाल ज्ञातौ ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके विंवा पर ।

(455)

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरुता नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे सं० जय-
राव भा० सोभागदे पु० सं० ओहणकेन श्रीसुमतिनाथ विंवा का० प्र० तपागच्छे भ० श्री
विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तिः ।

(११०)

सर्व धातुयोंके मूर्तियों पर ।

(456)

आं । संवत् ११ ६७ वैशाख सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सत्तु श्री वि --- ।

(457)

संवत् १२८० वर्षे ---सांडा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३३१ अ० व० २ हल --- ।

459)

सं० १४३३ आषाढ शु०--प्रा० लघु व्य० आसा भा० ललतदे--श्री पार्श्वनाथ वि०
का० श्री गुणभद्र सूरिणामुपदेशेन ।

(460)

सं० १४४५ पौष शुदि १२ बुधे ज० औ० जोला भा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ
विं० कारापितं प्र० ज० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(461)

सं० १४५४ वर्षे भोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा भा० पाषी पुत्र लापाकेन स्वपुत्र
वीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विं० का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छ सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव
सुन्दर सूरिभिः ।

(१११)

(462)

सं० १४६३ वै० शु० १०- सा- - -

(463)

सं० १४७१ माघ शुदि १० रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय साः रामा भा०--ठाकुर पितृ
श्रेयर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी --- ।

(464)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ऊ० ज्ञा० सा० तिहुणा भा० तिहुणांसारपु० चाहड़
भा० केलहु पु० हापा भा० तेजू पु० करमोकेन पितृ--श्री पद्मप्रभ वि० का० प्र० श्री
संडेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः ॥

(465)

सं० १४७९ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० धरणा पुत्र संग्राम समरासिंध श्रावकः श्री
महावीर विंव पुण्यार्थं कारिते प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

(466)

सं० १४८२ वर्षे माह सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाडा पु० जयता भार्या सालही
पुत्र चोषाकेन पित्रो श्रेयर्थं श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्री धर्म घोष ग० श्री धर्म घोष
ठा० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री--देव सूरिभिः ।

(467)

सं० १४८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ऊ० ज्ञा० पालडेचा गोत्रे सा० टापर भा० तेजलदे
पु० अगडाकेन भा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य वि० का० प्र० श्री सुविप्रभ
सूरिभिः श्री वीरभद्र सूरि सहितेन ॥

(११२)

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा भा० रूपाई पु० कालू
पाचाभ्यां आ० अदा भा० आलहणदेविः श्री पद्मप्रभ त्व० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री
शांति सूरिभिः ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०-प्राग्वाट सा० साजण भा० लाषू पुत्र केलहाकेन भा० लह्मो
भ्रातृ भीम पदमदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर
सूरिभिः श्री-५ ।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराज भार्या सीधरही पुत्र
सा० मोहिल धण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा० श्री मुनि-
श्वर सूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसलदे
पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विंवं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य
सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(472)

सं० १५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर
भार्या रैनसिरि तट्टुत्र सोनिग भार्या बेमा प्रणमति ।

(११३)

(473)

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने उक्तेष वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जयतलदे
तत्पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलषा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र०
श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(474)

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्ले श्रवाणा गोत्रे उदा भार्या लावि पु० देवराजेन स्व
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पदमसिंह सूरिभिः ।

(475)

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने उक्तेष ज्ञातीय सा० चापा भा० चापलदे सुत गूंगच
केन भा० वापू सु० चाईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० तपगच्छेश श्री
जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः । कायषा ग्राम ।

(476)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वोडा भा० कुतिकदे
तयोः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० भादा भा० ऋवकूकेन आत्म
श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री शीलरत्न
सूरिभिः गीलीषा वास्तव्यः ।

(477)

सं० १५०७ वर्षे फा० सु०- सं० हमा पांयपुत्र सा० सारंग भार्या मचकु पुत्र नाथा
भाडादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर
सूरिभिः ।

(११४)

(478)

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गोरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ऊ० झा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा भा०
जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ वि० का० प्र० श्री संडे-
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरिणां पढे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः ॥

(480)

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ऊ० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० कालहा भार्या ऋवकू
सुत सा० रुपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री ष० ग० श्री
जिन सागर सूरि पढे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल झा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण
केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेय्यर्थं श्री धर्मनाथ विं० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय
प्रभ सूरिभिः काकरवास्तव्य ।

(482)

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्क दिने महतिआण सा० सुरपति भा० त्रिलोकादे
पुत्र्या सा० ग्यान जगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित विं० का० प्र०
श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपढे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(११५)

(483)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा भा० चन्हडा धर्मा कर्मा
हासा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत अदा बरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-
नाथ विंवं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेपर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ कमल मेरु ।

(484)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सीणुरा वासि प्रा० सा० राजा भा० स्या पूरि पु० तीपा-
केन भा० रानू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रह विंवं स्वश्रैयसे का० प्र० तपा श्री सोम
सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(485)

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरू गोत्रे सा० पासवीर भा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण
पुत्र देवा सब--युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ बहादुर पुरे ॥

(486)

सं० १५३४ वैशाख सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला सिरिपुत्र---

(487)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्ति स्व० भ० श्रीज्ञान भूषण गुरुपदेशात् ॥
स० प्रेतसी भा० भूवूः ।

(१९६)

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उक्ते वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या लषी पुत्र
देवण मांडण धर्मा आवकैः श्रे० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युतैः श्री
धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पहालंकार श्री जितचंद्र सूरिभिः ।

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवासि उ० व्य० महिराज भा० माणिकदे सु०
श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे । अदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र०
श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाख वदि ६ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमधर नोका पोमा
पागा पहिराज आढू लालला लेषसी पितरनिमित्त श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रति-
ष्ठितं तपागच्छे भट्टारक श्री सोमरतन सूरिभिः ॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे भ० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० स०
हंसराज हापु --- ।

(492)

संवत् १५५१ वर्षे वै० सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लाषा भार्या
सोहिणी पु० चांपा भाय पौत्र पुत्र पौतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ विंवं
का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मघोष गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(११७)

(493)

संवत् १५५३ वर्षे सिवनाग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वहकटा गोत्रे सा० जयस
कर्ण सुत सा० जिणदत्त पुत्र सो० सोनपाल सुश्रावकेण भा० गउराई लघु भ्रातृ रत्नपाल
पृथ्वीमल्ल सखी केण श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीस्वरत्तर गच्छे श्री जिन
चंद्र सूरि ण्हे श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

(494)

सं० १५५३ व० आ० सु० २ रवौ श्री श्रीमाली ज्ञातीय सा० सीधर भा० सोही सुत
सा० जूठा सा० संधा सा० भ--इ सा० पावाकै सा० जावड वचनेन श्री पार्श्वनाथ विंवं
का० प्र० मलधार गच्छे श्री सूरिभिः । सर्वेषां पूजनार्थं ॥

(495)

सं० १५५६ वैशाखवदि १३ श्री मूलसवे षंडेलवाल सा० देवा पुत्र परवत्त नित्यं प्रण-
मति गोधा गोत्रे ।

(496)

सं० १५५६ व० पोस वदि ४ दिने गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राजा भा० राजलदे
पु० पोमा भा० ऋमकू सु० श्रेयोर्थे श्री वासपूज्य विंवं का० प्र० महाहडीय गच्छे प्रतिष्ठितं
श्रीमति सुन्दर सूरिभिः दधालीया वास्तव्यः ।

(497)

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवौ श्री उकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग षौत्रे चोरवेडिया
शाषायां व० डालण पु० रत्नपालेन स० श्रावत्त व० घघुमल्ल युतेन मातृ पितृ श्री० श्री
संभवनाथ वि० का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य० श्री देव गुप्तसूरिभिः ॥

(११८)

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाख शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा भात्र मूजा भा०
विमलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंव कारापितं-श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री
लषराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू पु०
सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रीपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ विंव का० प्र० श्री
खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राभा० बुलदे पु० सा०
पसोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

(501)

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य
उ० श्री गुणप्रभ -- श्री आदि नाथ विंव का० प्रतिष्ठितं ।

(502)

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान भूषण
देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्ति देवास्तत्पदे महारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूँवइ
ज्ञातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईआ भार्या स्तिरिक्षमणि ।
सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंव कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

(૧૧૯)

(503)

સં૦ ૧૬૧૯ સિંઘુડ સા૦ ગોપી ભાર્યા વિમલા સુત ઘણરાજેન કારિતં ।

(504)

સં૦ ૧૬૪૩ વર્ષે ફાલ્ગુન સુ૦ ૧૧ ગુરુ પ્રા૦ જ્ઞા૦ સે વિધોગા ભાર્યા વાઈ પૂરાઈ સુત દેવચન્દ ભાર્યા વાઈ હાસી સુત રાયચન્દ ખીમા શ્રી શીતલનાથ વિંવં કારિતં પ્રતિષ્ઠિતં વૃહત્તપા ગચ્છે શ્રી વિજયદાન સૂરિતત્પદે શ્રી હીર વિજય સૂરિ આચાર્ય શ્રી વિજયસેન સૂરિ શ્રી પત્તન વાસ્તવ્યઃ ।

(505)

સં૦ ૧૭૦૦ ફા૦ સુ૦ ૧૨ શ્રી મૂલ સ૦ સ્વર૦ ગચ્છે વ૦ ગ૦ શ્રી કુંદકુંદાચાર્યાન્વયે સં૦ સાંઘલ । સાકાર-સાહમલ અ-જા । ગા--- ।

(506)

સં૦ ૧૭૦૧ વ૦ માર્ગ વ૦ ૧૧ દિને શ્રીમાલ જ્ઞાતી વાઈ ગૂજરદે સુત સ૦ હીરાણંદ ભા૦ સથરંગદે શ્રી પદ્મપ્રભ વિઃ કા૦ પ્રતિ, તપાગચ્છે શ્રી વિજયસિંહ સૂરિભિઃ આગરા વા૦

ચીરેલાનેકા મન્દિર ।

(507)

સં૦ ૧૪૮૯ વર્ષે પૌસ વદિ ૧૦ ગુરૌ શ્રી હુંવડ જ્ઞાતીય શ્રે૦ ઉદવસીહ ભાર્યા વર્દરાજ તયોઃ પુત્ર તથા દૌહીદા સુત દોગા--પત્ની વર્દ ચમક નામ્ન્યા આત્મ શ્રેયસે અજિતનાથ -- વિંવં કારાપિતં શ્રીવૃહત્તપા પક્ષે શ્રીરત્ન સિંહ-- ।

(१२०)

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २ -- ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं का०
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

(509)

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विवंका०
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या
पालहणदे सुन मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन मातृ
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी नागेन्द्र
गच्छे श्री गुण समुद्र सूररूपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया
वास्तव्यः । श्री ।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा० ललतु
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र षवू
लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

(१२१)

(513)

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ विं० प्रति० - ।

(514)

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसवाई नाम्न्या श्री पार्श्व वि० का० प्र० तप०
ग० श्री विजय देव सूरिभिः ।

(515)

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या -- पार्श्व वि० कारापित ।

(516)

सं० १८५२ पोस सु० ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द
गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद टोडरमल्लेन श्रेयोर्थं ।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर ।

(517)

सं० १२१४ आषाढ़ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या मना -- ।

(518)

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ --- सुहव भा० --- ।

(૧૨૨)

(519)

અ સંવત ૧૩૫૦ વર્ષે જ્યેષ્ઠ વદિ ૫ શ્રીષંકર ગચ્છે શ્રી યશોભદ્ર સૂરિ સંતાને । શ્રૃં જગધર
ભાર્યા જમતિ પુત્ર જ્ઞાંજ્ઞણ અરિ સિંહ લઘુભ્રાતા અરિસિંહેન જ્યેષ્ઠ ભ્રાતૃ જ્ઞાંજ્ઞણ શ્રેયસે
શ્રી અજિતનાથ વિંવં કારિતં । પ્રૃં શ્રી સુમતિ સૂરિભિઃ ॥

(520)

સંૃ ૧૪૬૯ માઘ સુૃ ૬ સાગરદાસ ભાર્યા નાલૂ -- ।

(521)

સંવત ૧૪૮૩ વર્ષે શ્રી શ્રોમાલ જ્ઞાતીય વહરા ધડલા ભાર્યા લલતા દેવિ સાર્વિલીદાસ
હીરાકેન ભાર્યા હીરા દેવિ સૃં સંઘ શ્રેયસે શ્રી શાંતિનાથ વિંવં કારિત પ્રતિષ્ઠિતં । નાર્ગેંદ્ર
ગચ્છે શ્રી રત્નપ્રભ સૂરિ પદે શ્રી સહ દત્ત સૂરિભિઃ શુભં ભવતુ ।

(522)

સંૃ ૧૪૮૯ વર્ષે માઘ વદિ ૧૧ બુધ શ્રી દેવીસિંગ સંઘવો શ્રેૃં કાવા ભાર્યા વિજી-
પરનાગડ પ્રણર્માત ।

(523)

સં ૧૬૬૧ વૃં ચૈૃ વદિ ૧૧ શુૃ સાૃ વદી યા કારિતં શ્રીપાર્શ્વ વિંવં પ્રતિષ્ઠિતં શ્રી
સ્વરતર ગચ્છે । શ્રી જિનચંદ્ર સૂરિભિઃ ॥

(524)

સંવત ૧૫૬૬ વર્ષે જ્યેષ્ઠ સુદિ ૭ શ્રી માલજ્ઞાતીય સિંધુડગોત્રે સાૃ ઘીલ્હરણ-પુૃ સાૃ
છેયતન શ્રી શ્રેયાંસનાથ વિંવં કારિતં પ્રૃં શ્રીજિનચંદ્ર સૂરિભિઃ ।

(१२३)

(526)

सं० १८३५ वर्षे माघ कृष्ण पंचमी भृगौ अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय
वृद्ध शाखायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या वाई रुक्मिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ
विंघ कारापितं भट्टारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा वीरुदे ।

छोटे दादाजी का मन्दिर ।

(527)

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे भट्टारक श्रीजिन कुशल सूरि पादुका
कारिता श्री स्याहजानाबाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च वृहद्भट्टारक खरतर
गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्वादस्याह अकवर स्याह विजय राज्ये शुभं
भूयात् ॥ संवत् १८०८ मितो चैत्र शुदि १२ सूर्यवारे श्रीजिन नंदि वट्टुन सूरिभिः विजय
सधर्म राज्ये श्री दिलिल नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या
राधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात् ॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक मति
कुमार तच्छिष्य हर्ष चंदोपदेशात् ॥

(528)

॥ संवत् १८२८ वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय धीधीद गोत्रे वखतावर
सिंघकस्य भार्या महताव वीवी श्रीशांतिनाथ विं० प्र० कारापितं प्रतिष्ठितं वृहत् खरतर
गच्छे श्रीजिन श्रीकल्याण सू० ।

(१२४)

(529)

श्री सं० १६७२ भि. माघ शुक्ल ६ शनिवासरं रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०
भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री
संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा
श्रिते भ० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुऐ ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग तत्पुत्र
रालहण थिरदेव मानृ सूहपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंव कारापिता ।

(531)

संवत् १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवल
दे पुत्र रेडा भा० होमादे पुत्र सुहडा भा० सुहडादे पु० ससारचंद । सामंत सोभा स० श्री
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

(१२५)

(532)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो
सुता श्रे० व्यधा वीधा विरा भार्या षीमा पूना भगिनी हरष् एतेषां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

(533)

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहू पु० रानपाल
भा० कपूरी पुत्र - हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं०
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

(534)

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ६ रवौ ऊ० आर्डचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र
दसूरकेन आत्मश्रेयसे सितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

(535)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा०
हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे
श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(536)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे०
सारग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुनगाईया गुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या
श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा श्री उदय बल्लभ सूरिभिः ॥

(१२६)

(537)

संवत् १५२५ वर्ष चैत्र वदि ९ शनी प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० सोमा भा० सृहूला सुत
सिवा भार्या सोभागिणि सुन् पद्मा भार्या पहती श्री सुविधिनाथ विंव का० सद्गुरूप
देशेन विधिना प्र० विंव-----छ ॥

(538)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० बईजा स्वसाकला
नाम्न्या श्री नेमिनाथ विंव कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

(539)

सं० १५२८ माह व० ५ बुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीका
भार्या वील्हणदे पुत्रैः साह कोहा केलहा मोकलाख्यैः स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंव का०
श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र० ।

(540)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ बुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या
वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपार्इ सुत ठ० जसायुतेन श्री आर्दनाथ विंव कारितं स्व
श्रेयोर्थ श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरीणा
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

(541)

सं० १६०३ वर्ष आषाढ वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे
पुत्र मानसिंध भा० धेतसी युतेन स्वश्र यसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ०
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१२७)

(542)

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उसवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० भयरव
भा० भस्मादे पुत्र मे० सुरताणारुयेन श्री सुविधिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे भ०
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(543)

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेडता नागर वास्तव्य उसभ गोत्रको० जयता
भार्या जसदे पुत्र की० दीपा धनाकेन श्रीपार्श्व वि० का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजय
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू- - ।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

(544)

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० धन्वन्त सुत जैमल श्रेपोर्थे- - कारितः ॥

(545)

सं० १३७९ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कथा भार्या- - - पुत्र मालह
श्री शान्तिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(546)

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाट - - - स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विं० का० श्री सोम
सुंदर सूरिभिः ।

(१३८)

(547)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख सु० ३ रवौ रहूराली (१) गोत्रे सा० बीजल भार्या विजय श्री
पु० रावा-----श्रेयोर्थे श्री अजितनाथ वि० प्र० श्री धम-----श्रीपद्म शेषर सूरिभिः ।

(548)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जीलहा
केन निज पित्रोः श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ वि० कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम
हंस सूरिभिः ।

(549)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनौ श्री षंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया
गोत्रे सा० महूण पु० षोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लषी पु० करमा नालहा सहितेन
स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत वि० का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(550)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनौ उकेश ज्ञातौ तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू
भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्री विमलनाथ
वि० का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(551)

सं० १४९० वै० सु० शनौ श्री मूलसंघे नंदिसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री
कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवाः तत्पद्मे श्री सकल कीर्त्ति देवाः । उत्तरे

(१२९)

अख्योभि (१) हं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आज्ञाकेन भा० मधूसुतविरुआ
भातृ वीजा भा० वान् सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः
तंच सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

(552)

सं० १४६२ वर्षे मार्गशिर वदी ४ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव
राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंव
कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

(553)

सं० १४६६ माघ सु० ५ प्राग्वाट वय० धीरा धीरलदे पुत्र्या वय० भीमा भावल दे
सुतवय० वेला पत्न्या वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंव का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर
सूरिभिः ॥श्री॥

(554)

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सं० रामा मातृ
शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ विंव कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री
साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संचेन गोरईया वास्तव्य ॥

(555)

॥ १५१६ आषाढ सु० ५ ओष्ठे गोत्रे तीवा भार्या रूपा पु० तोल्हा तेजा -----
पद्मावति प्रणमति ।

(१३०)

(556)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे ब्रह्मरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणो पु०
नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा
पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पढे श्री जिनचंद्र
सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्री० डउढा भा० हरष सु० श्री० नागा भा०
आजी सुत श्री० जिनदासेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ विवं आगम मच्छे श्रीदेवरत्न सूरि
गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठित ।

(558)

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे
सा० सोमा भा० धनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति
नाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकृष्ण सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पल्लवउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा०
बेलहा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विवं कारितं ।
वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पढे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(१३१)

(560)

सं० १५२४ आषाढ़ शु० १० शुक्रे उक्केश वंशे--भा० सपूरा पु० जेसाकेन भा० धर्मि-
णि पु० माईआ पौत्र इसा बोसालादि कुटुंब युतेन पु० माइया श्रेयसे श्री नमि विंव का०
प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(561)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवाणि स० गो-
ला भा० कर्मी पु० नरबदेन श्री श्रेयांसनाथ विंव कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु
सुंदर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा ।

(562)

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उक्केशवंश भ० गोत्रे ला० नीवा भार्या पूजी
सा० पूना श्रावकेण भातृ सजेहण मा० अवा परिवार युतेन श्री संभवनाथ विंव कारितं
प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(563)

संवत् १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देपू पुः मेरा
भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंव प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(१३२)

(564)

॥ संवत १५५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र मा०
षीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंव का० प्र० श्रीसंडेरग
गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः ।

(565)

सं० १५५८ (?) वर्षे आषाढ सु० १० सूरणा गोत्रे स० शिवराज भा० सोतादे पुत्र स०
हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पूजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं प्र० श्रीधर्म
घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पहे नंदिवर्द्धन सूरिभिः ।

(566)

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन
भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रोपदी पौ० कसा पीचा
आवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंव कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-
गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा० - - - तत्पु० पहराज तत्पुत्र
राठा- - - त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंव का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजन-
चन्द्र सूरिभिः ।

(१३३)

(568)

संवत् १५७६ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र
रत्न मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृत्तेन श्री पार्श्वनाथ
त्रिवं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे ।

(569)

स० १६०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर पूर्यां श्री चतुर्विंशति
जिनमातृका पट्ट लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर
जंगमयुगप्रधान म० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये ।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें ।

(570)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले बड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण
भार्या तारु पुत्र सा० लषाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ
त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पं० पुण्यनन्दन
गणीनामुपदेशेन ।

(१३४)

जयपूर ।

याति श्यामलालजी के पासकी मूर्तियों पर

(571)

सं० १३ -- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासच श्रीलाड बागड (?) गण श्रीमन् --
मुरुपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० बाहड भार्या लाछि सुत पीमा भार्या राजलदेधि श्रीयोथं
सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति ।

(572)

सं० १४३६ वर्षे पौष ६ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० -- -- माथलदे पु० सामलेन
श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे । ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा०
धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ
विंवं कारितं श्रीम० तपागच्छे -- -- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्री० धर्मा भा०
धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति
पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहस सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(१३५)

याति किसनचन्दजी के पासकी मूर्तियों पर ।

(575)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे वटदेव पुत्र विसल पुत्र लक्ष्मणेन मातृ वीती
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विवं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

(576)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ६ शनौ श्री---गच्छे--- जलहर गोत्रे सा० लुणा भा० लुणादे
पुत्र पविन पालहा सानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विवं कारि० प्र० ---।

(577)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या सासु
पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विवं कारितं श्री पल्लि गच्छे ---- ।

(578)

संवत् १५०८ वर्षे जेष्ठ वंसे सा० हजडा भार्या आल्णादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल
गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विवं कारितं ।

(579)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीआ गोत्रे सा० वादी भ० षोमाह सु० तिउण
श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रीवंत साजण प्र० कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ विवं कारितं रोद्रपल्लिय
गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पद्मे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिभिः ।

(३३६)

(580)

संवत् १५५६ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन
भा० हीरादे पुत्र पुना धूनार्द कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंव का० प्र०
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

(581)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्ण्या श्री नमिनाथ विंव
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(582)

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ---हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ
विं० गृहीत व० ट० श्रीतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

जोधपुर ।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

धातुओंके मूर्तिपर ।

(583)

सं० १४५६ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सषदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन
पितृ श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंव कारित प्रतिष्ठित श्री जिनराज सूरिभिः ।

(३३७)

(584)

सं० १४८० वर्षे वैशाख सु० ३ धांधगोत्रे सा० मोल्हा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण
भार्या सिरियादे श्रेयसे श्रीआदिनाथ विवं कारितं प्र० श्रीविद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(585)

सं० १५०१ प्रा० झा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादियुतेन
श्री अजितनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(586)

सं० १५०३ आषा० सु० ६ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराज भा० सीता पु० षीद
भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विवं कारापितं श्री - - र्षि गच्छे
श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

(587)

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती झंडारी गोत्रे सा० सोमाभा० सोम श्रीपुत्र हीरा
केन आत्म० श्री श्रेयांस विवं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पट्टे श्री
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

(588)

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरौ उप० झा० म० नूणा भा० माणिकदे पु० सांडा भा०
वाल्हणदे पुत्र पेतसि वास० प्रा० मा० श्र० श्री सुमतिनाथ विवं का० प्र० ब्रह्माणीया ग०
श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।

(૩૩૮)

(589)

સં. ૧૫૨૨ વર્ષે વૈશાખ સુ. ૩ નના જ્ઞા.શ્રે. જઙ્ઘતા ખા. ષરિ પુત્ર ગેલા ખા. વાલી નામ્ન્યા પુત્ર અમરસી ખા. તિલૂ સજન કવેલા માતૃદૂસી જ્યેષ્ઠમાલા પ્રમુખ કુટુંબ યુતયા સ્વ શ્રેયોર્થે શ્રી વિમલનાથ વિવં કા. પ્ર. તપા શ્રી લક્ષ્મીસાગર સૂરિભિઃ ॥ શ્રી ॥

(590)

સં. ૧૫૨૪ વૈ. શુ. ૩ શ્રી મૂલસંઘે સરસ્વતી ગચ્છે શ્રીકુંદકુંદાચાર્ય મ. પદ્માનંદિ સત્પ. મ. શ્રીસકલ કીર્તિ સત્પ. મ. શ્રી વિમલ કીર્ત્યા શ્રી શાંતિનાથ વિવં પ્રતિષ્ઠિતં । શ્રી જે સંગ ખા. મરગાદે સુ. તેજા ટમકૂ સુ. સિવદાય ।

(591)

સં. ૧૫૨૭ વર્ષે માહ સુ. ૯ બુધે શ્રી - - - ગોત્રે સા. ખાદા ખા. સાવલદે પુ. મેલાકેન ખા. માલૂણદે પુત્ર વીંખા કાન્હા રૂપાદિ યુતેન સ્વ શ્રેયસે શ્રી આદિનાથ વિવં કારિતં પ્રતિષ્ઠિતં જિનદેવ સૂરિ પદે શ્રીમત્ શ્રી ભાવદેવ સૂરિઃ ।

(592)

સં. ૧૫૩૨ વર્ષે વૈશાખ વદિ ૫ રવૌ ઉપ. જ્ઞા. ગો. ઉરજળ ખા. રાડં સુ. ખીદા ખા. ખાવલદે સુ. ગારગા વરજા યુતેન આત્મ. શ્રી સુમતિનાથ વિવં કા. પ્ર. શ્રી જીરાપલીય ગચ્છે શ્રી ઉદયચન્દ્ર સૂરિ પદે શ્રીસાગર નાંદ સૂરિભિઃ શુભં ભવતુ

(593)

સં. ૧૫૩૫ શ્રી મૂલસંઘે મ. શ્રી ભુવન કીર્તિ સ્ત. મ. શ્રી જ્ઞાન ભૂષણ ગુરૂપદેશે--

(१३९)

(594)

सं० १५५४ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ वुध वासरे साइ चांपा भार्या मेथू डुंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोली वाल गच्छे भट्टारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(595)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरौ प्रग्वाट ज्ञा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदो
--- पु० धना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंव का० प्र० पूर्णिमाक गच्छे
---सागर सूरि--- ।

(596)

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरौ उप० भडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिगदे पु० तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० बीकलदे पु० नाम्ना डामर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्री सुमतिनाथ विंव कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः ।

(597)

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवौ श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या धम्मार्ई सुत बीसा सूरा भार्या लाठी द्वि० भार्या अरघाई धर्म श्रेयसे श्री शीतलनाथ विंव प्रति० सिद्धांती गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र० ।

(598)

॥ ॐ संवत् १५६५ वर्षे वैशाख वदि १३ रवौ ढेढीया ग्रामे श्री उएसवंशे सं० षीदा भार्या धरणू पुत्र सं० तोला सुश्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० लषमण भ्रातृ

(१४०)

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थे श्री अंचल गच्छेश श्री भावसागर सूरीणा
मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन ।

(569)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिग
पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा०
हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिषभदास भार्या अमरादे सुत
अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण
सागर सूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः ॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन-भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद
करापितं ।

देविजीके मूर्तिपर ।

(४ भूजा + सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे बीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत
घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थे देवी वेङ्करुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं ।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवीर पु० सा० सूरार
भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल श्रा० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं
श्री शान्तिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(१४१)

(603)

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशापीय पोसालेवा गोत्रे
सा० पीमा भा० अधी-पु० सा० श्रीवंत भा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपा-
श्वरनाथ विंवं का० श्री कोरट गच्छे श्रीकक्क सूरिभिः ॥ श्री ॥

(604)

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उकेश वंशे व्य० परवत्त भा० फदकु
तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान कर्मा निज
- - - परिवार श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय ज०
श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति जद्रं ।

(605)

ॐ संवत् १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य सोनी मनजी भार्या
मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारा-
पितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरेश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक ।

(606)

ॐ ॥ संवत् १२३९ द्विः वैशाख सुदि ६ शुक्रे पत्न्यपद्र वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे ज०
श्री देवाचार्य सत्क श्री नवत्सार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सुलवणायाः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धि सागराचार्यैः ॥

(१४२)

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूणदे पुत्र रेडा भार्या
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं का० प्रति०
श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन
पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा भी मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंवं
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमल कीर्ति -- धर्मनाथ विंवं
प्र० वाई तपदे जा० कालहा -- ।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुर्कट शाखायां वयै० तोला भा०
षेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीलहादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा०
विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः ।

(१४३)

(612)

सं० १८९३ ना मा । सु० १० वु० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय बृद्ध
शाखायां संघ माणक चंद तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापोतं ।

(613)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । भट्टारकीयेन सुयंत्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किल
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदर्थं सिद्धैः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाष्ट भूमिते ।
अव्दे वैशाखमासस्य तृत्तियायां सिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर ।

(614)

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० व्य० काला भा० कालहणदे सु० -- पद्म
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र० ।

(615)

सं० १४४१ वर्षे वैशाख यदि १२ दिने नाहरवंशलंकारेण सा० घड़सिंह पुत्रेण भ्रातृ
सा० सलकेन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः
श्री खरंतर गच्छेशः ॥

(१४४)

(616)

सं० १४६६ वर्षे फागुण वदि २ गुरी श्री तावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जैसा भा० जस-
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्तिका
चार्य सं० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उके० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्रेयसे
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः
श्री पद्म प्रभ विंव ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वढतप श्री घन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

(619)

सं० १४६३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वीलहणदे पुत्र
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंव का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे दोसी-धर्माकस्य पुण्यार्थे दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः
श्री श्रेयांस विंव प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(१४५)

(621)

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० श्रीमसी सा-
पाभ्यां भा० मदीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विं०
का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

(622)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरौ उपकेश वंशे जारंडडा गोत्रे सा० विमपालात्मज
सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि विं०
का० प्र० तपा भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

(623)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आहतणा (आईचणा ?) गोत्रे सा० धना भा० रूपी
पु० मोकल भा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकल श्रेयसे श्री संभवनाथ विं० का०
उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

(624)

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दशरथ भा० सामिनी सुत माना
केन भा० राना भातृसाल् भा० सोढी कुटुंबयुतेन स्वश्रेयार्थं श्री शांतिनाथ विं० का०
प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः नलुरीया गोत्रः ॥

(625)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातो आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा
पु० जासी-भा० जयसिरि पु० सायर भा० मेहिणि नाम्न्या पु० गुणा पूता, सहज सहितया

(१४६)

स्वपुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० उपकेश ग० कुक्कदाचार्य स० श्री देव गुप्त
सूरिभिः ।

(626)

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरौ उ० विदाणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु०
रामा० रूपा स० पि० श्री कुंथनाथ विंवं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः
श्रेयात् ॥

दिनाजपूर ।

श्री मूलनायकजीके विंवं पर ।

(627)

--- सु० ४ श्रीचन्द्र प्रभ जिन विंवं संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र
सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपुरे ।

धातुके मूर्तियों पर ।

(628)

संवत् १४४७ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे श्री अंचल गच्छे श्रीमेरुतुंग सूरिणामुपदेशेन
शानापति ज्ञातीय मारू ठ० हरिपाल पत्नि सूरव सुत मा० देपालेन श्री महावीर विंवं
कारितं । प्रतिष्ठितं च श्री सूरिभिः ॥

(629)

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्री० अर्जन भा०
मंदोअरि पितृ मातृ श्रेयसे सुत गोईदेन भा० मारू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंथनाथ

(१४७)

विंवं कारितं पूर्णिमा पक्षे भोमपल्लीय भट्टारक श्रीजयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं
॥ श्रीः ॥ छ ॥

(630)

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्री० भरमा भार्या भरमादे
पुत्रे आसा भार्या वर्डरामति नाम्न्या स्वभर्त पण्यार्थं आत्म श्रेयोर्थं श्री जीवित
स्वामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मसागर सूरिभिः ।

(631)

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूलसंचे भ० श्री सुमति कीर्त्ति गुरुपदेशात् का०
जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास हरिदास अनंतनाथ नित्यं प्रणमति ।

(632)

सं० १८४४ रा मित्ती अषाढ सुदी १३ श्री नेमनाथजी वि० ॥ छ ॥

दादजी के चरण पर ।

(633)

सं० १८४८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथी बुधवारे । भ । श्रीजिनचंद्र सूरिभि प्रतिष्ठित ॥
भ । श्री जिनकुशल सूरिजो पादुका ॥ भ । श्री जिनदत्त सूरिजीरा पादुका ।

(१४८)

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपूरसे २० कोस पर है रत्नभदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्ति स्थामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहवोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर ।

(635)

सं० १५१६ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्री० पोमा भा० पोमी सु० जावलकेन भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवका० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर ।

(636)

श्री कायासवास वासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि--
विक्रमादित्य संवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ बुध दिने चादी नाधुराल---

(637)

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्य विक्रमादित्य संवत् १५७२ वैशाख सुदि ५ वार सोम-
वार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनवाई चीजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ
नाथ प्रणम्य कड़ीआ फीईआ भार्या भरमी तस्या पवेई सा० भार्या हासलदे तस्य पग-
कारादेव रारगाय म्रात वेणीदास भार्या लास्टी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल
श्री काष्ठा संघ----- श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुष श्री तां-री कुल --- ।

(१४९)

(638)

संवत् १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे बृहत्खरतर गच्छै श्रीजिन भक्ति
सूरि पहालंकार भट्टारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः । -- श्री राम विजयादी प्रमुख
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी - - ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

(639)

संवत् १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

(640)

संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे
श्री कुं -- ।

(641)

संवत् १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ भृगुवासरे श्री मूलसंघ काष्ठासंघ भट्टा-
रक श्री रामसेनीन्वये तदाम्नाये भ० श्री विश्व भूषण भ० यशः कीर्ति भ० श्री चिन्मवन
कीर्ति - - ।

(642)

संवत् १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री
श्री कुंदकुदाचार्यन्वये भट्टारक श्री सकल कीर्ति स्तदन्तर भट्टारक श्री दामकीर्ति - - ।

(१५०)

(643)

संवत् १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे महारक श्री विजय
रत्न केशवर तपागच्छे काष्ठासंधे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र
जी तस्यभार्या वाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री सातु
जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं ।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्त्या पद्मावत्याः पदाम्बुजं । प्रशस्तिलिलख्यते पुण्या कवि-
केशर कीर्त्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः । वामांग मानस विकासन
राजहसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति । धुलेव मंडनकरा करुणा समुद्रः ॥ २ ॥
श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये । प्राज्यो गुणैर्जात ईहालथोयं ॥ आपुष्पदत्त स्थिर-
तामुपैतु । संपश्यतां सर्वसुखप्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा । सुरमन्दिरकारक सुखद सुमतिचंद महासाधः । तपे गच्छमे तप जप तणो
उयत्त उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुह्वी परगट कीधः । खेमतणो मनषा
तिसु लाहो भवनो लोध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद । उच्छव किधा
अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिल सुखगोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास । सारे ही
प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम
राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त । सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंदहः । रंघ मनुष्य सिरदार सहस
किरण सुषके कंदहः ॥ वल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म धुरंधरः । मुलचंद गुण मूलहीर
धोया उरगुणहरः ॥ सकलसंघ सानिधकरः सुमतिचंद महासाधः । पास सदन कियो प्रगट

निश्चल रहो निरबाधः ॥ ६ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविलं
लितावै संघेन सत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीधो
गुणहेर । रच्योविंव जिनराजको करुणा वंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या । शशीव सुखराज वर्षे ।
माधव मासे वलक्ष पक्षे च । पचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-
गिरि महा सूर्य शशिशेष शिवादयः । जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंवकं ॥ १३ ॥

श्रीसंवत् १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ
पार्श्वनाथ विंव प्रतिष्ठितं बृहत्तपा गच्छीय सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

(645)

स्वस्ति श्री संवत् १८७३ वर्षे शाके १७३६ वर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-
मासे शुभे शुक्र पक्षे चतुर्दशि तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार
गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक साह
श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक सिवलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम
ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भट्ट रक शिरोमणि भट्टारक श्री श्री
विजय जिनेन्द्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री धुलेवानगरे ॥ भडारी दुलिचद
आगुंछइ ॥

दादाजी के चरण पर ।

(646)

संवत् १८१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री धुलेवानगरे श्री क्षेम
कीर्त्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजीगणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद्र

(१५२)

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सत्गुरुचरण कमलानि कारितानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानि च वर्त्तमान श्री वृहत्स्वरत्न गच्छ भट्टारकाज्ञया च श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिन कुशल सूरिणां चरणन्यासः ।

पालिताना ।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठियावाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है ।

भोती सुखियाजीका मन्दिर ।

(647)

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा भा० सेगू सुत परवतेन भा० मांई कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्री श्रेयांस नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥ गणवाडा वास्तव्यः ।

(648)

संवत् १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उक्केश वंशे गांधो गोत्रे अंविका भक्त । सा० छाजू सुत सेंधा पुत्र सूरु भा० मेथाई सु० साऊया भा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

(649)

संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० चहिता भा० लाली पु० व्य० नारद भार्या नारिग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुख

(१५३)

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थे । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठित तपागच्छे
श्री सुमतिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छ नायक श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ श्री ॥

सिद्धचक्र पट्ट पर ।

(650)

संवत् १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्रीस्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय म०
वच्छाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः ।

सेठ नरसी केशवजकि मन्दिर ।

(651)

संवत् १६१४ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी देवा भार्या देमति सुत
दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुधजी नाम्न्या पितु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विव कारा-
पितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य पं० धर्मविजय गणिना प्रति-
ष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

(652)

संवत् १८२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ शुदि ७ तिथौ गुरुवासरे श्रीमदचल
गच्छे पूज भट्टारक श्री रतन सागर सूरिश्वराणामुपदेशात् श्री कच्छदेसे कोठारा नगरे
ओशवंशे लघुशाषायां गांधिमोती गोत्रे सा० नायकमणजी सा० नाक नणसीं तस भार्या
हीरवाई तत्सुत सेठ केशवजी तस भार्या पावी वाई (तत्पुत्र नरसी भाई नाना मना)
पचतीर्थी जिनविंव भरापितं (अंजन शलाका करापितं) अठास गण ।

(१५४)

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय वय० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । वय० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतै सात्म श्रेयोर्थ आदिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १६२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्वार्या पूरवाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ।

(655)

सं० १६२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज भट्टारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्वार्या देमतवाई तत्पुत्र सा० अभयचदेन पुन्यार्थे शांतिनाथ विंव कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

(656)

संवत् १६६३ वर्षे वैशाख सुदि ६ गुरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या वाई अजाई

(१५५)

सुत सोनी वमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई शीति एतेन श्री विजयनाथस्य विवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

(657)

सं० १३८३ वैशाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कीलहण देवि श्रेयसे सुत कीकमेन श्री महावीर विवं कारित प्रति०

(658)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं । आसो सुतेन देवाकेन स्ववांधव सहजा हरिचन्द पत्नि षेता - श्रीयो निमित्तं श्री विमलनाथ विवं कारापित प्र० श्री हेम हंस सूरिभिः ।

(659)

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडीआ सा० साईआ भार्या सिरि-आदे पुत्र सा० भोला सा सुश्रावकेण भार्या कन्हवाई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पद्य राज भ्रातृव्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन श्री विधिपक्ष गच्छपति श्री जयकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयर्थं श्री सुविधिनाथ विवं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ आ-चन्द्रार्क विजयतां ॥

(660)

सं० १५१५ वर्षे माह शुदि ५ शनी प्राग्वाट ज्ञा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया हांसलदे सु० मूल भा० अरषू सु० भोजा हासा राजा भा० भकू सु० हीरामाणिक हरदास

(१५६)

युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री
श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ शनौ प्रा० सा० काला भा० मालहणदे पुत्र सं० अर्जुनेन
भा० देऊ भ्रातृ सं० भीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु
पूज्य विंव का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपट्टे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

संवत् १५२८ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ श्री उकेश वंशे सा० चाचा भा० मायारि सुत
राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंव कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष
सूरिभिः ।

(663)

सं० १५२९ वर्षे फा० वदि ३ सोमे सं० वाछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवदे
पुत्र वसुपालादि युतेन भा० सपूरो श्रेयोर्थं श्रीमुनि सुव्रतनाथ विंव कारितं प्र० तपा
गच्छेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(664)

संवत् १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्री० देवा भा० पाचू पु० श्री० हापा
भा० पुहती पु० श्री० महिराज सुश्रावकेण भा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री अंचल
गच्छेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंव कारितं प्र० श्री संघेन ।

(१५७)

(665)

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशरसूरिणामुपदेशेन
उपशवंशे स० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्या युतेन स्वश्रेय
से श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं सु--- ।

(666)

संवत् १५३६ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्रीश्री वंशे ॥ श्री० गुणीया भार्या तेजू पुत्र
अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश
श्रीजय केशरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य विंवं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(667)

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत
देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक
गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरिणां पट्टै श्रीश्री कक्कसूरिभिः कालू - र ग्रामे ॥

(668)

सं० १५८३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति मं० वानर भा० रही पु० म० नाकर
मं० भाजी म० ना० भा० हर्षादे पु० पद्य वनु भोजा भार्या भवलादे एव कुटुंब सहितै
स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ विंवं कारितं प्रति० विवदणीक ग० भ० श्री देव गुप्त सूरिभिः ।
भारठा ग्रामे ।

(669)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृद्ध सा० जसमाल
सुत सा० राजपालेन भा० वाह पूराई प्रमुख कुटुंब युतेन श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र०
तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१५८)

(670)

सं० १६६४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय बृद्ध शाषायां
सा० राजपाल तद्वार्या वा० पूराई सुत सा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विवं प्र० तपा
गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ।

याति कर्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर ।

(671)

संवत् १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्रे० वना भार्या वनादे
सुत श्रे० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांडादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ
विंव का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनक्ष सूरिपहे श्री उजोयण सूरिभिः ।

(672)

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ पीहरेचा गोत्रे सा-गोवल पु०
सा--भा० धारुपु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड । भा० चड --- पितुः श्रे०
श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्री कुक्कुदाचार्य सताने ॥

गांव मन्दिर बड़ा ।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाल वंशे वय० जीदा १ पुत्र वय० जेता-
णंद २ पु० वय० आसपाल ३ पु० वय० अभयपाल ४ पु० वय० वांका ५ पु० वय० श्री वाउडि ६
पु० वय० अणंत ७ पु० वय० सरजा ८ पु० वय० धीचा ९ पु० वय० राजा १० पु० वय० देपाल ११

(१५६)

पु० वसुनाना १२ पु० वय० राम १३ पुत्र वय० भीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर
सुश्रावकेण भा० गउरी पु० भूभव पौत्र लाडण वरदे भातृ समधरीसायर भातृ वयसगरा
करणसी- सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय
केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री
भवंतु ॥

(674)

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञा-
तीय दो० भोटा भा० रत्तु पु० वीरा भा० वानू पु० लषा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन
श्री शांतिनाथ विंव स्वश्रेयोर्थं कारितं श्रीसघ प्रतिष्ठितं ॥

(675)

सं० १५४८ वर्षे कातिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय घामी गोवल भा० आपू
सु० वावा भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ स्वामि वि० का० प्र० चैत्रगच्छे
श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

(676)

सं० १५४९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह भावड भा० भरमादे
आत्मश्रेयोर्थं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंव कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उसवाल
गच्छे श्रीकक्क सूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(677)

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत
दो० भरणा भार्या कूयटि सुत दोसी बहु भार्या बलहादे तेन आत्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

(१६०)

संभवनाथस्य चतुर्विंशति पट्टः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्रीगुणरत्न सूरि पट्टे
आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

(678)

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवौ उ० टप गोत्रे---क सा० नरपाल भा० रंगार्ई पु०
महिराज सोहराज धनराज श्री महिराज भार्या धनादे पु० धनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री
पार्श्वनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री
शांति सूरिभिः ।

(679)

सं० १६२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंवं प्र० सा० जीवा अषाजी - - - - ।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर ।

(680)

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे
भट्टारक श्रीविद्यानंदि गुरुपदेशात् ब्रह्मपदमाकर कारापिता ।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकोमें पञ्चतीर्थीयों पर ।

साकरचंद प्रेमचन्द टोक ।

(681)

सं० १५०८ वर्षे मार्गशोर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड़ गोत्रे सा० भूना भार्या मोलही
एतयोः पुत्रेण भा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री बृहद् गच्छे
श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

(१६१)

प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक ।

(682)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ वुधे आसापद आ (?) श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मेघा
सुत सा० कर्मण भार्या कर्मादे पुत्र व्य० समधर भार्या वर्डजू पुत्र व्य० सहिता व्य०
सहिता व्य० सिंहदत्त व्य० श्री पति आत्म श्रेयसे सा० सहिसाकेन भार्या अमरादे ----
युतेन श्री आदिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितरच वृद्धतपा पक्षे श्री श्री उदय सागर
सूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रेमचन्द मोदी टोंक ।

(683)

सं० १३६८ वर्षे श्रे० जगधर भार्या दमल पुत्र तीकतेन भार्या सहजल सहितेन - श्रेयसे
श्री शांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणचद्र सूरि शिष्यैः श्री घर्मदेव सूरिभिः ।

(684)

सं० १३७८ प्राग्वाट ज्ञातीय ठं० वयजलदेव पुत्रिकाया वाएल - - मलधारि श्री
पद्मदेव सूरि --- श्री तिलक सूरिभिः ।

(685)

सं० १८८१ वर्षे चैत्र सुदि ६ वार रवि दिने श्री वृद्धपोसल गच्छे - श्री माली वृद्ध शा-
खायां सा० माणकचंद कुवेरसा -- भार्या वाई डाहीकेन श्रीसुमतिनाथजी विंव भरापितः
श्रीआणंद सोम सूरिजी प्रतिष्ठितं सुख श्रेयस्तु ।

(१६२)

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ --- विं० का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्थं
श्रीमहावीर विं० का० प्र०----- श्रीसालिभद्र (?) सूरि श्रीमणिभद्रसूरिभिः ।

(688)

सं० १३८७ --- श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ धणसोह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत
सादाकेन श्री अजितनाथ विं० पंचतीर्थी का० प्र० श्रीनागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नप्रभ
सूरिभिः ॥ छ ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० - - - श्रेयसे सुत भादाकेन श्री
आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरिणामुपदेशेन ।

(691)

सं० १४८६ वर्षे -- श्रीमाल - - आदिनाथ विं० प्र० श्री नरसिंह सूरिणामुपदेशेन ।

(१६३)

(692)

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ६ रवौ उसवाल ज्ञा० म० पूना भा० मेलादे सु० बीजल भा०
डाही तयो श्रेयसे भातृ आसुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विं० का० पूर्णिमापक्षे भीम
पल्लीय महा० श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेसेन प्रतिष्ठितं ॥

(693)

सं १५१६ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा भा० नाऊ सुत जूठाकेन
पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विं० का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सूरि पद्वे
श्री वीर सूरिभिः ॥ बलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

(694)

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्रि रा० पुजा का ---- श्री नमिनाथ विं० श्री
विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(695)

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुमतिनाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रज्ञ सूरिभिः
पिप्पलगच्छे ।

सेठ वाल्हा भाई टोंक ।

(696)

संवत् १५२५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे
श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पदे भ० श्री सकल कीर्ति देवा तत्पदे

(१६४)

भ० श्री विमलेंद्र कीर्ति गुरुपदेशात् श्री शांतिनाथ हूँवड़ ज्ञातीय सा० नाटू भा० ऊँमल
सु० सा० काह्ला भा० रामति सु० लषराज भा० अजो भ्रा० जेसंग भा० जसमादे भ्रा०
गांगेज भा० पदमा सु० श्री राजसचवीर नित्य प्रणमंति श्रीः ।

(697)

संवत् १६२८ वर्षे वै० बु० १० बुधे श्रीमालज्ञातीय महषेता भा० हासी सुत मूलजी
भा० अहिवदे केन श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री होर विजय सूरिभिः प्रति-
ष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक ।

(698)

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० कापा भार्या हासलदे पुत्र क्काक्कणेन भार्या
नागलदे पुत्र मुकुंद नारद भ्रातृ धना श्रेयसे जीवादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे
श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः ।

मूल टोंक ।*

(699)

सं० १८८३ ना मित्ती ज्येष्ठ बदी १२ गुरुवासरे श्रीमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल
जातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खडग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम चंदजी तत्
भार्या वीवी मया कुंवर श्री सिद्धाचलीपरि श्री ऋषभदेवजी परौ प्राशाद मध्ये

* श्री आदिश्वर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्त्ताकी वृद्ध णितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है ।
इस महान् तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पश्चात् प्रकाशित होगी ।

आलोषे प्रतिमा विवि मया कुंवर स्वहस्ते स्थापितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत् खरतर
गच्छे भ० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि जी विजै राज्ये पं० देवदत्त जी तत् शि०
पं० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

रैनपूर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थोंमें रैनपूर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार तेमझिला अगणित
स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दीपक नामक विशाल मंदिरके कारण जगत्प्रसिद्ध है ।
“आबुकी कोरणी रैनपूराकी मांडनी” देखने ही योग्य है ।

मंदिरकी प्रशस्ति ।

(700)

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४९६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री वप्प १ श्री गुहिल २
भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभर ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञी सुत युतस्व सुवर्णतुला
तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट. १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्ति-
वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ बैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २०
चोड़सिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६
मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान
श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र वप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय
सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजयसिंह ३५ भ्रातु श्री अरिसिंह
श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाहूयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादिदान पुण्य
परोपकारादि सारगुण सुरद्रुम विश्राम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

नस्य । विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर
 बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभि-
 मानस्य । निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य । म्लेच्छ महीपाल व्याल
 चक्रवाल विदलन विहंगमेन्द्रस्य । प्रचंड दोर्दंड खडिताभिनिवेश नाना देश नरेश
 भाल माला लालित पादारावन्दस्य । अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविन्दस्य ।
 कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल
 दमाप श्वापद वृन्दस्य । प्रबल पराक्रमाकांत ठिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र
 प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी
 वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि
 नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये
 तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यदुत गुणमणिमया
 भरणभासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति
 साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण । अजा
 हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैनविहार जीर्णोद्धार पद स्थापना
 विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्थ
 क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस
 स० सागर (मांगण) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन उघ्रेष्ठ
 भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारल
 दे पुत्र जाज्ञा जावडानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण
 नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री
 चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीवृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि
 श्रीदेवेन्द्रसूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर
 गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदं च सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख
 विहारः आर्चंद्रार्क नंदात्ताद् ॥ शुभं भवतु ॥

(१६७)

पाषाण और धातुओंके मूर्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोभद्र सूरिभिः ---ल स्थाने देव
सरण सुत बीशके ---श्री गुह - - कारिता ।

(702)

संवत् १२९० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्री० बढपाल श्री० जगदेवाभ्यां श्रेयार्थं पुत्र
सामदेवेन भातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीयैः
श्री शान्ति प्रभ सूरिभिः ।

(703)

संवत् १४९९ वर्षे सा० साजण भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल
देव्यादि कुटुम्ब युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंवं का० प्र० तपा श्री सोम
सुन्दर सूरिभिः ।

(704)

संवत् १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या तीचणि युतेन
श्री क० सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः ।

(१६८)

(705)

शत्रुजयके नक्सैके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० जकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा
सं० केलहा भा० हेमादे पुत्र सं० तोल्हा षांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः
सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव
प्रासादे --- धन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पहिका कारिता प्रति-
ष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमं तीर्थं नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं
क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रसुपूजकस्य --- ।

(J06)

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उत्तवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाघा पुत्र
सा० बीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोलादे प्रमुख युतेन माता
विमलादे पुण्यार्थे श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ बदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश
शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई
पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं । प्र० वृ० तपा श्री
उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे धरण विहारे ॥ श्री ॥

(१६६)

सहस्रकूट पर ।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा०
सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री बच्छ करावित (उत्तर तर्फ) वा० गांगादे नागरदास वा०
साडापति श्री मूजा कारापिता श्री० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

(709)

संवत् १५५२ व० मिगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस झातीय
म० धणपति भा० चांपाई भाई मं० हरषा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥
करावत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वश सा० गणपति
भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धम्मादे सु० सा० रहनसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब
युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुटिका का --- श्री उसघाल गच्छे श्री
देव नाथ सूरिभिः ।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० आसदे
भार्या सपांड सुत सा० साजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोग राजेन भ्रातृ सभागा
स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० अखा --- सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

(१७०)

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

(712)

संवत् १५८— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा० उमला भातृ पुण्याय श्री धम्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिमिः ।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर ।

(713)

॥ॐ॥ सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरिणामुपदेशेन श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वच्युसमापुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा० नायकाभ्यां भावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोलया मेघनादाभिधौ मंडपः कारितः स्व श्रेयोर्थे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिवनाद् विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत् १६४७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भट्टारिक श्री श्री श्री ४ हीर विजय सूरिणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

(१७१)

खेता नायकेन षड्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्कसत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उस्मा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात् । संवत् १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे झहारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री--न सुंदरजी चेला रतनसी

(716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन राणकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने --- ।

(717)

संवत् १८०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य झहारक श्री श्री कक्क सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्रीरस्तु ॥

(718)

संवत् १८०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनैश्वराणां चरणेषु । पं० शिवसुंदरः समागतः ।

(१७२)

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

(७१९)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ--विक्रमादित्य समयात्--
१६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री
उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साहश्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र
साहश्री सारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री त्रिभवणदे २ बहू
श्री असडवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

(७२०)

संवत् १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

(७२१)

-- संवत् १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार --- ।

(७२२)

संवत् १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार --- राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये --- ।

(१७३)

(723)

संवत् १६६६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-
नाथ प्रासाद भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री
सिंह सूरि राज्ये श्री संघेन लिखितं ।

(724)

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ़ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्ल पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे
श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे भट्टारिक श्री
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसोजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित
श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना वरजांगेन कृतं ॥ अत्राज
सामा मेया कला पुत्र कल्याण ॥ भानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा
शुभं भवतु - - -

(725)

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय असाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री
तेजसिंहजी द्राज्ये श्रीतपागच्छे भट्टारिक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये ।

(726)

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च । संवत् १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्त्तमान
द्वितीय असाढ़ सुदि २ दिने रविवारे रावल श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पलिकीय

(१७४)

गच्छे भट्टारक श्री यशोदेव सूरजो विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका
कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु । उपाध्याय श्री कनक शेखर
शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजई दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र
धारः ऊजल भातृ भाक्ता घडिता भवन कचरा - - ।

छत्रीमें ।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां बुजाप्नोदया । धन्याचार्यपदावदात-
वदिताः श्री कीर्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रस्मणि विभा प्रोच्छासितां हि द्रुया ।
राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखबालान्वया ॥ - - - - -

बालोतरा ।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर
धातु मूर्तियों पर ।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात वाहई
वीरदे श्री यार्थमकारि प्र० देव सूरभिः ।

(१७५)

(729)

सं० १४०१ वैशाख ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सच० कुलियात्मजा सा० काम पुत्रेण
स - - पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंवं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ अदि ६ बुधे उपकेश ज्ञाती आविणाग गोत्रे सा० कालू पु०
वीलला भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंवं कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डोडा पुत्र सा० नाय - - -
सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंवं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरिभिः ।

(732)

सं० १५०६ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - पुत्र
हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंवं कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

(733)

सं० १५०६ वर्षे - - उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - श्री सुमतिनाथ विंवं
कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(१७६)

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष यदि ९ शुक्ले श्री उपकेश ज्ञातीय त्री दूगड़ गोत्रे मं०
पनरपास पु० बछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाम्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंचु-
नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पढे म० श्री सोम
सुंदर सूरिभिः ।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने
सा० कुता भार्या लपमादे सा० डाहृत्य श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन
श्री घर्मनाथ विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरि पढे
त्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्ष गच्छके उपासेरमें केशरियानाथजी का देरासर ।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०८—वैशाख यदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति ।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र बुढाकेन भा० - -
कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री - ।

(738)

सं० १७१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे
वापणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - - ।

(१७७)

वाङ्मोड़ ।

गोपोंका उपासरा ।

धातुके मूर्तियों पर ।

(739)

सं० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० सालहा भा० ह्योसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा०
गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम
सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(740)

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० सषो सु० सं०
हेमा भा० हमीरदे मं० भचाकेन भा० वमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ
विंवे श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारित ॥ स्तिटि ॥
विधिना ॥ श्री ॥

यति इन्द्रजीका उपासरा ।

(741)

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्री० सहसा भा० मोली पुत्र जिन-
दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंयुनाथ विंवं का० आगम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा
मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(742)

सं० १५१९ मा-शु० - प्राग्वाट ज्ञा० रुल्हाकेन भा० वजू सुत सा० वीरा माणिक

(१७८)

बछादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ विंव कारितं प्र० तपा श्री
सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पद्वी श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ।

सभा मण्डप ।

(743)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ संवत् १८५६ वर्षे माह सुदि ५ शुक्ल पक्ष
प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउत श्री उदयसिंह श्री बाक् पत्राका
नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग
प्रधान श्री पता श्री धर्म मूर्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं
श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

(744)

सं० १९०३ माह बदि ५ शुक्ले श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र फणा पार्श्व-
नाथजीकी धरिसातांता संघ समस्त मोणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थ कारापितं
तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च ।

दुसरा मंदिर ।

(775)

संवत् १५४० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० वस्ता
पितामही कोल्हणदे सुत पितृ सं० पदा मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

(१७६)

घरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साधु रत्न
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंडलि वास्तव्यः ।

(746)

सं० १५२० श्री मूल संघेन भट्टारक श्री विजय कीर्त्ति श्री०

सभा मंडप ।

(747)

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुदि १५ रवि वासरे खरतर गच्छ भट्टारक श्री जिन
रत्न -- पुण्य नक्षत्रैः राजत श्री उदयसिंहजी विसरि विजय राज्ये जयराज्ये ॥ श्री
सुमतिनाथ रउ नववु कीउ श्री संघ करावउ सूत्रधार पीसा पुत्र नता नववु कीउ ।
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

(748)

सं० १६२८ वर्षे भद्रपद कृष्णपक्ष ७ बुध -- वृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन
सुर राजतजी श्री वाकीदासजी -- । जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतिनाथजी-
शिणगार कीधी -- ।

(749)

॥ ॐ ॥ संवत् १३५२ वेशाख सुदि ४ श्री बाहडमेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह
देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री करण मं० वीरामेल वेलाउल जा० भिगन प्रभुत
बोध अक्षराणि प्रयच्छति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संविष्टमान श्री विघ्नमर्दन

हेत्रगल श्रीचउंड राज देवयो उन्नय मार्गीय समायान सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उन्नया-
दपि उष्ट्र सार्थ प्रति द्वयो देवयोः पाइला पदे प्रियदश विशोप का० अर्द्धोर्द्धन ग्रहोल-
ब्धाः । असौ लागो महाजनेन सामतः ॥ यथोक्त बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरा-
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डानियोंका सुहल्ला ।

संवत् १६७७ बर्से ॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाया तिथौ शनिरोहिणी योगे
श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पाताणी गोत्रोय सं भोजा भार्या भोजलदे
पुत्रेण मंचपति पेतसोकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेय
से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर बहु श्री ऋषभदेव बिहार मंडन सपरिकर श्री आदिनाथ
विवं कारितं प्रतिष्ठापितं प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीमदकठवर सुरत्राण
प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक भटारक श्री होर विजय सूरि राज पद्मोदय
पर्वत सहस्र किरण यमान युग प्रधान भटारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पद्म प्रभावक श्री
श्री मद् जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महात्मा बिरुदधारक श्री नहाकीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित
श्री सुधर्म स्वामि पट्टर - - सुविहित सूरि सभा शृंगार भटारक श्री विजय देव
सूरिभिः ।

(१६१)

सर्व धातुकी मूर्तियों पर ।

(751)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरौ भंडारी गोत्रे सा० वील्हा संताने मं० मायर भार्या सुहदे पुत्र स० अस्का भार्या लपमादे भातृ सांपायने श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं श्री वंसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रीईसर सूरि पढे श्री शांति सूरिभिः ।

तपगच्छका उपासरा ।

(752)

सं० १६५३ वर्षे चै० शु० ४ श्री कुंथनाथ विंवं गांदि गोत्रे श्री—स० सुरताण भा० सवीरदे पुत्र सादूल - - - श्री तपगच्छे श्री विजयसेन सूरि - - पं० विनय सुंदर गणि प्रतिष्ठितं ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(753)

सं० १५२८ वर्षे फा० बदि १३ श्री माली श्री० समरा भा० धर्मिणि पु० श्री० मूलू भा० श्री० काका भा० काउं पुत्री लापू नाम्न्या पु० सांगा भा० बाधी २० शुद्ध शुद्ध श्री शांति विंवं का० तपा श्री क्षेम सुन्दर सूरि - - - ।

(754)

सं० १६७७ वर्षे अक्षय तृतीया दिने शनि रोहिणी योगे मेढता नगर वास्तव्य सा०

(१८२)

लाषा भा० सरूपदे नाम्नया श्री मुनि सुव्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-
सेन सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान
सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्री० आसधर भार्या गागी सुत
भदने दमा जिनदास गोवा पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शान्तिनाथ
विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ स० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास
केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

(757)

सं० १४५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधै ज० गुगलिया गोत्रे सा० चीरा प० सोहाकेन
श्री आदिनाथ विंवं स्व श्रेयसार्थे संडर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शान्ति सूरिभिः ।

(758)

सं० १४६८ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ जकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे
पुत्र लषमा भार्या लालण दे पुत्र दीलहा भार्या चीलहण दे पुत्र बडसी सकुटुम्बेन श्री

(१८३)

वासपूज्य विंव कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति
सूरिभिः ।

(759)

सं० १५१५ वर्षे आषाढ यदि १ दिने श्री उकेश वंशे धुल्ल गोत्रे सा० सार्दूल
जाया सुहवादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन
श्रीशांतिनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

(760)

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० घन्ना पुत्र सा० हिमपाल
पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्त्रपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंव कारितं प्रति-
ष्ठित तपागच्छ महारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः ।

(761)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० घाईया
केन भा० सलषू सु० दो० दासा संना कणेसी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाडा दाया
प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल विंव कारितं श्री मघूकरा खरतर - - - ।

(762)

सं० १५५६ वर्षे चैत्र सु० ७ सोम प्राग गठ ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलषणदे
पुत्र लोला सा० पीना भा० धंनलदे - - - गतुल्लद्वारेण आगत पु० श्री चंद्रप्रज्ञ स्वर्गा ।
विंव का० अचल गच्छे श्री सित्रांश सागर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्द्धन गणीन । -
मुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंघेन - - - ।

(१८४)

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रै सा० साहा पुत्र सा०
भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थे श्री श्री श्री श्रेयांस विंव कारित
प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सु० २ खेन्द्वारे षट बड गोत्रे सा० सा - र - - - श्रेयसे
श्री आदिनाथ विंव कारापितं श्री गच्छे भट० पुण्यकीर्ति सूरि पद्मे भट्टा० श्री
लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं ।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे उक्केश वंशे वादि-रा गोत्रै सा० तेमंजउ सा० जीवास
श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन
श्री श्रेयांस विंव कारित - - ।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विंव श्री विजय जिनेन्द्र सूरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

(767)

सं० १५०७ वर्षे फा० व० ३ बुधे । ओश वंशे बहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० पैता

(१८५)

भा० पैतलदे पु० व० हियति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंव कारितं श्री खरतर गच्छे
श्री जिन सागर सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

(768)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख बदि ६ शुक्र श्री माल ज्ञातोय पितामहवीरा पितामही वीरादे
सुत पितृ डाहा मातृ जासू श्रेयोर्थं सुत राजा भोज ठाकुर सी एतै श्री विमलनाथ
मुख्य चतुर्विंशति पदः कारितः श्री पूणिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरि पद्वे श्री साधु सुंदर
सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संघेन आंवरणि वास्तव्यः ।

(769)

संवत् १५७९ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थ धासी ऊकेश ज्ञातीय
सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जइताभार्या फते पुत्र सा० सीहा सहिजा भा० गुरी(?)
पुत्र सा० पडलिक भा० कमला पुत्र सा० जीराकेन भा० पुनी पितृव्य सा० सीमा पापा
विजा कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंव कारितं प्रति०
तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पद्वे श्री हेम विमल
सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हंस गणि प्र० परिवार परिकृतौ ।

(770)

संवत् १६११ वर्षे बृहत् श्रावण गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राजे श्री माल
ज्ञातीय पापड गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र उषतडमल १२ वर्षे नयणी तत्पुत्र जीवराजेन
श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं -- धर्म सुंदर विधिना प्रतिष्ठितं सुन जइतु ।

सं० १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरी ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय सं० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भार्या कडडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री अबुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सदुर्म कर्म करण सम्प्राप्त सधपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र अश्वजितदास सूरदास भ्रातृव्य गरीवदास प्रमुख सरस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारित शत्रुजयाष्टमोद्वारमध्य स्वयं कारित भवर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विवं कारित पितामह धचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोष्ठा रताना समुख पूर्वज नाम्ना प्रतिष्ठित श्री वृहत्स्वरतर गच्छाधोश्वर साधुपद्ववारक प्रतिवोधित साहि श्रीमद्वर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्वार श्री भाणवट नगर श्री शांतिनाथादि विवं प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री पार्श्व प्रतिहार सकल भट्टारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटोपमान प्रधानैः ।

सं० १७०० व० द्वि० वै० सित ८ गुरी गोलकुंडा वा० सा० मेघा भा० मीहणदे सुत सा० नानर्जा नाम्ना श्री मुनि सुव्रत विवं का० प्रतिष्ठित तपाधिपति परम गुरु भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार पतिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री विजयदेव सरितिः ।

(१६७)

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

(773)

सं० १६६९ वष माघ सुदि ५ शुक्रवारे म्हाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह । वज्रय
राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय लोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे
तत्पुत्र स० लाषाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारित
प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्रीजिन सिंह सूरि तत्पद्मादयादि
मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

(774)

सं० १४७१ वर्षे माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे वापणा गोत्रे सा० सोहड सु०
दाद भा० -- ण पितृ -- निमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० उएसगच्छे श्री देव
गुप्त सूरभिः ।

(775)

सं० १५१० जैष्ठ सु० ३ दिने प्राग्वाट पोपलिया बासिया तीरा भा० वीरी पुत्र सा०
हुंगर भ्रातृ सा० खेतनि सहसा समरंदे धारकमी भार्या जासलि जत भाई कर्मादि
कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत (?) विंवं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर
सूरि पद्मे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(१८८)

(776)

सं० १५२९ वर्षे माघ वदि ५ रवौ ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा०
भरमादे पु० - - - दि कुटुम्ब युतेन श्री कुन्धुनाथ विंवं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री
प्रज्ञ शेखर सूरि पहे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

(777)

सं० १५३२ जैष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर
भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर
सूरि पहाल'करण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(778)

सं० १५४० वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काण्टा - - - भ० श्री सोम कीर्ति आ०
श्री विमलदेव नारसिंह ज्ञातीय बोरठेच गोत्रे सा० पेईया भा० खेड' पुत्र सा० भीमा
जा० प्रटी श्री आदि - - - करणितं नित्यं प्रणमति ।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र - सोमदेव भा०
गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे
श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे ज्ञातीय वंशे लोढा गोत्र संघवी
दाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

(१८६)

भैरिनी सुश्राविका घोरा नाम्नी स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ विंश कारित प्रतिष्ठित
श्री चतुर्विंशति जिन विंश प्रतिष्ठित श्री वृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तत्पह
श्री जिनहंस सूरि तत्पहालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभि सकल संघेन पूज्यमान
आचन्द्रार्क नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर ।

(781)

संवत् १६८४ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सघ हरषा भा० मीरा दे तत् पु० संचवो जस-
वंत भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे
भट्टारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

महावीरजी का मंदिर ।

(782)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ बुधे श्री शांतिनाथ विंश गादहीआ गोत्रे सं० सुरताण
भा० हर्षमदे पु० सं० हांसा भा० लाडमदे पु० २३५५ कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे
श्री विजय सूरि पहे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय सुन्दर गणिः प्रणमति ॥
श्री रस्तु ॥

(783)

॥ ॐ ॥ संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्य
श्री मेडता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे बाई पूरा नाम्नी पु० सक-

(१६०)

मर्णादि सपरिवार - श्री सुमतिनाथ विं वं कारित प्रतिष्ठित तपा गच्छाधिराज महारक
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख
परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत् १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेढता वास्तव्य ऊ० झा०
समदडिअः गोत्रीय सा० माना भा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात
भा० केसरदे पुत्र जईतसी लपमोदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुब्रत विं वं का०
प्र० तपा गच्छे महारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पहालङ्कार भ० श्री विजय देव
सूरि सिंहैः ।

(715)

सं० १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरौ श्री ओसलबाल ज्ञातीय गणधर चौपड़ा गोत्रीय स०
कचरा भार्या कलहिलडे चतुरगदे पुत्र स० अमरसी भा० अमरादे पुत्ररत्न स० अमी-
पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूर
वदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ वि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छा-
धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पह प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षाणादीया
ष्टाहिकादि धामोसिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री
शत्रुंजयादि तीर्थकर सोचकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान
श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजेन्द्रदास वा०
हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

(१६१)

(787)

संवत् १६७७ ज्येष्ठ अदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा
साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधरचोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे
पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा०
कउडिमदे पु० अमरसी--भा० अमरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल
संधपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पट्ट नंदि महोत्सव विविध
धर्म कर्त्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भातृ अमीपाल कपूरचन्द
स्वभार्या अजाइबदे पु० ऋषभदास सूरदास आतृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण
श्रेयोर्थं स्वयं कारित मर्मणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ विंध्य कारित प्रति-
ष्ठित श्री महावीरदेव - - - परपरायत श्री वृहत्स्वरतर गच्छाधिप श्रीजिन भद्र सूरि
संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री मदकव्वर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र
सूरि विहित कवित काश्मीर विहार वार सिंदूर गजर्जणा विविध देशमारि प्रवर्त्तक
जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पट्टोत्तंस लब्ध श्री
अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्ठमोडुार प्रदर्शित भाण बडमध्य प्रतिष्ठित श्री
पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहिस्थ वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन भहारक
चक्रवर्त्ति श्री राजनराज सूरि दिन करै ॥ आचार्य श्री जिन सागर सूरि प्रभृति यति
राजै ॥ सुत्रधार सुजा । प्रतिष्ठित भहारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरंदरै श्री मेडता
नगर मध्ये ।

ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है। यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्ति बिन्ह विद्यमान है। शासन नायक श्री महा-वीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके अनशनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है।

मंदिर प्रशस्ति ।

(788)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्ववित्सर्व दर्शी । ससुर मनुज राजामीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्यः स्मर्यते योगिवर्ष्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दृग्दृष्ट्वा विष्टप-मुद्भवद् घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादौ सहस्रां शुवत्प्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां भद्रं स नाभेः सुतः ॥ २ ॥ यो गार्वाण सर्व-भिद भिहितां शक्ति मश्रुद्धा नः क्रूरः क्रोडा चिकीर्षा कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया यस्याहतो सौ मूर्ति मित इयता नामरत्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं वितरतु भगवान्-न्वस्स सिद्धार्थ सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वर्निर्वासालय घन समयोरमाक मार्ह - - - - नस्यावसाने - - - उत महती काचिदन्याय देषा इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति भयतः सस्व जेशच्य नीचैर्यत्पादांगुष्ठकोद्याकनक नगपतौ प्रेरिते व्यांतस्वीरः ॥ ४ ॥ श्री मानासीत्प्रभुरिह भुवि - - - येक वीर स्त्रैलोक्येयं प्रकट महिषा राम नामासयेन चक्रे

शार्ङ्गं दृढतरमुरो निर्दुयालिङ्गनेषु स्वप्नेयस्या दशमुख बधौत्पादित स्वास्थ्य
 वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या काषट्किल प्रेम्णालक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवत् प्रतोहार वंशो-
 राम समुद्भवः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सवशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत्कीर्तिर्यस्य
 तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नस्मिन्मामि सुखेन विश्व विवरे नत्वेव
 तस्माद्बहिर्निर्गन्तुं दिगिभेन्द्र दन्त मुसल व्याजाद काष्यीन्मनुः ॥ ७ ॥ समुदा समुदायेन
 महता चमूः पुरा पराजिता येन - - - समदा ॥ ८ ॥ - - - समदारण तेनावनीशेन कृता भिरक्षैः
 सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः । समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मूकेशनामास्ति पुरं गरीयः ॥ ९ ॥
 - - - सक्रान्तं परैः - - - - - मिव श्री मत्पालितं यन्महोभुजा । तस्य तन्मन्त्रपन्नेश्च
 स्य भवनं विभूदृशं शुभ्रतामभ्रस्पृग्मृदुगराज कुंजर युतं सद्ब्रजयन्ती लतम् किं कूटं
 हिम - - - सृत रति - - - ॥ १० ॥ तद् कार्यं तार्य्य बचसा संसार - - - या ॥ ११ ॥
 क्वचित् - - - रबुदुयोधिकम धोयते साधवः क्वचित्पटुपट्टीयसौ प्रकटयन्ति घर्म
 स्थितिम् । क्वचिन्तु भगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे - - - - -
 ध्वनिमदेव गाम्भीर्य्यत ॥ १२ ॥ वीक्षणे क्षणदां स्वस्य वर्णलक्ष्मी विपश्चिताम् । बुद्धि-
 र्भवत्यवशास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ आचार्य्यादेर्वचन यन - - - निन - - -
 मुच्चैः सदर्शव - - - - - पयार्यः प्रतिध्वान दण्डम् सत्यं मन्ये यदु दिन मितोवावादीत्स-
 मन्तात्सोयं भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ - - - किं चान्ह - - - - -
 यिकार त्रैव -
 मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सीम्यो वणिगिजन्दक सज्जितः । इन्दुवत्कान्ति - - -
 लयः ॥ १६ ॥ - - - चदुह्वरा - - - ह्वया प्रसाद युक्ता स्वयशोभिरामा । सदानुसत्री स्वपलितदीनं
 मार्गणावात - - - - - तरगा ॥ १७ ॥ तस्मात्तस्यामभूदुर्मा त्रिवर्ग - - - - - - - - - -
 - - - - - - - ॥ १८ ॥ यन्नाकारि सितेतरच्छवि - - - नत्वा दिनं याचितं दययै
 न्नात्थिं जनरपि प्रतिगतं सद्गोहमभ्यर्त्थनं । किं चान्यदुवने द्रोस सरसि व्य - -
 नीर नीर दक्षित - - - - - ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्म प्रति युक्त - - - योनयो

.....तायेकुमतेर्मर्मागपि । मि । वंसतोपिहि मण्डलेथवान सन्मणीनां
 भवतीहकाचता ॥२०॥ यदि वादि संज्ञिता
 जाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वो स्वर्गा सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गया प्रतिमा कारि स
 त्रधामनि ॥ २२ ॥ आन्त्रकात्सर्वदे व्यातु यत् देवदत्त
 मिवागमे ॥ प्रति दिनमिति
 या कार्यं प्रति विदधते यद्वदधिकं ॥ ध्यैर्यवन्तो पिये त्यन्तभीरवः परलोकतः । भोगि
 हिको च दूरगाः ॥ ति बला
 अतत्स भिः पुनर्यं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिमारा
 विकलः सन्गोष्ठिकानु जिन्दक मतदु व्य
 कृतोय नेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मत्स दृग्दृश्यते
 द्वेजयत्री भूजयन्त ॥ संवत्सर दशशत्यामधिकायां वत्सरै स्त्रयो दशभिः
 फाल्गुन शुक्ल तृतीया भाद्र पदाजा सं० १०१३
 र्याम ॥ प्राजापत्यं दधदपि मना गक्षमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपिच
 करोवः पाया भुवन गुरुन्नति ॥ भावद्गौर्गूढ बन्धिर्गुरु
 मर विन मन्मूर्धुभिर्द्वार्यते घोषावन्मेरुर्मरुभिर्निर्नि ति युते ।
 वशिखमुखच्छेद श्री मद्व दशा प्रच नित्यमस्तु ॥ जयतु
 भगवांसताव कीर्त्तिर्नि रीति वपुः सदा ॥ यस्मादस्मिन्नजम्मन्यवरि पति
 पति श्री समा प्रकट सुतारनो सूत्रधारत्व
 विवति दित्ति मिदं ।

(१९५)

तोरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापिमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ वांछल पुत्र यशोधर वोहिष्य मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५९ कार्तिक सु० १२ सुचेत गुत्री सहदिग पूत्रैः शशु दरदी सुखदी सल्ल सर्व
प्रसादै चतुर्विंशति जिनः मातृ पट्टिका निज मातृ जन्हव श्रेयोर्थं कारिता श्री कक्क
सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन वदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री बासदेव सूरि संघ नानेतिहइ
श्रेयार्थं राखदीव कारिता ।

(793)

सं० १२३४ वैशाख सुदि १४ मंगल । नागदेव वर्षा शामपद धनाय शोधं । भार्या
यशोदेव्या त्रामर्थे पोथं पदे ।

(१९६)

(794)

सं० १२३४ वैशाख शुक्ल १४ मंगलवार सावर्षदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारेन
जिन तुत्रित सादेव मणि कुतेन ।

(795)

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे मोढ वास्तव्य सा० डा-भार्या यससारदे भार्या
सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं
आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

(796)

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेचा गोत्रे सा०
वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूर्याची पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंव
कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः ।

(797)

सं० १५१२ वर्षे कार्तिक सुदि ८ शनि श्री उसभ से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र
भार्यायां ४० पिढा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंधुनाथ विंव कारित प्रतिष्ठित
श्री वृहद् तपापकज श्री विजय तिलक सूरि पढे श्री विजय धर्म सारे श्री भूयात् ॥

(798)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीढ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-
ताभ्यां श्री धर्मनाथ विंव पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विशाधर गच्छे श्री हेम प्रभु
सूरि मंडलिराभ्यां कृतः ।

(१६७)

(799)

सं० १५४६ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-
भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० भर्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन
स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ विंव कारित प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय
सागर सूरिभिः ।

(800)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूणं करापितं ।

(801)

सं० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कटुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजवाई केन श्री सम्भव
विंव सा० तेजपालेन प्र० ।

(802)

संवत् १७५८ वर्षे आषाढ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छे
भहारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्य - - - ।

नीवमें प्राप्त मूर्तिके टूटे चरण चौकि पर ।

(803)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - सालीमद्र - - - - - देव कर्म
श्रेयोर्थे कारित जिनेत्रिकम् - - - ।

(१८८)

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्योह श्री केलहण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र श्री कुंमर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती - - - दभिकान्वीय कीर्ति पाल राज्य वाहके तदुक्ती श्री उपकेशीय श्री सञ्जिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिलंगो क्रय त्रिण्यी धारा वर्षेण श्री क संचिका देवि भक्ति परेण श्री संचिका देवि गोष्ठिकान् भणित्वा तत्समक्ष तद्वयं व्यवस्था लिखापिता । यथा । श्री संचिका देवि द्वारं भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्धाद्य द्वार स्थितम् स्यात्तव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश वर्षोऽप्योत्परः । तथा गोष्ठिकैः श्री संचिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा १०॥ घृत कर्ष १ भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः ॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ घोर बड़ांशु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु जालहण तस्य भार्या सूहृवं तयोः सुतेन साधु मालहा दोहित्रेण साधु गयपालेन-- संचिको देवि प्रासाद कर्मणि चंडेका शीतला श्री संचिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र पाल प्रतिमाभिः सङ्गितं जंघा धरं आत्म श्रेयार्थं कारितं ।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पालिहया धीय देव चन्द्र बधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा समन्तेन स्वगृह दत्तं ।

(१६६)

(807)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - -
पालिहया धीन देव चंड बधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राधिकया आत्म श्रेयार्थं समस्त
गोष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्ग समतेन आत्मीय गृह दत्तं ।

हंगरीके चरण पर ।

(808)

सं० १२४६ माघ अदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक
प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्गः कृतः ।

प्राची ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके लेख पण्डित रामानन्दजीने
संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

(809)

संवत् ११४४ वैशाख अदि ७ पल्लिका चैत्ये वीर ।

(810)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ अदि ४ शीघरेल - - - ।

(२००)

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्ले भाजिताभ्यां सांत्याप्त
कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः ।

(812)

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरौ - - - ।

(813)

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनौ श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये
श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सधण देवी
सयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राणां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या
निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर विंशं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः ।

(814)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त
नाथ देवस्य ।

(815)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल
नाथ देवस्य ।

(२०१)

(816)

सं० १५ - - - सुदि ३ सा - - - - का० सा० मद्या - - - स्व श्रेयसे श्री कुंथनाथ
विव का० प्र० श्री भिन्नमाल गच्छे ।

(817)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ - - - ।

(818)

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेश सा० मदा भा० वालहदे पुत्र सा० क्षेमाकेन भा०
सैलखू भातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विवं का० प्र० तपा
श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

(819)

सं० १५२९ वर्षे माह सु० ५ रवौ ऊ० भोगर गो० सा० राणा भा० रत्नादे पु० चाहड़
भा० रङ्गणे पु० खरहथ खादा खात खना धितृ श्री नेमिनाथ त्रिव श्री नागेन्द्र
गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः ।

(820)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ऊ० गुगलिया गोत्र सा० खोमा पुत्र सा० सा०
रत्नादे पु० वरसा नरसा थादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री
जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वापि विवं कारितं प्रतिष्ठित श्री साहि सू - - ।

(821)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री उकेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पासड़ भार्या
लखमादे पुत्र सा० भोजा शुश्रावकेण भातृ सा० पदा तत्पुत्र सा० कोका प्रमुख परिवार

(२०२)

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन
भद्र सूरि पढे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ज० चूदालिया गोत्रेच ज० सा० सिवा भा०
सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाडिमदे पुत्र आसा भार्या जमादे इत्यादि कुटुंब
युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंव का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरपपुरे ।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त
भार्या साह पुत्र सा० वरु श्रावकेण भार्या नामल टे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंव
श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पढे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन
समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं ।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वाद १ शुक्रे उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल
पुः जदा चांपा जदा भा० रूपी पु० वाला खंतावाला भा० बहरङ्गदे सकुटुंब श्री० उदा
पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री
संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः ।

(825)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह
बिजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान
वशावतन्त्र श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

(२०३)

माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा० डुंगर भाखर नाम भ्रातृ
द्वयेन सा० डुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रतन सा० पौत्र सा० टीला सा०
भाखर भा० भावलदे पुत्र ईसर अरोल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवउखारुय
प्रसादोयार श्री पार्श्वनाथ विंवं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितं च स्व प्रति-
ष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीमदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्ध धारक तपा गच्छाधि-
राज भहारक श्री हीर सिंह सूरि पट्ट प्रभाकर भहारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार
भहारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिनाचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर
पण्डित रि. ओं श्री लक्ष्मीनरिये द्योतनाचार्य गच्छे ब्रह्म भादा मादा कौतयोः श्रेयार्थं
लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारित ॥

(826)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे अष्टमी दिवसे श्री
मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० ईसर हदाह सा दान्य पुत्र लखा
खोरा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केशवादि परिवार परिवृतैः स्वश्रेयसे श्री
महावीर विंवं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० दुंगर भाखर कारित
प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भहारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार भहारक श्री श्री श्री
विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

(827)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे अष्टमी दिससे महाराजाधिराज
महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये तत्सुत युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते
तत्प्रसाद पात्रं चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नाग्निर श्री पालि नगर राज्यं कुर्वति
तन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रतन सा०
भाखर नाम्ना भा० भावलदे पुत्र सा० ईसर अटोल प्रमुख परिवार युतेन स्व श्रेयसे श्री

सुपार्श्व विंश कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकवर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन सूरि ।

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय मुहणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्ति स्फूर्ति मत्कोशं विंशन्ति जिन विंश विराजित दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजय देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः ।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ६ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे पुत्र सा० असवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंश कारितं स्थापितं च । महाराणा श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरेश्वरोपदेशतः वीधरला । वास्तव्य समस्त संघेन । शिशिरराया उपरि निर्मापितेन विंशेन प्री० श्री प्रतिष्ठितं च तप गच्छाधिराज भट्टारक श्री मदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भ० हीर विजय सूरेश्वर पह प्रभाकर भट्टारक श्री विजय सेन सूरेश्वर पहालंकार भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर परिकरितैः ।

(२०५)

लोढारो बासका मंदिर ।

(830)

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह षुण साहजी विजय राज्ये । संवत् १६८६ वर्षे
वैशाख सित्ताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय
राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगन्नाथ जी राज्ये ऊपक्रेस ज्ञातीय श्री श्री
माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० हुंगर भातृ सा-भापर --
नामभ्यां -- हुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्यघर भना भापर भार्या चाचलदे
पु० इंसर आयेल रूपा -- पु० टीला युतेनं स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विवं कारापितं
प्रतिष्ठित ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरी
तत्पद्मे श्री रत्नचन्द्र सूरि वा० तिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व
श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जोर्णोद्वार कारापित मूल नायक श्री
पाश्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां विंव० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश डंडे रुप्य
सहस्र ५ द्रव्य व्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री
परमेश्वर गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(831)

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ९ - - - - ।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(839)

संवत् १२०९ द्वि० ज्येष्ठ बदि ४ अद्योह श्री पालिकायां ग्रामे ५० दिनां ५० दिनां ५० दिनां

(२०६)

समस्त राजावली विराजित परम प्रहारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर
लब्ध - - - - - निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी मूशल श्री मत्कुमार
पाल देव कल्याण विजय राज्ये - - - - - ।

नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितै देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री नमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना
प्रतिष्ठितं ॥

(834)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री
मद्देव सूरि विनेवेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना । यावद्द्विषि चन्द्र र्खास्यातां
धर्मौजिन प्रणीतोस्ति । तावज्जाया देत्त जिन युगलं वीर जिन भुवने ।

(२०७)

(८३५)

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-यवत जैता भार्या० कहु पुत्र नामसी भार्या कमालदे
पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंव कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांवदेव सूरिभिः ॥

(८३६)

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्री० समरसी सुत दो० धारा भा० सूर्यदे सुत
दो महिपाल भा० मालहणदे सुत दो० मूठाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईआभ्यां
च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुंदर
सूरिभिः ।

(८३७)

श्री चन्दा प्रभु विंव । सं० १६८६ प्रथमाषाढ यदि ५ शुक्ले राजाधिराज श्री गज
सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसा सुत जयमल जी नामना श्री चन्द्र
प्रभु विंव कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-
धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पहालंकार भ० । श्री विजय सेन सूरि पहालंकार
पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद्ध धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व
पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः राणा श्री जगत
सिंह राज्ये नाडुल नगर राय विहारे श्री पदूम प्रभु विंव स्थापित ॥

(८३८)

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ५ शुक्ले राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये योधपुर
नगर वास्तव्य मणोत्र जेसा सुतेन । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ विंव कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्री ५ श्री विजय देव सूरिभिः
स्व पहालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः स परिवारः ॥

ताम्र शासन ।*

(८३९)

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठ परिहृत मद मार
क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्भवः स्वो वशीय च सम्भव स्त्रिभुवन कृतसेवा श्री
महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तन्नासोन
नड्ढे भूप श्री लक्ष्मणादौ ॥२॥ तस्मात् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री
बलि राजो राजा विग्रह पालोनू च पितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः ।
तज्जः श्री अणहिलो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद इत्यजना
पार्थिव श्रेष्ठः । नृभ्राताऽभूत् क्षीतिपः सुभटः श्री जैद्र राजाख्यः ॥५॥ श्री पृथिवी
पालोऽभूत् तत्पुत्राः सौर्यवृत्ति शोभाढ्यः । तस्मादभवत्भ्राता श्री जो जललो रण रसात्मा ॥६॥
तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रतापवर निलयः । तत्पुत्राः क्षाणिपः श्री अलहण देव
नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप पखाले सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारः । सिखांत सुदिताहित
गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिशः सारमिदं बुद्धिमान् चिन्तयत ।
इह ससार असार सर्वत्र जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गर्भं स्त्रि कुक्षि मध्ये पल रुधिर
बसा मेदसा बहु पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्थान्नु जन्मा
धर्मादानामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प मात्रं
स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ खद्योतोद्योत तुल्यः क्षणः मिह सुखदाः सम्पदो
दृष्ट नष्टः प्राणित्वं चंचलं स्यादलमुपरि यया तोर बिन्दुर्नलिन्याः ज्ञात्वैमं स्व

* यह ताम्रपत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड साहब यहासे लेकर विद्यायतके रखल प्रशियाटिक मुसाइटीमे दान किया है ।

पित्रो स्पृहयन्मरताम् चैहिकम् धर्मं कीर्त्तिं देशान्तो राजपुत्रान् जनपदगणान्
 बोधयत्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ अस्मिन्नेव महा
 चतुर्दशी पर्वणी । स्नात्वा धौतपटे निवेश्य दहने दत्त्वाहुतीन् पुण्यकृन् मार्काण्डेय
 तमः प्रपाटनपटोः सम्पूर्य चावज्जलि । त्रैलोक्यस्य प्रभुं चराचरगुरुं संस्मर्य
 पंचामृतैः ईशानं कनकान्नवस्त्रनदनैः सम्पूज्य विप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुतिलकुशाक्ष-
 सोदकः प्रगुणी भूतापसद्व्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छतयावत् चंद्राकभूपालं ॥१३॥
 श्रीनड्डूलमहास्थाने श्रीसंडेरकगच्छे श्रीमहावीरदेवाय श्रीनड्डूलतलपदशुष्क
 मंडपिकायां मासानुमासधूपवेलायं शासनेन द्र० ५ पंचप्रादात् अस्य देवरक्ष्यं
 भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिर्भवि भोक्तिर्भिरपरैश्च परिपथानां न कार्या । यतः साक्षा-
 न्योयं धर्मसेतुनृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भक्तिः सर्वान् एवं भावीनः
 पार्थिवेन्दुभूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मदन्वयजाभूपाभावी
 भूपतयश्च ये । तेषामहं करे लग्नः पालनीय इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः
 कश्चिन् नृपतिर्भवेत् तस्याहं करे लग्नीस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ इदुमिर्ध-
 सुधाभुक्ता राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥
 षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानद आच्छेत्ता चानुमत्ता च तान्येव नरकम्
 वशेत् ॥१८॥ स्वदत्तं परदत्तं वा देवदाय हरेत यः स विष्टार्या कृमिभुत्वा पितृभिः
 सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो व्यतीयासु शुष्ककोटरास्तिनः । कृष्णा ह्योमि जायते
 देवदायम् हरन्ति ये ॥२०॥ मङ्गलं महाश्रीः । प्राग्वाटवंशे धरणिगगनाम्नः सुतो महो
 मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः प्रतिभा निवासो लक्ष्मीधरः श्रीकरणे नियोगी ॥२१॥
 आसीत् स्वच्छमला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्रज्ञानसुधारसप्लविन
 धिष्टंज्जी भवत वासलः । पुत्रस्तस्य वभूव लोकवसनिः श्री श्री धरः श्री धरे
 सूपस्ति रचयांचकार लिलिखे चेदं महाशासनं ॥२२॥ स्वहस्तोयमहाराज श्री
 अलहण देवस्य ।

तामापल (महाजनों के पास)

(840)

ॐ स्वस्ति ॥ श्रियै भवन्तु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवन्तो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरो नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा । राजा महाराज नतांहि युग्मः ख्यातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समाभूतदीय तनयः श्री लक्ष्मणो भूपति स्तस्मात्सर्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभि-
 तारुयः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात्तदीयो मही ख्यातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽभवत् ॥३॥ तस्मिन्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुर्दुर वैरि कुंजर बध प्रोत्ताल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलाली कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥ तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे व्यापाद्य सौराष्ट्रकान् । शौचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर वृत्तिरमलः श्री अलहणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रीड वंश जव रा सहलस्य पुत्रो अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण वै जनकजेव विद्या-
 हिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगद्वयो रूप सौंदर्य युक्ताः । शास्त्रैः शास्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशीलाः ज्येष्ठ श्री केलहणाख्य स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्ति पालो । यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदयामीजने बंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमीसां परिवारानथो ज्येष्ठोगंजः क्षीणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारो निज राज्य धारी श्री केलहणः सर्व गुणोरुपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आलहण देव कुमार श्री केलहण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कीर्त्तिपालस्य प्रसादे दत्ता नड्डूलाई प्रतिबद्ध द्वादश ग्राम ततोरज पुत्र श्री कीर्त्तिपालः । संवत् १२१६ श्रावण वदि ५ सोमे ॥ अद्योहं श्री नड्डूले स्नात्वा धौतवाससी परिधाय तिलाक्षत कुश प्रणयिनं दक्षिण करं कृत्वा

देवानुदकेन संतर्प्य । वहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसो निःशेष पातक पक्क प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती दूर्त्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रम्मौ स्नपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्ष प्रति भाद्रपद मासे चंद्रार्द्ध क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरवंदं माडाड । काण सुवं । देवसूरो । नाडाड मउवडो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्वदाप्यस्मामिः शासने दत्तौ । अभिग्रामैरधुना संवत्सर लगित्वा सर्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे दातव्यौ । अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रान्ते योऽन्य कोपि भविष्यति तस्याह करे लग्नो न लोप्य मम शासनं । षष्ठि वर्ष सहस्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः क्षणं दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि र्तस्य तस्य तदा फल ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्थ साठनप्ता शुभं करः दामोदर सुतो लेखि शासनं धर्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

संवत् १२१३ वर्षे मार्ग यदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल पाटके समस्त राजा बली समल कृत परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति बर लब्ध प्रसाद प्रौढ प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री बहड़ देव श्री श्री करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने पोरित्य वोढाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदे तदीय सुत सजात महामंडलीक० श्री वस्त

राजस्तदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिंह शासनं प्रयच्छति यथा । अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महाबोर चैत्ये । तथा ऽारण्ट-नेमि चैत्ये शील बदडो ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्वीय धर्मार्थं वदर्य मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारक ब्राह्मणादयः प्रमुख प्रदत्त त्रिहाइको रूपक १ एक दिनं प्रति प्रदातव्यामदं । यः कोपि लोपि गति सो ब्रह्महत्या गो हत्या सहस्रेण लिप्यते । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः । यः कोपि बालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्ठामीति । गौडान्वये कायस्थ पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं ।

नाडलाई ।

वर्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिंके नाडोलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संवत् दश दाहोतरे बदिया चोरासी बाद ।

खेड नगर थो लाबिया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्तमान हैं ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

संवत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ सुबहार श्री पंडेरकान्वय देशी चैत्य देव श्री महावीर दत्तः । मोस्करा ग्रामे घाणक तैल बल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तरा सुत विंसराकेन कलसो दत्त ॥ रा० वाच्छत्य समेत । साखिय भण्डौ नाग सिउ । ऊतिवरा

(२१३)

वीट्टुरा पोसरि । लक्ष्मणु । बहुभिर्ध्वसुधा भुक्ता राजिभिः सागरादिभिः । जस्य जस्य
यदा भूमि । तस्य तस्य तदो फलं ॥१॥

(843)

ॐ ॥ संवत् ११६६ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री न्हः तन्नागिराज
रायपाल । देव तस्य पुत्रो रुद्रपाल अमृत पालौ । ताभ्यां माता श्री राज्ञो मानल देवी
तथा नदूल ढागिकायां ॥ सतां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । घाणकं
प्रति धर्मार्थ प्रदत्त भं० नागसिव प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० तिमटा त्रि० तिरिया
षणिक पोसरि । लक्ष्मण एते साखि कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो हत्या सह-
स्त्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

(844)

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये
- - - हास - - समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । आत्म । पाइला मध्यात्
सर्व साउत पुत्र विंशोपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तेल बल मध्यात् । माता निमिरां
पलिका द्वयं । पली २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद समझाय । धर्मार्थ निमित्तं
विंशोपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्त्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च । स्त्री हत्या
भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

(845)

संवत् १२०० कार्तिक वदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये । श्री
नदूल ढागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नदूला इय महाजनेन सर्वै मिलित्वा श्री
महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । घृत तैल चौपड़ मणि पित पाइय प्रति । क०-१ धान लव-

(२१४)

नमपि तद्रोणं प्रति मा० १/२ कपास लोह गुठर षाड होंगु माजीठा तौल्ये घडो प्रति । पु० १/२
पूगहरी तक्ति प्रमुख गणितैः । सहस्र प्रति । पुगु १ एतत्तु महाजनेन चेतरेण धर्म्मार्थ
प्रदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

(846)

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज यदि ५ शुक्रे । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागि कायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा-
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थे । श्री अभिनव पुरीय वदाय्या । अत्रेषु समस्त वणजार
केषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइलाल गमाने । ततु बीसं प्रति । रुआ २
किराड उआ । गाड प्रति रु० १ वणजारकै धर्म्मार्थ प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या शतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

(847)

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ यदि ९ नाडलाई रीमाउहीत को-विसति को तेल सेर० ॥
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ प्रत देस ।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

(849)

सं० १५६९ वर्षे । कुतवपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात्
मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

(850)

सं० १५७१ वर्षे कुतवपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद
सुन्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्ग श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात् ॥

(३१५)

(851)

सं० १५७१ वर्षे कुतबपरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद
सुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनोय श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

(852)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५८७ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे
षष्ठ्यां तिथौ शुक्ल वासरे पुनर्वसु ऋक्ष प्राप्ता चंद्र योगे श्री संहरे गच्छे कलिकाल
गीतमावतारः समस्त भविक जन मनोबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि
विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि
घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः षष्टि सुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः ।
श्री षंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर
नम्रो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्तृ चूडामणिः भ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः
तत्पट्टे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री
वदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्ता परम यशो वादः
भ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरि ।
एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूरिणां वंशे पुनः श्री शालि
सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पट्टालकार हार भ० श्री शांति सूरि वराणां सपरिकराणां
विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे । श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला
दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर
श्री पेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल भृगांक वशोद्योतकार प्रताप मार्तण्डा-
वतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महानंद राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा
श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात् ।
श्री उकेश वंशे राय जडारी गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे म० मयूर सुत मं०
सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० सोहा समदाभ्यां सद्वांधव मं० कर्मसाधा रालाखादि सुकुटुम्ब

(२१६)

युताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ८६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतार्यां त० सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पद्वे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० श्री ईश्वर सूरिभिः । इति लघु प्रशस्तिरिय लि० आचार्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्ण सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(853)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे० सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान गम भार्या तत् पु० । भीमा म पहराज पुत्र कला म० नगा पुत्र काजा म० पदमा पुत्र जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र सकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद जादव । म० सिवा पुत्र पूजा जेठा संयुतेन श्री अदिनाथ विंव कारित प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि तत्पटालंकार श्री विजयसेन सूरि तत्पटालंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

(854)

महाराजाधिराज श्री अभय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ श्री नडुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातोय वृ० सा । जीवा भार्या जसमादे सुत सा । नाथाकेन श्री मुनि सुव्रत विंव कारापितं प्रतिष्ठितं च । भटारक श्री हीर विजय सूरिभिः ।

(855)

संवत् १७६८ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने जकेश ज्ञात १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर सी पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिलेन संप्रति प्रतप (प्रतिष्ठितं) माणिक्य विजै शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात् शुभे भूयात् ।

संवत् १६६६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगीरी महा तपा विरुद्ध धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरेश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्मापित श्री जूषल पर्वतस्य जोर्ण प्रासादीद्वारेण श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे श्री श्री आदिनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मदकवर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री होर विजय सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरेश्वर पट्टालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृत्तैः श्री नडुलाई मंडन श्री जूषल पर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंवं ॥ श्री ॥

श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११९५ आसउज वदि १५ कुज ॥ अद्य ह श्री नडूलडागि-
कायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयीराज्यं कुर्वतस्ये तस्मिन् काठे श्री
भदुर्जित तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजाद्यर्थं गुहिलान्वयः ।
राउत उधरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मार्गे
गच्छता नामा गतानां वृषभानां शेकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विंशतिमो भागः
चद्रार्कं यावत् देवस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया ॥
अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपि लोपयिष्यति । तस्याह
करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोय साभिज्ञान पूर्वकं
राउ० राज देवेन मतु दत्त ॥ अत्राहं साक्षिण ज्यातिषिक दूदू पासूनुना गूगिना ॥ तथा
पला० पाला पृथिंवा १ मांगुला ॥ देवसा । रापसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(२१८)

(858)

ओं ॥ स्वरित श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्ले श्री नडुलाई नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अन्नस्थ स्वच्छ श्री मदवृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतु ग सूरिवंशोद्भव श्री घर्मचन्द्र सूरि पह लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि भिरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद् विषादः प्रसाद समुद्धे आचंद्रार्क नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी ।

(859)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३८४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्ले श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी भार्या ज्ञाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं ठिकुय उवाडी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्क यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभि । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

धानेराव ।

(860)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक बैजल देन राज्ये श्री वंस

(२१६)

गत्तीय राउत महण सिंह भुक्ति वंसंह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्षे प्रति द्राम
४ खाज सूणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांभत्य । सेठ रायपाल सुत राव राजमल्ल
महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्य दिवहि ।

बेलार ।

भारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

(861)

ओं संवत् १२३५ वर्षे श्री० साधिग भार्या मालही तत्पुत्रा आववीर घदाक आववरा
आववीर पुत्र सालहण गुण देवादि समन्वित आत्म श्रेयसे लगिकां कारितवान् ।

(862)

ओं संवत् १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ प्रौढ प्रताप श्री महुंघल देव कल्याण
विजय राज्ये बाघल दे चैत्ये श्री नाणकीय गच्छे श्री शांति सूरि गच्छाधिपे शाश्व ।
आसीद् धर्कट वंश मुख्य उसभः श्राद्धः पुरा शुद्धीस्तद्गोत्रस्य विभूषणां समजनि
श्रेष्ठि सपाश्वर्वाभिधः । पुत्रौ तस्य वभूवतुः क्षितितले विख्यात कीर्त्ति भूश पूमलह प्रथमो
वभूव नभुणी रामाभिधश्चापरः ॥ तथान्यः ॥ श्री सर्वज्ञ पदार्चने कृत मर्तिद्वाने दयालु
मर्मुहु राशादेव इति क्षितौ समभवत पुत्रोस्य चांपाभिधः । तत्पुत्रो यति संप्रतिः प्रति
दिन गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विशारदो जिन गृहोद्धारोद्यतो योऽजनि ॥२॥

(२२०)

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं । गोष्ठ्याच्च राम गोसाभ्यां कारितो रंग
मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु ।

(863)

संवत् १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्री० उद्धरण भार्यया श्री० देवणाग
पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रीयोर्य श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं
कारितः ।

(864)

अ ॥ संवत् १२३८ पौष वदि १० श्री० आंब कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०
नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रीयार्थ श्री पा ।

(865)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या
लक्षा श्री पालहाया - - - मालहा - - - भार्या श्री ति - - - भार्या - - - न भार्या
पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि ।

(866)

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिख्ये सुधम्म सुत वलहणः । अनुत्तारिण संयुक्तो वाल भद्रो
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राहो मुनिचन्द्र - - परः । तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे ।
घोस सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारयामास
गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

(867)

ओं संवत् १२३५ वर्षे धवर्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या
सुखमति तत्सुत थांथां कालहा रालह घोर सीह पालहण प्रमुख गोसा पुत आम्

(२२१)

वीर आम जाल कालहा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर रालहण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र
देव जस पालहण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेयोर्थं स्तंभ
लगामिमं कारापयामासूः ।

(868)

ओं संवत् १२६५ वर्षे उत्तम गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भायां दूल्हेवि तत्पुत्र मगाकेन
भार्या राजमति रालू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अभय कुमार मेघ कुमार शक्ति
कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अभय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुम्ब सहितेन स्तंभन
माकारितेदमिति - - - ।

(869)

ओं संवत् १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धवर्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या-
धिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम
कारयदात्म श्रेयसे ॥छ॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

(870)

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री रुक्मिणीकांत देवाविदेय श्री १२०१ चैत्ये
श्री प्राग्वाट वंसीय रोपि मुणि म० दसाढाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट
सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवत् ॥

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मण कारिते । पडपो मडनं लक्ष्या कारितः संघ
 आस्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः ख्याताश्च-
 तुर्विंशति शिखराणि ॥ २ ॥ श्रेष्ठो श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पट्टं
 श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद् भूतं ॥ ३ ॥

कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ६ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण दास
 ददिवा रावधो विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्री ॥ १ ॥

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ६ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनन्द
 सूरि देशनया श्री० घाघल श्री० वाला लण दास ददिवा पोवर दिवा प्रमुख आक - - ।

ॐ ॥ नमो बीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-
 गत्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धिः । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदनं वरिष्ठिरादीश्वरः शारद आस्य
 दिद्धि ॥ १ ॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजन्ते । युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्वा प्रसारः सवट प्रसारः । कच्छ
 प्रसारो व्रतति प्रसारः । इमे समे कोटितमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥
 गीर्वाण सालो नहि काष्ठ भावात् । तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः । मृदां विकारा-
 न्नहि काम कुंभश्चिन्तामणिर्नैव च कर्करत्वात् ॥४॥ सूर्यो न तापाकुलता करत्वात् ।
 सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्ण शैलो न कठोर भावात् । नाभ्यंगजातेन तुला-
 मुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विंदून । पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान् ।
 करोत्करान् शारद चन्द्र सत्कान् । कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां
 प्रभवति विद्याः । सुपर्वलोकादिव काम गव्यः । द्वयोऽपि वाञ्छाधिक दान दक्षाः ।
 पुष्पात् पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यतोऽंतराया स्त्वरितं ग्रणेशु । मृगाधिराजा दिव
 मार्गः पूगाः । यद्वा मयूरादि बले लिहानाः । स मारु देवो भवताद् विभूत्यै ॥८॥ राठोड
 वंश व्रतति प्रताना नीकोपमो नीक निकाय नेता । राजाधिराजो जनि मल्ल देव ।
 लिखितं प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मैरसस्सम जनिष्ट बलिष्ठ बाहुः प्रत्यर्थिता
 पनकदर्थन पर्व राहुः । श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्र रश्मिः । श्री मानभूदुदय सिंह
 नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुल्या नदीप । स्तनु जित मधु दीपः
 सौम्यता कौमुदीपः । नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः सितरद मुचुकुंदः सर्व
 नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो । वाच्यस्तद् न्यैरथ वृद्ध राजः ।
 यस्येति शाहिर्विद्वं स्मदद्या । दकवधरो वध्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेम्न कष
 पट्ट शोभा । मधीनरत्संप्रति सूर सिंहः । यो माष पेष द्विषतः पिपेष । निर्मल काष
 कषितार्त्तितांतिः ॥१३॥ राज्य श्रियां भाजन मिदु धामा । प्रताप मंदी कृत चड धामा ।
 संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमल
 रश्च पुर्ण । सिंहो गतौ व्योम वनं च भीती । अन्यथतो नाम जगाम सूर्य । सिंहे त्रियः
 सर्वे जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदीय सेनोच्छलितै रजोभि । मलीमसांगो दिनसाधि नाथ ।
 परो दया वस्तु मिषेण मन्ये । स्नातुं प्रवेशं कुरुते विनम्रः ॥१६॥ अप्येक मोहेतन

शुद्ध वंशौ । धारे चक्रं तृप्ति युतो विशेषात् । स्वयं हताराति वसुन्धरा स्त्री परिग्रहात्
 द्रुहता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः ।
 वहन्ति भक्तिं स्व कुटु वलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्म ।
 सुरेष यद्वन्मधवा विभाति । यथैव तेजस्विषु चण्ड रोचिः । न्यायानुयायि प्विव राम-
 चन्द्र । स्तथापुना हिन्दुषु भूधरोय ॥१९॥ द्रव्य जिनाचौचित कुंकमादि दीपार्थ मा
 जाद्यममारि घोषं । आचामतोम्ला द तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना
 पुत्र वित्ताहरणं न चोरी नन्या समोषो न च मद्य पानं । नाखेटो नान्य वशा निषेवे ।
 त्यागि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्धानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो
 गजसिंह नामा । गत्या गजोऽतीव बलन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री
 ओसबालान्वय वाद्धिचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तद्रः । विज्ञ प्रगेयो चितवाल
 गोत्रः पणेष्वपिस्त्रेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ अस्मिन्निगमे नगरांतरेच । प्रायः प्रभूतैर्द्र-
 विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदाश सेत्रा । हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां
 युग्मं । विद्यापुरः सूरि सुत्राचक्रानां । करे पुरे योधपुराभिधाने । दंतं प्रमाणाव्दवया
 जगारुहः सएष तुयं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमोदः पुण्यात्मनां पुण्य
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो । नाथा मिथो नाथ समाप्त
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शाला । भार्या भवद् गूजर दे सुजाता । रूपेण
 वर्या गृह भार धुर्या । श्री देव गुर्वोः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पुत्रं दिनेन सूर्यं ।
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वज्रांकुरं रोहण भूमि केश । नायाभिधानं सुत राज
 रत्नं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विष्णुक । तदयिनोन्धेपि
 समर्जयतु । गुणान्सपुण्यान्विभुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे । वनिना वनितार
 सार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या गम्या नापाहूये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यसृता-
 मिधश्व । सुधर्म सिंहोप्युदयाभिधोपि । सादूल नामेति च संति पंच । तयोस्तनूजा
 इव पांडु कुर्त्याः ॥३१॥ आसा भिधानस्य वभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतौ द्वौ ।

तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुश्चिचरजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत
 सञ्ज्ञितस्य । मृगे चणाऽमोलक देभिधाना । सुता वभूतामनयोस्तथा द्वौ मनोहराख्ये
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना । सुधम्म सिंहस्य सधम्मिणीति ।
 कुटुम्बिनी साउछ रंगदेवी । प्रिया वभूवादय सञ्ज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत
 रचोर्जयत शत्रुंजये प्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५६ संख्ये । वर्षे हर्षेण ना
 पारुधः ॥३५॥ अबुद गिरि राण पुरे नारदपुर्याच शिवपुरी देशे । योत्रां यग षट् पद
 पद । कला १६६४ मितेव्दे चकार पुनः ॥३६॥ श्रोविक्रमाक्काहितु तक्क पडभू । वर्ष १६६६
 गते फाल्गुन शुक्ल पक्षे । तौ दंपती स्त्री कुरुतः स्मृत्युय । व्रत तृतीया हनि रुप्य दानैः ॥३७॥
 दानं च शीलं च तयोपकार । स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते । नापाभिधान ॥३८॥
 मुखे । यथाहिलोके गुरु पुण्य पूर्णा ॥३९॥ भुजाजिज्जताया निज चारु सपद्मी । न्याय-
 जितायाः फलमिष्टमिच्छता । वांणागषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने । विधापित
 लेखि मूल मंडपः ॥४०॥ चतुष्पिके द्वे अपि पाश्चर्यो द्वयो । नापा भिधानेन विधापिते
 इमे । पित्रार्यशः कीर्त्ति रुभे इव स्वयोः । कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध
 वादि मतं गज केसरी । कपट पंजर भंग कृते करी । भव पयोधि समुत्तरणे तरी । प्रबल
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पथश्चयसागरः । स्व गुण रंजित नायक नागरः ।
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड् । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । तत्प-
 होदयि रवयो विजयंते विजय सूरशः । श्री उचितवाल गोत्रावतस तुल्य
 अनूवाणाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदा विना करे । गगा तरंगालिल सद्य शोभरे ।
 जिनालपोय प्रतिभा बधूवरै । प्रविष्टिना वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पास्त
 प्रभाव । श्री विजय कुशुल विविध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिता । प्रशस्तिरेषा प्रीति-
 रमायि ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति निमः । उदली
 उरुदुस्कीणा वर तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

सेवाड़ी ।

मारवाड़के गोड़वाड़ इलाकेके वाली जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीर जी का मंदिर ।

(८७५)

ॐ ॥ सं० ११६७ चैत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक राज युवराज्ये । समी पाठीय चैत्ये जगतौ श्री धर्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं । महा साहणिय पूजवि - - - पीत्रेण ऊत्तम राज पुत्रेण उप्पल राकेन । मां गढ आंवल ॥ वि० सल खण जोगरादि कुटुंब समं । पट्टांडा ग्रामे तथा मेद्रांचा ग्रामे तथा छेछड़िया मद्रुडी ग्रामे ॥ अरहटं अरहटं प्रति दत्तः जय हारकः ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते समदोय धर्म भाग्याः सदा भविष्यति । इति मत्वा प्रतिपालनीय । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ॥१॥छ॥

(८७६)

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परतोषकारिणी, शांतिः । विबुध पति विनुत चरणः स शांति नामा जिने जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाद्यः श्री मदन हिल भूपतिः । येन प्रचंड दार्ढ्यं प्रराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति सद्वहः । जिन्द राजाभिधो राजा सत्यस शौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत् नूजस्मृतो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः । अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूतां वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले । जज्ञे स त्याग सौभाग्य विख्यातः पुण्य विस्मितः ॥५॥ तद्रुक्मौ प्रत्तनं रम्यं शमी पाटी ति नामकं । तस्त्रास्ति वीर नाथस्य चैत्यं स्वर्गं समोपमं ॥६॥ इतश्चासीद् विशुद्धात्मा

(२२७)

यशोदेवो बलाधिपः । राज्ञां महाजनस्यापि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री षंडेरक
सदच्छे बंधूनां सुहृदां सतां । नित्योपकुर्वता येन न श्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो
बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः । विश्व कर्मैव सर्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः
॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म परायणः । उत्पन्नः थल्लको राज्ञः प्रसाद गुण
मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्बुध्यान संयुतः । श्री मत्कटुक राजेन यन्त्र
दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येत्रयंवक संप्राप्तौ उत्तीर्णं प्रति वर्षकं । द्रम्माष्टकं प्रमाणेन
थल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजाघर्यं शांति नाथस्य यशोदेवस्य स्वत्तके । प्रवर्तयतु चंद्राङ्कं
यावदादनमुज्ज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं स्वर्गपादशां जिनालये । कारितं शांति
नाथस्य विंशं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्मैष लिप्यते राजा पृथिवीं मुनक्ति यो यदा ।
ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

(८७७)

ॐ ॥ संवत् ११८८ असौज यदि १३ रवौ अरिष्ट नेमि पूर्व दिशायां अपवरिका
अग्रे भित्ति द्वार पत्रे चतुर्लभाते कर्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं
पं० अश्वदेवेन ।

(८७८)

सं० १२४४ आसाढ यदि ८ रवौ श्री संभव देव पाणु सुदि ८ चवण - - - लर - -
पथर - - - ॥ - - - सुदि १४ जंसो - - - हेकर जिसं देव ॥ - - - सुदि १५ विरवार
- - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्तिक यदि ५ माणु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि
५ रवौ - - - ण शांभव ॥

(८७९)

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्तिक यदि १ रवौ अथ वाससा नालिकेर ध्वजा खासटी मूल्यं

(२२८)

निज गुरु श्री भक्ति भद्र सूरि मूर्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः । प्रदत्तात् बलाः
५ मास पाटकेने चके व्ययनीयाः ॥ छ ॥

(८८०)

॥ ॐ ॥ सवत् १२६७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ बासहड़ वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि
चांदा सुत नाना - - - - देव सधोरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव
सायूदेव पूसदेव सुत धण देव सहड़ भार्या शीत पुत्रिका साजणि जालह सतीरण
भार्या राहीअई - - - - सेहड़ भार्या अइहव सूमदेव भार्या मदावति सावदेव भार्या
प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़ेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेद
पुत्रिका दैह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के वाली लिखे हैं ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(८८१)

श्री पंडेरक चैत्ये पंडित । जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाग गुरो मूर्ति
कारिता थिरपाल मुक्ति बांछतां सं० ११४६ वैशाख वदि— ।

(८८२)

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरौ अद्येह श्री पंडेरक निवासी श्रेष्ठि गुणपाल
पुत्रीकाया गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया । श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका
कारापिता ।

(२२६)

(883)

ॐ ॥ संवत् १२२१ माघ अदि २ शुक्र अद्य श्री केलहण देव विजय राज्ये । तस्य मातृ राज्ञी श्री आनन्त देव्या श्री पंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि १३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः । तथा राष्ट्रकूट पातू केलहण नडात् ज ऊरामसीह सूद्रग कालहण आहड आसल अणतिगादिभिः तला राभाव्यथस ? गटसत्कात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री पंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा अमियपाल जिसहड-देल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र - - -

(884)

संवत् १२३६ कार्तिक अदि २ बुधे अद्य श्री नडले महाराजाधिराज श्री केलहण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जालहण देवि भुको श्री पंडेरक देव श्री पार्वनाथ प्रतापतः थांया सुत रालहाकेन भा भ्रातृ पालहा पुत्र सोढा सुभकर रामदेव धरणि यवोहोष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगछा ? रासां धोरण हरिचन्द्र वर देवादिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थ विदित निज गृह प्रदत्तः ॥ रालहाश सत्क मानुषै बरुद्भिः वर्ष प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया । शेष जनानां बसतां साधुभिः गोष्टिके सारा कार्य्या ॥ संवत् १२६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनी सोयं मातृ धारमति पुनः स्तंभको उधृत । थांया सुत रालहा पालहाभ्यां मातृ पद श्री निमित्ते स्तंभको प्रदत्तः ।

नाना

मारवाड़के वाली जिलेमें यह ग्राम है ।

(885)

संवत् १२०३ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महंत सूरिभिः प्रतिष्ठितः रुमस्तः ॥

(૨૩૦)

(886)

સંવત ૧૪૨૯ માહ અદિ ૭ ચંદ્રે શ્રી વિદ્યાધર ગચ્છે મોઢ જ્ઞા૦ ઠ૦ રત્ન ઠ૦ અર્જુન
ઠ૦ તિહણા પુત્ર ખોડદ દેવ શ્રેયસે ખાતૃ ટાહાકેન શ્રી પાર્શ્વ પંચતીર્થી કા૦ પ્ર૦ શ્રી ઉદ૦
દેવ સૂરિખિ: ।

(887)

સં૦ ૧૫૦૫ વર્ષે માહ અદિ ૯ શનૌ શ્રી જ્ઞાવકીય ગચ્છે મહાવીર વિંવં પ્ર૦ શ્રી શાંતિ
સૂરિખિ: - - - - - ષમ્મ ન જિન - - - - - ખવતં

(888)

સં૦ ૧૫૦૬ વર્ષે માઘ અદિ ૧૧ સા૦ દૂદા વીર મં મહિયા - - - - - લહરાજ - - -

(889)

સં ૧૫૦૬ વર્ષે માઘ અદિ ૧૦ ગુરૌ ગોત્ર વેલહસ જ૦ જ્ઞાતીય સા૦ રત્ન ખાર્યા રતના
દે પુત્ર દૂદા વીરમ માહ પાદે પલૂના દેવ રાજાદિ કુટુમ્બ યુતેન શ્રીવીર પરિકર: કારિત
પ્રતિષ્ઠિત: શ્રી શાંતિ સૂરિખિ: ।

(890)

॥ ૐ ॥ અથ સંવત્સરે નૃપ વિજય્યાદિત સમયે સંવત ૧૬૫૯ ખાદ્ર પદ માસા શુક્લ
પક્ષે ૭ સાતમી તિથી શનિવારે । શ્રી વૈદ્ય ગોત્રે । શ્રી સવિયા કિણ્ણોત્ત્રજા । મંત્રીશ્વર
ત્રિભુવન તત્પુત્ર પૂના૦ તત્પુત્ર મુહતા ચાંદા તત્પુત્ર મુ૦ પેતસી તત્પુત્ર મુહતા નીસલ ૧
ચાઙ્ગમલ ૨ વીસન પુત્ર મુહતા શ્રી ઉરજન તત્પુત્ર મુહતા પતાગઢ સિવાણે સાકો કરી
મડ । પિતા પુત્ર મુહતા શ્રી નારાઙ્ગ ૧ સાદૂલ ૨ સૂજા ૩ સિઘા ૪ સહસા ૫ મુહતા
શ્રી નારાયણ નુરાણા શ્રી અમર સિંઘ જી મયા કરેને ગાંવ નાળો દીયો મુહતો નારાઙ્ગ
અરહટ ૧ સાઙ્ગમલ દેવ શ્રી મહાવીર નુ સત્તર ખેદ પૂજા સારુ કેસર દીવેલ સારુ દીધો

हींदूनां बरोस । उत्थापे तियेनुं गाईरो--सुंस । तुरक उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस
 बले - - - - को उथाप जो - - - गांव नाणारो चढियो गांव वीधलाणै - - वो-सि-ए ।
 इ जाएन - गांव - दम १ चेढियो - - - - तको उथाप जो । वीजोको उथापसी तिणनु
 गदहउ गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे तत्पुत्र मु० श्री राज - - जणयल - - -
 दा पुत्री जषमी - - - - नाराइण विजी भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री - - -
 गच्छै भहारक श्री सिद्ध सूरि विदमाने - - - । ० श्री - - - - चंद शिष्य चांपा लिपितं ।
 ए - - - - जको - - - तिणु - - - - ।

लालराई ।

भारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें
 यह लेख है ।

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय
 पाल तास्मन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवड़ा पड़ि देह बसी सू० आसधर समस्त सीर
 सहितै खाड़ि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्तं श्री शांतिनाथ देवस्य
 दत्ता १००००० कोपि लुप्यते स पापो न सिद्ध्यनेमगु भवतू ॥ तथा भड़िया उल्ल
 अरहते आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरीथु १ गूजर तृयात्रहि वीलहस्य
 पुण्यार्थं ॥ १ ॥

ॐ ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ बदि १३ गुरौ अद्यहं श्री नडूले महाराजाधिराज श्री
 केलहण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्तिपाल देव पुत्रै सिनाणकं भोक्ता राज पुत्र लाखण

(२३२)

पालह राज पुत्र अभय पाल राज्ञी श्री महिबल देवि सहितैः श्री शान्तिनाथ देव यात्रा
निमित्तं भडिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल
समक्ष एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सो० देवलये०
समीपाटीय - - - पाजून आप्र - - - समक्ष आदान - - - मितस्य २ त - - - हत्या
पालकेन लि - - - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२९९ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण
चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट
उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच
कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं १ वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चत्व
विंशति । द्र०माः वर्षं वर्ष प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य
तदा फलं शुभं भवतु ॥

(२३३)

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नाग श्र । श्रे - - अर सोहेन सय पक्ष दत्त द्र० उत्तरय द्र ३६
समीपाटी मडपिकायां व्याष्टपृथ माण पंच कुलेन वर्षं वर्षं प्रति आचंद्रार्क - - यावत्
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो बीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेड़ा ग्रामे
महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो बीत रागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ६ शुक्र दिने अद्यह
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पत्त सिंह देव राज्येन्न तन्नियुक्त श्री ॥ श्री करण
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पडचा ॥ समो तल पद्विस्थ रंजिका गं
साधू ० हेमाकेन भाद्वि हाथीउड़ी ग्रामें श्री महावीर देव नेवार्थे वर्षं प्रति वर्त्ता - - क द्र
२४ च० अदिमि द्रमा० प्रदत्ता शुभ भवतु ॥ इति श्रुत्वा भुक्ता राजभि सगरादिपि ।
जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य वदा फलं ॥ कपूर विजय लिपतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

(898)

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा सस्या जवस्तव । परिशासतु ना - - परार्थं स्वयापना
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना विनाम समये यत्पाद् पद्मोन्मुख प्रेक्षा संख्य मयूख

शेखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैकादशभिर्गुणं दशशतो शक्रस्य शुभ्रमदृशांकस्य
 स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - - - - नासत्करीलोप
 शोभितः । सुशेखर - - लौ मूर्द्धि रुढो महीभृतां ॥३॥ अभि विभ्रद्रुचिं कातां सावित्रीं
 चतुराननः हरिवर्मा वभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पङ्कज
 स्फुरदनं बुद बाल दिवाकरः । रिपु बध्वदनेन्दु हत द्युतिः समुदपादि विदग्ध नृप-
 स्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर बचनैर्व्यासुदेवाभिधाने बार्धं नीतो दिनकर करैर्नीर
 जन्मा करो व । पूर्व जैनं निजमिव यशो कारयद्वस्ति कुण्ड्यां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम
 गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय । भागद्वयं
 व्यतीर्यत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्मादभूच्छुद्ध सत्त्वो ममटारुयो महीपतिः ।
 समुद्र विजयी श्लाघ्य तरवारिः सद्रुर्मिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन
 जनित लोचनानन्दः । धवलो बसुधा व्यापी चन्द्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भक्त्वाघाटं
 घटानिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुञ्ज
 राजे । श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूज्जरेशे त्रिनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव
 शरण्यः सुरणां बभूव ॥१०॥ श्री मदुर्लभराज भूभुजि भजैर्भजत्य भंगां भुवं इन्द्रैर्भण्डन
 शौड चण्ड सुभटै रारयाभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरेव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेद्रं
 पुरा सेनानोरिव नीति पौरुष परो नैषोत्परां निवृत्तिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु
 बलः श्री मूल राजो नृपो दृष्ट्वांधो धरणा बराह नृपतिं यद्वद्वापः पादपं । आयातं
 भुविकां दिशो कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायानिव रुढ मूढ महिमा कोलो मही
 मण्डलं ॥१२॥ इत्थं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थिनोयः । पाथो
 नाथो वा विपक्षात्स्वपक्षं रक्षा कांक्षै रक्षणे बहु कक्षाः ॥१३॥ दिवाकरस्वेव करैः कठोरैः
 कदालिता भूर कदम्बकस्य । अशि श्रिय ताप हतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्र
 नौघा ॥ १४ ॥ धनुर्धर शिरःमणे रमल धर्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमृष्य
 पारंपरं । समोयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव

लोकोत्तर ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदौर्ण विषुर्विशेषात् बलगतुरंग खुरखात मही
 रजांसि । तेजोभिरुज्जित मनेन विनिर्जित त्वाद्वास्वान्विलज्जित इवाततरां तिरो-
 भूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् ध - लनां दधौ । अनन्योद्धार्य सत्कार्यं भार धुर्यैर्य-
 तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धोदनिः शुद्धया । भीष्मो वंचन वंचितेन
 वचसा धर्मेण धर्मात्मजः । प्राणेन प्रलाय निलो बलभिदो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण
 प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये बाल प्रसाद मतिष्ठिप
 त्परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं । कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्म चमत्कृ-
 ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं
 लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं । पार्यादि पार्थिव गुणान्गणयन्तु सत्यानेकं व्यधा-
 द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचरयन्ति न वाचो यच्चरितं चंद्र चद्रिका सचिरं ।
 वाचस्पते र्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत्पूर्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो भर्तु स्तस्यास्ते हस्ति
 कुण्डिका अलका धनदस्येव धनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हरहास हिमांशु हारि
 भ्रातृकार वारि भुवि राज विनिर्जराणां । वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप
 संपद पहार पर परेषां ॥२३॥ धौत कल धौत कलशाभिरामरामास्तना इव न यस्यां । सत्य
 परेभ्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना कलाः कुवलय
 दृशां संदृश्यन्ते दृशस्तरलाः परं । मलिनित मुखा यत्रोद्बृत्ताः परं कठिनाः कुचा निविड
 रचना नीवी वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि सार्द्धं शुचि कुच कलशैः
 कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्णानि प्रकामं सह घन जघनैर्द्वैवता मंदिशणि । भ्राजते दम्भ
 शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रो जन हन हृदयैर्विभ्रमैर्यत्र
 सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पर्वणां हृद्यरूपा रसाधिकाः । यत्रेक्षु वाटा लोकेभ्यो नालि-
 क्त्वाद्भिदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभिर्गौरवाहौ गुणौघैर्भूपालोनां
 त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्तिः । नाम्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितुं
 भासमाना समानोकामं कामं समर्था जनित जनमनः संमदा यस्य मूर्तिः ॥२८॥ मन्येमुना
 मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः । स्त्रक्षोपि न स्वरूपेण समगन्स्ताति लज्जतः ॥२९॥

प्रोद्यत्पद्माकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रुचिं
 वासुदेवाभिधस्य । अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका
 लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण
 संग्रहः । अभग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निर्व्राण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्वगुणानुगतं
 जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधः । इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल
 सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं धन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-
 निलांदोलितं । गरिष्ठ गुण गोष्ठ्यदः समुददी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ
 कृन्मदिर ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं । इदं मुख मिवा भाति भास
 मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्त पट उजन घाड्डनिकं शुभ शुक्ति करोटक युक्त मिदम् । बहु
 भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन
 गृहेति जीर्णं पुनः समं कृत समुद्रुताविह भवांबुधिरात्मनः । अतिष्ठिपत सोप्यथ प्रथम
 तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्तामुपगतां सितांशु द्युति ॥३६॥ शांत्याचार्यै स्त्रि-
 पंचाशे सहस्रे शरदा मियं । माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध
 नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्विदौ सुदान मवदान धारिदम पोपलन्नाद्रुतं । यतो धवल
 भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघहमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष
 शिरस्य मेक रजतस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मडपा मल तुलामा लंबते भूतलं ।
 तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व थीर ध्वनिर्दुर्गमन्यत्र धिनोतु धार्मिक धियः सद्रूप
 वेला विधौ ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-
 सत्तद्धिता ख्यात नामा । सृत्ताढ्या रुचिर विरतिर्दुः र्यमाध्यवर्षा सूर्याचार्यै र्वरचिरमणी
 वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्बत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री
 ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्वारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक
 जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नागपोचिस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म क्षयार्थं
 स्व संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपाज्जित वित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादि दर्प
 मथनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्णं । भव्य जन दुरित शमनं जिनेन्द्र वर शासनं
 जयति ॥१॥ आसीद्वी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वला विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्तमांगार्चिर्चतः । योषित्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो
 यः श्री मान्हारि धर्म उत्तम मणिः सद्दंश हारे गुरो ॥२॥ तस्माद्भूव भुवि भूरि गुणोपपेतो
 भूप प्रभूत मुकुटार्चिर्चत पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्विदग्ध
 नृपतिः प्रकट प्रतोपः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तः परं भाजनं संभूतः सुतनुः
 सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः । येनास्मिन्निज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा
 तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाल्यते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यविदग्ध नृप पूजितं
 समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावदुत्तं भवते मया प्रपाल्यते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकार्या
 चैत्य गृहं जन मनोहरं भक्त्या । श्री मदुलभद्र गुरोर्यद्विहित श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मि-
 ल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्रार्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्ष्यं ॥७॥
 रूपक एको दंयो वहतामिह विंशतेः प्रवहणानां । धर्म - - - क्रय विक्रये च तथा ॥८॥
 संभूत गंत्र्या देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्पो देयः सर्वेण परिपा-
 द्या ॥९॥ श्री भट्टलोक दत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लक पेल्लक मेतद्
 द्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पडाश पाटक मर्यादावर्तिक - - - प्रत्यर चट्टं धान्या-
 ढकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्मस्य विशोपक स्तथा भारे ।
 शासन मेतत्पूर्वं विदग्धेन राजेन दत्तं ॥१२॥ कर्प्पासिकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि
 सर्व्व भांडस्य । दश दश पलानि भारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आदानादे तस्माद्भाम
 द्वय महत्तः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहितः ॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र
 पोत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते
 दाने फलं दानोत्पोलिते पालनात्फलं । भक्षितो पेक्षिते पापं गुरुदेव धनेधिक ॥१६॥ गोधूम
 मुद्ग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्रोणम् प्रति माणकमेक मत्र सर्व्वेण दातव्यं
 ॥१७॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य
 तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे । श्री मदुलभद्र
 गुरोर्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवती समधि केषु माघस्य
 कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि भानु भरतं भागीरथी

- - - । - - - - त्रैलोक्य लक्ष्मी विपुल कुलगृह धर्मवृक्षालवालं । श्री मन्ना
 भेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु । मन्ये मंगलय माला प्रणत भव भूतां सिद्धि
 सौध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विवसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान
 कुलांबर मृगांक श्री महाराज अणहिला न्वयोवद्भव श्री महाराज आलहण सुत - - - -
 यावली दुर्ललित दलित रिपुवत् श्री महाराज कीर्तिपत्र हेव हृदयानं दिनांदन महाराज
 श्री समर सिंह देवकल्याण विजय राज्ये तत् पाद पद्मोपजीविनि निज प्रौढि मातिरेक-
 तिरस्कृत सकल पीलवाहिका मंडल तस्कर व्यतिकरे । राज्यचितके जोजल राजपुत्रे
 इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने । रिपुकुलकमलेंदुःपुण्यलावण्यपोत्रं नय विनय निधानं धाम
 सौंदर्य लक्ष्म्याः । धरणि तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्षमा पतिः
 सिंह वृत्तिः ॥२ तथा ॥ ओत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भुव भवनोचित
 कार्य वृत्तिः । यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाह्वो - - - - खंडित दुरत विपक्ष
 लक्षः ॥३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण
 नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधु-
 करेण समस्त गोष्ठिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषण श्रेष्ठि यशोदेव सुतेन
 सदाज्ञाकारि निज-तृयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरथेन श्रेष्ठि यशोवीर

परम श्रावकेण संवत् १२३६ वैशाख सुदि ५ गुरौ सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमेण
परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥
नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पंसवर्गैर्मुहु र्यस्ये -- पाव लोकन परैर्नौ तृप्तिरासाद्यते ।
स्मारं स्मारमथो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं स्रोतकं-
ठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतललीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः ।
दत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्त्तापूरेण
पातालं - - - ण महीतलं । तुंगत्वेन नभो येन व्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्ज-
द्वयोमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेपाठय सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोद्यद्बृपालं-
कृतं । ताराकैरवमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नद्यादसौ
मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संचाय ॥

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढ़स्योपरि प्रभु श्री हेमसूरि प्रबो-
धित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चौल्लक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमारपाल देवकारिते
श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल विंश सहित श्री कुवर विहाराभिधाने जैन चैत्ये । सद्विधि प्रव-
र्त्तनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्रार्कं समर्पिते ॥ सं० १२४२ वर्षे
पुतद्वेशाधिप चाहमान कुलतिलकमहाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां०
यशोवीरेण समुद्भूते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवाचार्य शिष्यैः श्री पूर्ण देवाचार्यैः ।
सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मूल
शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे
दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामचं-
द्राचार्यैः सुवर्णमय कस्तूरीरोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ सुभं भवतु ॥ छ ॥

(२४०)

(९००)

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० श्रीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देलहा सलक्षण
क्षांपाख्याः क्षांवा पुत्रो बीजाकस्तेन देवद सहितेन पितृक्षां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय
श्री महावीर जिन चैत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

(९०१)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज
श्री चंदन विहारे श्री क्षीं व रायेश्वर स्थान पतिना भट्टारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री
महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात्
मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेचनीयं पूजाविधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(९०२)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय
राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महामात्यः श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महा-
राज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री महुनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भवेन महं नर-
पतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव
भांडागारे द्रम्माणां शनार्द्धं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भावेन द्रम्मार्द्धेन नेचकं मासं प्रति
करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(९०३)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्णं गिरौ अद्येह महाराज कुल
श्री सामतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव
राज्य धुरामुद्रहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंबड पुत्र ठकुर जस पुत्र
सोनी महणसीह भार्या मालहणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी मालहण गजसीह-तिहुणा
पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

गाल सुहडपाल द्वितीय भार्या जालहण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन भार्या नायक देवि प्रेयोर्थे देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्रा निक्षेप हहमेकं नरपतिना । तत् तत् भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी बलिः भार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(१०४)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अद्योह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पह श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये.....मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उसवाल ज्ञातीय सा० जैसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गां परिस्थित श्री मत्त हुमार विहारे श्री मत्ती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नइणसी सुन्दरदास आस करण लघुभार्या नीलानी पुत्र सा० जगमालदि - - पुत्र पोत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर विवं प्रसिद्धा महोत्सव पूर्वकं कारित अतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारकशिषिला-चार वारक साधु क्रियोद्धार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पह प्रजाकर श्री विजय शान सूरि पह शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतिबोधक तद्वत्त जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोत्रक षणमास अमारि प्रवर्त्तक भट्टारक श्री ६ हीर विजय सूरि पह मुकूटायमान ज० श्री ६ विजय सेन सूरि पह संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शिखरायमाण भट्टारक श्री ६ विजय देव सूरिश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारकस्य ॥

(२४३)

(905)

संवत् १६८३ अषाढ वदि गुरी श्रवण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महणोत्त गोत्र दीपक मं अचला पुत्र म जेसा भार्या जेवंत दे पु० मं श्री जयलला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री धर्मनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक महारक श्री हीर विजय सूरि पहालंकार महारक श्री विजय सेन - - - ।

(906)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी सूत्रधार ऊढारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा । दूहा हाराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(907)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी । महणोत्त गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे समर्पित । श्री सुपार्श्व विवं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० - - ।

(908)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंभ प्र० त० भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(909)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय गामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री दुंयुनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज महारक श्री विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः ॥ श्रीरस्तुः ॥

(910)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरौ अ० लठांक श्री माण त्रिप्र आ० विजयदेव सूरिमिः ।

(911)

चौमुखजी का मन्दिर ।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरौ श्री श्री मृहणोत्र । गोत्र सा० जेसा भार्या समादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठा होत्सव पूर्वकं प्रनिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणा मादेशेन जय अगर गणिना ।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

(912)

संवत् १२३१ मार्गा सुदि ८ म० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आत्म श्रेयार्थं प्रदत्तः ॥

(913)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-आ० श्री मुनिशेषर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य कथा केकृत ॥

(914)

संवत् १५४७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विलास म० सोम रात्रे आः --

(१४४)

(915)

श्री शीले सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा वीर देशिते । महिमा कीर्ति लेखा स्या । तस्य
देवेषु दुर्लभा ॥

(916)

- - श्री पज्जु वधू असोचय - - बहुया भज्जा सुहंकर वणिस्स । सो भन सरावि-
याए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

- - - चंदण वाल नासा - - - पा मति सिरी सा - - पी - - लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है ।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरौ महाराज कुल श्री सामंत सिंह
देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री २ करणे मं० चोरासेल वंलाउल भां० मिगल
प्रभृतयो धर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न
मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २०
उभयादीप ऊर्ध्व सार्थं प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला । पक्षे भीम प्रिय दशविशापक अर्द्धार्द्धेन
ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः
सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

जूना वेडा (मारवाड)

(919)

ॐ ॥ संवत् ११४४ भाद्र सु० ११ अं पतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण
वज्र मानाद्यैर्मिलित्वा सर्व बांधवः ॥ १ ॥ खन्नके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे
कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सूर्ये प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा
भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(920)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उक्तेस ज्ञानीय वापणे गोत्रे संधवी टीलु भार्या टीलुम
दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंदा श्री रादुडिया भार्या मन भगोदे पुत्र
भोजा भा० ना - - - श्री पार्श्वनाथ विंव कारित तथा गच्छ भहारक श्री श्री हीर
विज - - - ।

(921)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री उक्तेस गोत्रे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री०
बेलहू भा० देमलतत्पुत्र श्री० जन सीहेन सप्तपुत्रेण आत्म श्रेयसे मारवाड विंव कारित
प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(922)

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवौ प्र० ग० दीला राजू पु० बीसा भा० विमलादे
पु० डगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विमलनाथ विंव का० प्र० श्री मारवाड गच्छे श्री नय
कीर्त्ति सूरि भि० मालहेणसू ग्रामे वास्तव ।

(११६)

(१२३)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी बाघणे सागासाहा भी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेबादे पुत्र माना कमरसी श्री कुंथुनाथ विंव श्री हीर

(१२४)

सं० १५३० वर्षे सा० व० १ मास ८ ज्ञाति वय० बाहद भार्या राणी पु० वय० वेला प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंव का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः चंपरा ग्रामे

(१२५)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण बीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या कनकादे सुत वडा श्री आदिनाथ विंव कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

(१२६)

सं० १२१५ वर्षे मा० व० १५ उकेश लोढा गोत्र सा० फांजू आ० कपूरी सुत सा० बीरपालेन मा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मनी भातृ दिलहादि युतेन श्री संभवनाथ विंव हरित प्रगिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

(१२७)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथौ इडर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय।
१० श्री। लहुआ सुत मं० जसा मं श्री रामा महा आधेन भार्या रला। दम० कडूआ

(९२७)

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं । श्री श्रीतपागच्छ
युगप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि
दशमी दिन ॥

(९२८)

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ६ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे
पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड मेरादि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य
विंवं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(९२९)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

(९३०)

संवत् १६४४ वर्षे माघ सु० १५ उपकेश ज्ञातीय वाहडा गोत्रे - - - - संभवनाथ
- - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव (मारवाड)

(९३१)

संवत् १५१६ वर्षे पौष सु० ११ दिने गुरुवारे श्री राड्डउड राज्ये श्री सोभ्र वंम पुत्र
श्री श्री वयं रसल्ल नरेस्वरेण बांधव सामंत सहहा पुत्र हरुव मुख सपरिवारेण तेज बाई
भरतार भाटी महिप पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि
उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र धायल मंडाही पुत्र नालहा मं० जाणा मं० दे०
ऊट प्रमुख श्री संघ समु मत्तं पटहो वाद्यमानो चिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लपतं ॥

(२४८)

सांचोर (मारवाड)

(१३२)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज
ने भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी
लहा सुत छोभाकेन वृद्ध भातृ भ० साम वधू घासकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म
यसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

रत्नपुर ।

मारवाड़के जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

(१३३)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्री० उदुरण भार्यया श्री० देवणाग पुत्रि-
या उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(१३४)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्री० आंश कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला० नागू
त्रकया सतीस परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोय
ारितः ॥

(१३५)

ॐ ॥ संवत् १३३३ धर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री
चिंग देव कल्याण विजय राज्ये तन्त्रियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच
ल प्रतिपत्तौ रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पौष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माघव

सुत महं मदन सुत महं धीणा । श्री कुमारसिंह सुत महं ऊदल प्रभृति पंच कुलेन श्री
पार्श्वनाथः देव प्रतिवदु श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि
शिष्य श्री अजित देव सूरिणा मुपदेशेन हह द्वय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्राकं नंदतु ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य
तदा फलं ।

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्न पुरे महाराज कुल श्री सांवत सिंह ।
कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्तमहं कटुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ
प्रतिवदु महा महणा श्री० सांता महं विजयपाल गो० लषेण प्रभृति समस्त गोष्टिकानां
विदितं अक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर न्यातीय श्री० राजा सुत वादा
गांगा सुत मंडलिक मदन प्रवृत्ति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वदु तोडक प्रवेश
द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हहात् द्वितीय हह श्री० गांगा श्रेयोर्थं वादा सत्क देव कुलिका
विंव पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्टिकैः । विदितं हहं समर्पितं । अस्य हह
निक्रड प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाचकेन वीसल प्रीययाय एक विंशत्यधिक
शत मेकं प्रदत्तं । हह मिदं चतुर्भि गोष्टिकैः संमिलतै भूत्वा भाहक संस्था करणीय
स्वात्मीय परिणा श्रीष्टि वादा भुक्त सांघ धिनेः भाहके हहं नगरि नार्पणीयं । तथा
सत्क उत्तपत्ति वयय कर्ण वरपनेष्टिदोषु विना एकाकिनैः न कर्त्तव्या । उत्तपत्ति नद्यया
देव कुलिकाया विधानां नेवकष देवी० दूर । ३ वर्षं प्रतिदातव्या उत्तपत्ति मध्याह्न
हह पतित दुसित पदे कमठाव कागपनीया । यच्च भाहक स्वक द्रव्यं वर्द्धति तत् पोष
कल्याणक दिने देव कुलिकाया विंव योग करणीय । उचितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ रत्न
नालि कायां धवं । न्यां खेपनीय निक्षेप उधार गोष्टिकैः करणीय । अत्र मतान महा
महणा मतं श्रीष्टि सोता मतं घराणे गप्ती वा हस्तेन हह विजयपाल नत । गोष्टिव
लषणा मतं ॥ स

(२५०)

बिलाड़ा (मारवाड)

(९३७)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अमयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये बृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे । महारक श्री जिन कीर्त्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति । श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको दामः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नायं श्री सुमतिनाथ जी देव लो जातः - - - - द्रधर भीषन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रतापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव-श्री भवतु ।

बोईया (मारवाड)

(९३८)

संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवा शुद्धपट्ट वास्तव्य श्रावक साम्रण भार्या जिसवई सुत रोहड रामदेव श्रावदेव कुटुंब सहितेन राम्यदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्रा० २० ।

(९३९)

ओं० संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवी बहुविध वास्तव्य २० रोहिल सुत घांवल तत्सुत गुण घर सालहणाभ्यां मातृ धिरम्मति श्रेयार्थे स्तम्भ लता - - - - द्रा० २० प्रदत्ता ।

(२५१)

कोटार (गोड़वाड़)

(९१०)

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्येह समाण . . . सउ ि . . . या भा०
हनउ . . . पयरा महं सज्जन ठ० मह भा . . ठ धणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च
कुलेन श्रीधात भिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतु-
विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पालनीया इच ॥
अहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥
शुभं भवतु ।

(९११)

सं० १३३६ वर्षे श्रोष्ठि को सीहन चयपने दत्तद्र १२३ - यद्र ३६ स - प - १ मुंडा -
या स्वस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षे वर्षे प्रति - - - - या दातव्याः ॥

किराडू ।

भारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दुओं के समय में इस
स्थान का नाम किराट कूप था और जैनियों के प्रसिद्ध नृपति कुमार पाल ने इस
स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कईएक बहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया
था । काल के चक्र से इस समय उन देवालियों की बहुत बुरी हालत है और सब लेख
भी नष्ट हो गये हैं ।

(९१२)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गम्याय वेधसे । विश्वरूपाय शुद्धा-
य देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जयति शंभो. स (श) इवत् कपाल

विष्णु (भस्म) विभूषणस्य । गठर्वः स कोपि हृदि यस्य पदं कगेति गौरी जितं च चिर-
 वल्कल वर्षं दर्शात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - भूषिते व्यूढ भूधरे । सुरभ्याः
 परमाराणां वंशो - - - नलं कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु
 धिराजो महाराज - - - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गल मिलद्वैरि - - -
 - - - प्रतापो ज्वलदूषुः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमीशाभ्यर्चनीयो भ - - - -
 सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो लवण वैरिहं भवः ॥ - - - - ॥७॥ सिंधु राज घरा
 धार घरणी घर धाम वान ॥ मा - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया
 देव राजेश्वर- - - - ॥९॥ - - - मपहाय मही मिमां । मन्ये कल्प
 द्रुमः प्रायाद दुश्यक - - - ॥१०॥ - - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि
 राजेंद्रो रंजितो - - - ॥११॥ - - - धंधुक - तः । येन दुर्ध्वार वीर्येण
 भूषितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः
 ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सौख्यं राजाख्यः च्य - - - स्व - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा
 दुदय राजाख्यो महाराज - - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड गौड कर्णाट
 मालवोत्तर पश्चिमं । - - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-
 त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण मपि यो राज्य मुद्वधे
 भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - अतश्च नव गत वर्ष ११८६
 १२०० विक्रम भूभतेः प्रतादा उजयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर
 राजेन सिंधु राजपुरोद्वव । भूपो निर्घाज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्भूतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश
 संख्येषु पञ्चादिक शते १२०५ खल । कुमार पाल भूयाळात् सप्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥
 किराट कूप मात्मोयं शिव कूप समन्वितं । निजेन क्षत्र धर्मेण पालयाणास यश्चिरः ॥ २२ ॥
 अष्टा दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशकेऽश्विने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते
 दिनात् ॥ २३ ॥ दंड सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात् । सह पंच नखांश्चैवमय-
 रादिभिरष्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोद नवसरो दुर्गो सोमेश्वरो ग्रहीत् । उच्चांगवरहा
 साक्ष्यां चक्रे चैवात्म सादसौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः । पुनः

संस्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रशस्ति मकरो देतां नरसिंहो नृपाज्ञया ।
लेखको भय (ने] देवः सूत्र धारोस्तु जशोधरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१६ अश्विन
सुदि १ गुरौ ॥ मंगल महा श्रीः ॥

सूधा पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तरफ पहाड़ीके ढलावमें सूधा नामका नामक
चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं ।

ओं ॥ देतांभोजातयज्ञं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तितिन्या गवाक्षः किंवा रौरव्याकृतं
वा महिम मुख महासिद्ध देवी गणस्य । त्रैलोक्यानन्दहेतोः किमुदितमनघं श्लाघ्य
नक्षत्र मुच्यै शंभोर्भालस्थलेन्दुः सुकृति कृतनुतिः पातु वो राज लक्ष्मीं ॥ १ ॥ ईशस्वर्ग-
काव्यनिरनुपमानंद संदोह मूला चंचद्वासौचल दलमयी भूषण प्रौढ पुष्पा । सलला-
वण्योदय लुत्तलिनी पार्वती प्रेम वल्ली लक्ष्मी पुष्पात्वनु दिन मति व्यक्त भक्त्या
नतानां ॥ २ ॥ विकट भृगुट माद्यत्तेजसा व्योम्नि देवनिधि भुवि मणिमय्या मेखलाया ।
क्वणेन । अनुरागित लीला हंसकैस्त्रासयंती फणि पति भुवनांतरचरित्रा वः श्रियेस्तु
॥ ३ ॥ श्री महत्समर्पणं हर्ष नयनोद्भूतां वु पूर प्रभा पूर्वोन्मीथा मौलि गुरय शिख-
राङ्कार तिम्रद्युतिः । पृथ्वी त्रातु मपास्त दंत्य तिमिरः श्री चाहमानः पुरा वीरः क्षीर
समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो भवत् ॥ ४ ॥ रत्ना बल्यमिष नृपातौ तत्क्रमे विश्रु-
तायां धर्मस्थान प्रकर कण प्राप्त पुण्योत्सथायां । श्री नन्दूलाधि पतिर भव
लक्ष्मणो नाम राजा लक्ष्मीलीला सदन सदृशाकार शार्कभरीन्द्रः ॥ ५ ॥ आपाताला
हसमर जलधि मदरो यस्य खड्गो मुष्टिव्याजाद्भुजग पतिना शृङ्खले नावबद्धः ।
निर्ममथोच्चैः सपदि कमलां लीलयोद्धृत्य मत्तरचक्रे नृत्तं रणित कटकः कैलि कंपच्छलेन

॥ ६ ॥ तस्माद्भि माद्रि भवनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य हनूद्वयोथ । गां-
भीयंघैर्य सदन बाल राज देवो यो मृञ्जराज बल भंगमचीकरत्तं ॥७॥ साम्राज्याशा क रेणुं
रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जह्ने यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंध्य शैलाय
माने । मुक्ता शुक्तीदु कांतोऽज्जल रुचिषु लसत्कीर्तिरेवातटेषु प्रौढानेदोपचारो लवण
पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तत्पितृव्य जलयाथ थांधवः श्री महांदुर जनिष्ट
भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायाया विरहितं मुखं द्विषां ॥ ९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु
चभुवस्तत्तनुजो श्वपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्ण चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु
तमसा नैव दोषाकगत्य । तेजो मक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ कैयूराग्र
निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाडं रर व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता ।
वीरेषु प्रसृतेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निर्मल गुणैर्वश्या
प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन खष्टा यस्य वधधित
यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंभतश्चारु चले मध्यस्यायि
ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजय-
द्रोणेषु यः । शंभुवत् त्रिपर संभवं बलं वाडवानल इवांबुधे र्जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल
वसुमती मंडलस्तत्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदथ जिताराति मल्लो णहिल्लः । भीम
क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्र हृद्यार्था भोनिधि रघु कृते बहे पंक्तिः खलानां
॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण
व्यापार पारगमा । पानानि प्रसभं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्त्वोमो यस्य
नरेश्वरस्य तलनां सेनांबु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्वीरुद् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दत्त्वा
दृश ध्यातात्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि वनांतरेषु वित-
तान्या लोक्य हाहेति वाक् सस्मारा तपवारणानि शतशो यद्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥
दुष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरी यो बलाज्जग्राहानुजघान मालव पतेर्भोजस्य
साढाह्वयं । दंडाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय य-
शसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमक्ष्मा-

भृच्छरण युगली मर्दन व्याजतो यः । कुर्वन्पीडा मति बलतया मोचयामास कारागा-
 राद् भूमी पति मपि तथा कृष्णदेवाभिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्मो जलद भ्रमं दधुरहो सैन्येस्य से-
 वारसा यातर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पटा वासा मराल श्रियं । कपं वायु वशेन केतु निवहाः
 शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां चित्ते तु तापं द्विषः ॥ १९ ॥ श्रीमां-
 स्तस्याजनि नर पति र्बाधयो जिंदुराजो यः सुढेरेऽर्क इव तिमिर वैरि वृद्धं बिभेद ।
 यस्थ ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-
 मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूषणानां प्रपाते वाष्पासायै-
 र्घनतति तुलां बिभ्रतीनामरण्ये । दूर्वा भ्रांतिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांबूलीय
 भ्रममिव चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र मतिमान् यः कर्षु का-
 णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद घवला न्यानंद हृद्याननः । पृथ्वी पाल इति ध्रुवं क्षिति
 पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येक्षोऽरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य सैन्या पटः ॥ २२ ॥
 यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं स्रवंती पयः स्वच्छंदं सचराचरेपि भुवने शत्रू-
 स्तूणी कुर्वती । धर्मं वत्समिव स्वकीय मनघं वृद्धिं नयंती मुदा कस्यानंद करी बभूवन भुवो-
 भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजको भूपतिरस्य बंधु विवेक सौध प्रबल प्रतापः ।
 श्वेतात पत्रेण विराजमानः शक्त्याणहिलारुय प्ररेपि रेमे ॥ २४ ॥ त्यक्त्वा सौधमुदार
 केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पल्यंका श्रयणं करेणुषु मुदां स्थानं समंतादपि । यस्या-
 रि क्षितिपाल बाल ललनाः शैले वने निर्भरे स्थूल ग्रावशिरस्सु संस्मृति मगुः पूर्वोपभुक्त
 श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा समजनि वसुधा नायक स्तस्य बंधुः साहाय्यं मा-
 लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः । तुष्टो घत्ते स्म कुंभं कनक मय महो
 यस्य गुप्यद्गुरु स्थ तं हर्तुं नैव शक्तः कलुषित हृदयः शेष भूपाल वाग्भिः ॥ २६ ॥ उदय
 गिरि शिरः स्थ किं सहस्रत्रांशु बिभ्रं वितत विशद कीर्त्तिं मूर्ध्नि किंनु प्रतापः । उपरि
 सुभग ताया उद्गता मंजरी किं कनक कलश आभाद्यस्य गुप्यद्गुरु स्थः ॥ २७ ॥ कनक
 रुचि शरीरः शैलसाराभिरामः फणि पति मयनीयस्यावतारः स विष्णोः । सलिल निधि
 सुसाया मंदिरे स्कंध देशे दधदवनि मुदारामग्रिमः पुण्य मूर्तिः ॥ २८ ॥ सत्रागार

तडाग-कानन-हरमासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्ममे द्विज जनानंदी क्षमा नण्डले ।
धर्मस्थान शतानि यः किल बुध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शील धवलं स्तोतुं
यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव दशांलि तंगतुरग स्तोमः सितः सुश्रुत्रां चंचन्मौक्तिक-
मूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि । प्रेमालाप भवं स्मितं च विशद शुभ्राणि
वस्त्रीकसां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मी श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रियं
पृहदुगच्छीय-श्री जयमगला चार्य-कृतिः ॥ भिषग्विजयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता ।
सूत्र जिषपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्णा ॥

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नन्नेषु
नृपतां । प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तथा तथा वा देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि
मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाह्वो जज्ञे भूभृदुवन विदित
श्चाहमानस्य वंशे । श्रीनदूदूले शिव भवन कृदुर्म सवस्व वेत्ता यत्सा हाय्यं प्रति पद
महो गूजर्जेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाला गुरु स्फूर्ज
श्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्र कर्मा गिरौ । सौराष्ट्र कुटिलोग्र कण्टक मिदात्युद्गम
कीर्त्तस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तथा सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज
इह नृपः केलहणो दक्षिणा शाधीशोदचद्विलिप्त नृपते मान हृत्सैन्य सिंधुः । निर्भि-
द्योच्चैः प्रबल कठितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥ ३४ ॥
आतास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद् भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-
बांबु बाहो पमः । यत्स्वङ्गां बुनिधौ हतारि करिणां कुंभस्थलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो
मराल ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥ ३५ ॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भिष्टा शरैः । सलं
तस्मिन्कांसहृदे तुरुष्क निक्करजित्दारण प्रांगणे । श्री जावाति पुरे स्थिति व्यरचयन्-
द्बुल राज्येश्वर शिचेता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्तत्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः । इन्द्र इव त्रिविध हृदयानन्दी पुरु-
 षोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विरचितो येनेह पुण्यात्मना नाना यंत्र
 मनोज्ञ कोष्ठक तर्तिर्विद्याधरी शीर्षवान् । किं शेषः फण वृंदमेदुर तनुर्वक्ष स्थले वा भुवो
 हारः किं नमण श्रमादुदु गणः किं वेष भेजे स्थितिं ॥ ३८ ॥ कमल वनमिवेदं वप्रशीर्षा
 लि दंभान्निखिल विपुल देश श्री समा कर्षणाय । लिखित विशद चिंदु श्रोणिवन्मत्त
 वैरि क्षितिपति विफला जिस्तोम संख्या निमित्तं ॥ ३९ ॥ तेलयागरस यः स्वर्णजैरा-
 त्मानं सोमपर्वणि । आराम रम्य समरपुरं यः कृतवानथ ॥ ४० ॥ श्रीकीर्त्ति पाल
 भूपति पुत्रो जावालि पुरवरे चक्रे । श्री रुदल देवी शिव मंदिर युगलं पवित्र मतिः ॥ ४१ ॥
 श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्य रमणीयः । श्री उदयसिंह भूपतिरभूत्प्रभा भास्व-
 दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नद्दूल-श्री जावालि पुर-माण्डव्यपुर-वाग्भटमेरु-सूराचंद्र-
 राटहृद्-खेड-रामसैन्य श्री माल-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देशा नामय अधिपतिः
 ॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्रकृष्ट रसना भारः समंतादभूत् क्षीराब्धिः परिरब्धु मुद्गधुरभुज
 करलोल माला मिषात् । द्रष्टुं चानि मिषाक्षि-पकज वनो वास्तोः पतिर्यस्य तां
 विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां क्रांतिं सितांशूज्ज्वलां ॥ ४४ ॥ श्री प्रह्लादनदेवी राज्ञो
 यस्यां गजं प्रसूते स्म । श्री चाचिग देवाह्व तथैव चामुंडराजाख्य ॥ ४५ ॥ घोरो
 दातस्तुरुष्काधिपमददलतो गूर्जरेंद्रैर जेयः सेवायात क्षितीशोचित करण पटुः सिधु
 राजांतको यः । प्रोद्दामन्याय हेतु भर्तु मुख महा ग्रन्थ तत्त्वार्थ वेत्ता श्री मज्जावालि
 संज्ञे पुरि शिव सदन द्वंद्व कर्ता कृतज्ञः ॥ ४६ ॥ तत्पहोदय शैल भानुरनघप्रोद्दाम धर्म
 क्रिया निष्प्रातः कमनीय रूप निलयो दानेश्वरः सु प्रभुः । सौम्यः शूर शिरोमणिश्च
 सद्यः साक्षादितेंद्रः स्वयं श्री मांश्वाचिग देव एव जयति प्रत्यक्ष कल्प द्रुमः ॥ ४७ ॥
 नृभंगेन भयंकरेण विजित प्रत्यर्थि भूमी पतिः श्री मांश्वाचिग देव एव तनुते निर्विघ्न
 वृत्तिं भुवं । द्वैजिह्वयं विदधातु पत्न्यः पतिर्वक्रं वराहो मुखं कूर्मो नक्रततिं करींद्र
 निवहः संघात सौस्थ्यं पर ॥ ४८ ॥ मेरोः स्तब्धं वचन रचनं वाक्पते यस्य तुल्यं पृथ्वी
 भारोद्वरणमसमं पन्नगेंद्रानुषंगि । साक्षाद्रामः किमयमथवा पूर्ण पीयूष रश्मिचिंतता

रत्नं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेश दलनो यः शत्रु शल्य
 द्विषश्चंचत्पातुक पातनैकरसिकः संगस्य रंगा यहः । उन्माद्यन्तहरा चल स्य कुलिशा
 कार स्त्रिलोकी तल आम्ब्यत्कीर्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोलवणः ॥ ५० ॥ श्री माले
 द्विज जानुवाटिक कर त्यागी तथा विग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे नित्यार्च-
 नार्थ प्रदः । प्रोत्तुंगेय पराजितेश भवने सौवर्ण-कृष्णध्वजारोपी रूप्यज मेखला
 वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला संथा-
 स्यां रथः कैलास प्रतिमस्त्रिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः । येन क्षोणि पुरंदरेण
 कृतिना मानंद संवित्तये भाग्य वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥
 कर्णौ दान रुचिर्यलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम मधुरा-
 कारश्च चिन्तामणिः । श्री मच्छाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णन्ति यत्तत्कीर्त्त-
 रपि नूतनत्व मभवद्भूमीभुजां सद्भासु ॥ ५३ ॥ स्फूर्जन्निर्भर झंकृतेन सुभगं तत्केत-
 कीनां वनं मिश्री भूतमनेक कम्ब कदली वृंदेन घत्तेऽत्र यः । आम्नाणां विपिनं च देव
 ललना वक्षोरुह स्पर्द्धये वोद्यस्प्रोढ फलावली कवचितं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरी
 मेरो स्तुल्यस्त्रिदश ललना केलि सदनं सुगन्धा द्विर्नानातरु निकर सन्नाह सुभगः ।
 नृपेणेंद्रेणैव प्रसृमर तुरङ्गोच्चय खुर प्रकं प्रोवर्षी पीठ रतिरस वशात्तेन ददृशे ॥ ५५ ॥
 तन्मूर्दिधन त्रिदशेद्र पूजित पदां भोज द्वयां देवतां चामुंडा मघटेश्वरीति विदिताम
 भ्यर्चितां पूर्वजैः । नत्वा भ्यर्च्य नरेश्वरोथ विदधेस्या मंदिरे मंडप क्लोडटिकंनर
 किन्नरी कल रवो न्माद्यन्मयूरी कुलं ॥ ५६ ॥ सम्बत् १३१९ त्रयोदश शतै कोन विशतौ
 मासि माघवे । चक्रेऽक्षय तृतायायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ संपललाभं घटयतु
 शुभं कुंभि वक्रो गणेशः सिद्धि देयादभि मत तमां चांडिका चारु मूर्तिः । कल्याणाय
 प्रभवतु सतां धेनु वर्गः पृथिव्यां राजा राज्यं भजतु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥
 स श्रीकरी सप्तक वादि देवा चार्य स्य शिष्योऽजनि रामचन्द्रः । सूरिर्विनेयो जय मङ्गलो
 ऽस्य प्रशस्तिमेतां सुकृती व्यधत् ॥ ५९ ॥ भिषग्वर-विजय पाल-पुत्रेण नाम्बसीहेन
 लिखिता ॥ सूत्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसरात्रिणोत्कीर्णा ॥

घटियाला ।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है ।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था वही यहां पर प्रकाशित किया जाता है ।

घटियाला ।

ओं सग्गापवग्गमग्गं पढमं सयलाण कारणं देवं । णीसेस दुरिअ दलणं परमं गुरुं
णमह जिणजाहं ॥ १ ॥ रहुतिलओ पडिहारो आसी सिरिलक्खणोत्तिरामस्स । तेण पडि-
हार वन्सो समुण्हं एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विपो सिरि हरिअन्दो भज्जा आसीति खत्तिआ
मद्दा । अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि इड्डिलो एत्थ ॥ ३ ॥ अस्सवि णरहड्ढ णांमो जा
ओ सिरि णहड्ढोत्ति ए अस्स । अस्सवि तणओ ताओ तस्सवि जसवट्ठणो जाओ ॥ ४ ॥
अस्सवि चन्दुअ णांमा उप्पणो सिल्लुओ वि ए अस्स । कोडोत्ति तस्स तणओ अस्स
वि सिरि भिल्लुओ जाइ ॥ ५ ॥ सिरि भिल्लुअस्स तणओ कक्को गुरु गुणेहि गारविओ ।
अस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिविआसहसिअ महुरं
भणिअं पलोइअं सोम्मं । णमयं जरस्सण दीणां रासोथे ओथिरामेत्ती ॥ ७ ॥ णोजम्पिअं
ण हसियंण कयं ण पलोइअं णम्सरिअं । णथिअं णपरिवत्त मिअं जेण जणे
कज्ज परिहीणं ॥ ८ ॥ सुत्थादुत्थादि पया अहमातहउत्तिमा त्रिसोक्खेण । जणणिक्ख जेण
धरिआ णिक्खंणिय मण्डले सव्वा ॥ ९ ॥ उअरोहरा अमच्छर लोहे हिमिणाय वज्जि
अंजेण । णक ओदो एह विसेसो ववहारे कावमण यम्पि ॥ १० ॥ दिअवर दिएणाणुज्जं
जेण जणं रंजिज्जण सयलम्पि । णिम्मच्छरेण जणिअं दुट्ठाण विदण्ड णिट्ठण ॥ ११ ॥

घनरिद्ध समिद्धाणं वि पउराणं पिअकरस्स अअहिअं । लक्खं सयञ्जु सरिसं तणंच सह
जेण दिट्ठाईं ॥ १२ ॥ णवजोठवणरूअपसाहिणुण सिंगार गुणग वक्केण । जणवयाणज
मलज्जं जेण णेह सच्चरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरु तरु णाण सह सही गय वयाण तण
ओठव । इय सुचरिण्णेहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्वो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणसया
सम्माणं गुण थुई कुणं तेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण धणणिवहं ॥ १५ ॥ मरु
माडवत्तल तमणी परिअका अउजगुञ्जरित्तासु । जणिओजेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि
अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिऊण गोहणार्हं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ
जेण विस मेवढणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा माय दमहु अविं
देहि । वरद्वत्तुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्टारह
समग्गलेसु चेतम्मि । णक्खत्ते विहु हत्थे वहवारे धवल वीआये ॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण
हट्ठं महाजण विप्यपय इवणि बहुलं । रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किञ्चि विट्ठिए ॥ २० ॥
मड्डोअरम्मे एक्को वीओ रोहिन्स कुअगामंम्मि । जेण जसस्स व पुजांए एत्थम्मा स-
मुत्थविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठलणं । कारविअ
अचल मिमं भवणं भत्तीए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेए भवणं सिट्ठस्स धणेश्वरस्स
गच्छम्मि । सह सन्त जम्भ अम्भय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ इलाधये जन्म कुले
कलंक रहितं रूपं नवं योवनं । सौभाग्य गुण भूयः शुचि मनः क्षांति
यशो नञ्चता ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गापवर्गं मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं । निःशेष दुरित दलनं परमं गुरुं नमस्त
जिन नाथम् ॥ १ ॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार
वंशः समुन्नतिमत्र संप्राप्तः ॥ २ ॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत् इति क्षत्रिया भद्रा ।
अस्य सुत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट्ट नामा जातः श्री नाग
भट्ट इति एतस्य । अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

६ नामा उत्पन्नः सिल्लुकोपि एतस्य । झोट इति तस्य तनयः अस्यापि श्री भिल्लुका
 ॥ ५ ॥ श्री भिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्वितः । अस्यापि कक्कुक नामा
 । देव्यामृतपन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाश हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं सौम्यं । नमनं
 । न दीनं रासः स्थेयः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न प्रलोकितं
 भूतम् । न स्थितं न परिभ्रातं येन जने कार्य परिहीनं ॥ ८ ॥ सुस्था दुस्था द्विपदा
 मा तथा उत्तमा अपि सौख्येन । जनन्येव येन धृता नित्यं निज अण्डले सर्व ॥ ९ ॥
 रोध राग मत्सर लोमैरपि न्याय वर्जित येन न कृतो द्वयोर्विशेषः व्यवहारे कदापि
 गर्पि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञ येन जन रक्तवा सकलमपि । निर्मत्सरेण जनितं दुष्टा-
 पि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्ध समृद्धानामपि पौराणां निज करस्याभ्यर्थितम् ।
 शतं च सदुशत्वेन तथा येन दुष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन ऋद्धार
 । कक्ककेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नेह संचरितम् ॥ १३ ॥ बालानां गुरुस्तरुणानां
 सखा गत वयसां तनय इव । प्रिय सुचरितैर्नित्यं येन जनः पालितः सर्वः ॥ १४ ॥
 नमता सदा सन्मानं गुणस्तुति कर्त्तवा । जल्पता च ललितं दत्तं प्रणयिभ्यो धन-
 हः ॥ १५ ॥ मरुमाडवल्लख मणी परि अंका अज्जगुर्जरेषु । जनितो येन जनानां
 रित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोधनानि गिरौ जाला कुलाः पल्लयः । जनिता
 विषमं वटनाण कमण्डले प्रकटम् ॥ १७ ॥ नीलोत्पल दङ्गन्था रम्यमाकन्द मधुप
 । वेरक्षु पर्णच्छन्ना एषा भूमिः कृतायेन ॥ १८ ॥ वर्ष शतेषु च नवसु अष्टादश सम
 । क्षेत्रे नक्षत्रे त्रिधु भस्थे बुधवारं धवल द्वितीयायाम् ॥ १९ ॥ श्री कक्ककेन हहं
 जनं विप्र प्रकृति वणिज बहुलम् । रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं कोर्त्ति वृद्धै ॥ २० ॥
 । वरे एको द्वितीयो रोहिन्स कूप ग्रामे । येन यशस इव पुञ्जावेतौ स्तंभौ समुत्तव्यौ
 ॥ तेन श्री कक्ककेन जिनस्य देवस्य दुरित निर्दलनम् । कारितमचलमिदं भवनं
 या शुभ जनकम् ॥ २१ ॥ अपितमेतद्वधनं सिद्धस्य धनेश्वरस्य गच्छे । सह शांत जम्बु
 । क वनि भाटक प्रमुख गोष्ठ्यै ॥ २२ ॥ श्लोघ्य जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नव
 नं । सौभाग्यं गुण भावनं शुचिमतः क्षान्तिर्यशो नम्रता ॥ २३ ॥

(२६२)

पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है । यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं ।

(946)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या यनी पुत्र केलहा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केल्ला पींडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । साः जीवा श्रेयोर्थं सा० जीवा दिने ४० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे । रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या पेतलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास - - - - - वाई लाछल दे श्रेयोर्थं पींडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं । श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्री० वा० लाछलदे श्री० ।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या पेतलदे ।

(२६३)

लाछलदे ससारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन सी रामदास शहंस कर्ण पीडरवा
ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्रेयोर्थे श्री तपा गच्छे श्री
हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सू० शुभ भवतु
कल्याणमस्तु ॥

(१४९)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुके श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण सालजी
विजय राज्ये प्राग वशे सा थाया भार्या गांगादे पुत्र सा - मा भार्या कसमीरदे पुत्री
रभी पीडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित आई गांगादे श्रेयोर्थे श्री
तपा गच्छ श्री कमल कलस सूरि शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥

(१५०)

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे भागुण वदि ११ शुके श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उदह
सिंघ जी विजय राज्ये प्राग वशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाल
भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण सी सहस करण - - - पीडर वाडा ग्रामे श्री
माहावीर प्रासादे देहरी करापित श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे आणंद
विमल सूरि - - - -

(१५१)

आनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्राग्वाट वंशे दयवहारि सागा सूनुः प्रसूनोज्ज्वल कांत
कारिः । श्री पुण्य पुंजा जनि पूर्ण सिंह स्वस्य प्रिया जालहण देवि नाम्नी ॥ १ ॥ मद्भर
भद्रारत रोरु - - - - कलापः किल कुर पालः । जाया धर्म मोदिकन्दो प्रमुक्ता तस्या
भवत्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ सद्वयी २ वामामृतैः सुद्विती लोक हितौ सतां मतिः ।

सनयो विनयौ चिती क्षणी विजयते तनयो तयोरिमौ ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्नं
 रत्नाभिधो धनं । धनाण्य जन मूढ - राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्विती-
 येंदु कांति कांच गुणोच्चयः । धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी
 धारल देव्यौ जात्यौ तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यौ
 ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५-तेजा पासल वास जालहणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिसा गुण
 सरु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्धाटाभिध जाति शृंग शृंगार
 शीखरः । पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला मिधः सूनु स्त-
 त्पुत्रो भावठोऽशठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सूचितः ।
 लोवाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सू
 देवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते दययो पेतै शीलाद्युद्यम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा
 देवी तनुजो मनुजो चित्त चारु लक्ष्मणो पेतः । अमरो अमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि
 पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे धरा धीशे
 प्राज्य राज्य - रीक -- ॥ १३ ॥ आस्याहुजाभ्यां धनि पूर पाल लोवाभिधाभ्यां सद्गु-
 पासकाभ्यां । ग्रामेऽग्रिमे पीडर बाढकाख्ये प्रसाद - - - विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥
 विक्रमाद्वाण तर्कान्धि भूमिते वत्सरे तथा । फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिथौ
 ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्धय भ्युदयैक दायकः, श्री वर्द्धमान शचरमो जिनेश्वरः । श्री मत्तपः
 संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा चहादीह ॥ १६ ॥ आरवींदु १७५६११ । श्री
 वर्द्धमान जिन नायक मूर्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंवर चैत्यं
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

राज श्री अमर सिंह जी लषावता देहनारा देहयी आरोहतो - कमनइ काथोछइ ।
 आजक - वान देरा माहि घोल्सइ तिनइ गधइ ड - गाल छइ संवत् १७२३ वर्षे
 मगसिर सुदि - ॥

(२६५)

वीरवाडा (सिरौही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

(953)

सं० १४१० वर्षे ध्ये० महणा भा० कपूर दे० पु० जगमालेन भा० सुतलदे पु० कडूया देलहा सम वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कछोलीवाल गच्छे भ० श्री नरचंद्र सूरि पहे श्री रत्नप्रज सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगलं ॥ प्राग्वाट ज्ञातीयः ॥

वसंत गढ़ (सिरौही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर ।

(असन के दोनो तरफ पीठ पर)

(954)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ वृधे राणा श्री कुंज कर्ण राजे वसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट वय० ऋगडा भा० मेवादे पुत्र वय० संडनेन भा० माणिक दे पुत्र कान्हा पौत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट वय० घणसी भा० लींवी पुत्र वय० भादाकेन भा० आलहू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री सांतिनाथ विव कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पहालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पहे प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेखर सूरि गुरुभिः ।

पालडी (सिरौही)

(955)

सं० १२४६ वर्षे माघ सुदि १० गुरौ अद्योह श्री नडूले महाराजाधिराज श्री कैलहण देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री जयत सीह देवो विजयी ज - - तत्पादपद्मोपजीविन महा

(२६६)

श्रीरामाय बालहण प्रभृति पंच कुलेन महं सुम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर
प्रदत्त द्र० १ पाह्यली मध्यात् । बहुभिर्वसुधा मुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य
यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वरषे जेठ सुदि १० सोमे अद्योह चद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आलहण
सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री घेता प्रभृति पंच कुल शासन
मभि लिख्यते यथा मह श्री घेताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - श्री पार्श्व
नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य
तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० ब्रा अलिणव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे
सणा - - - - - कलहा ।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ओं । श्री भिल्लमालं निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्मो लं
(च्छों) - राज पूजितः ॥ आकरे गुण रत्नानां वधु पद्म दिवाकरः उज्जुजकस्तस्य पुत्र
स्यात् नम्मराम्मै ततो परी ॥ जज्जुं सुत गुणाद्ये वामनेन प्रसाद्वयम् । दृष्ट्वा चक्रे गृहं
जैनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्यत् १०६१ - - - - सपुने - ।

उधमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरी श्री नाणकीय गच्छे उधण सदधिष्ठाने । श्रीपार्श्व-
नाथ चैत्ये ॥ घनेश्वर पुत्रेण देव धरेण धीमता । सयुक्तेन यशोभद्र आलहा पालहा

(२६७)

सहोदरैः । यसो भटस्य पुत्रेण । साहुं यरा घरेण भा पुत्र पौत्रादि युक्तेन धम्म हेतु मह
मना ॥ भगनी धारमत्याख्या । भूतश्चैत्र यशो भटः । कारितं श्रेयसे ताभ्यां । रम्येदस्तुंग
महप ॥ छ ॥

वर्घीणा (सिरौही)

(१५९)

संवत् १३५९ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वाघ सीण ग्रामे महा-
राजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काजे वर्त्तमाने सोलं० घातट पु० रज-
रसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोलं० सी माल पु० कुंताघारा सो० माला पु०
मोहण त्रिभुवण पट्टा सोहरपाल सो० धूमण पट्ट पायत् वणिग् सीहा सर्व सोलंकी समु-
दायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम
सेई २ तथा धूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० लं० अरहट प्रति
गोधूम सेई ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महो-
त्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दातव्यं पालनीयं च । आचंद्रार्कं ॥
यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

लाज-नीतोड़ा (सिरौही)

(१६०)

संवत् १२ वर्षे ११ माह सु० ६ श्रे० जितू आसल प्रति पतैमधिक कुजर सीह
पतिना । पाऊ त्नु ।

(१६१)

मन्दिर घर लषम सिंघेन करावी ।

(२६८)

नोदिया (सिरौही)

(962)

संवत् ११३० वैशाख सुदि १३ नन्दियक चैत्य साले बापी निर्मापिता सिव गणैः ।

(963)

ॐ ॥ सतिणि सील वता च । सद्भाव भक्ति संयुता ॥
जिन गृहे सैल स्तंभा द्वी । मंडप मूले थापिताः ॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर ।

(964)

ओं ॥ संवत् १२०१ भाद्रवा सुदि १० सोम दिने निवा भार्या वरा पुत्र मोतिनिया
स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते ॥ संवत् १२६८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुत रा० कमण
धेयोर्थे पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः ॥ श्री - - - - सूरि श्री - - ।

कोटरा (सिरौही)

(969)

॥ पूर्वं हीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय
श्री विजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात् वीर पल्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे
पिप्पालचार्य श्री वीर प्रभ सूरिभिः स्थापितः । संवत् १४६५ वर्षे ।

(१६६)

वरमाण (सिरौही)

(967)

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट झातीय श्रे० साजण भा० रालू पु० पून
सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन भा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन
युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

(968)

आं० संवत् १३४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्मणीय गच्छे भट्टारक श्री मदन प्रभ
सूरि पहे श्री नंदिश्वर सूरि पहे श्री विजय सेन सूरि पहे श्री रत्नाकर सूरि पहे श्री
हेम तिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरौही)

(969)

संवत् १३०८ वर्षे उदे सीह सुत पदम सीह ।

माकरोरा [सिरौही]

(970)

श्री सुविधि जिन प्रासादात् माक्रोड़ा मध्येः । संवत् १५६० वरषे कमल कलसा गच्छे
भट्टारिक श्री मत् रत्नसूरि प० कमल विजय गणि देहाया ० संधाति चौमासु रह्या । महुता

(१७०)

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-
न्नाथ सा० लषमा सा० राजा लाधा संपा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा
भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जगी
समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संचस्य कल्याणाय भवतु ॥

धवली [सिरौही]

(१७१)

॥ सं० । १८६१ वैशाख शुक्ल ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जी. जौड़ु । श्री संधेन
प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंवा उमा सा । तलका वाला प्रमुख
कारापितम् तस्यो परी धवज टंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेण भट्टा० । श्री
वजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० डुंगर विजय वां० । नयु प्रमुख,
इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरौही]

(१७२)

संवत् १९६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुशल कातिक चैमासु
कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जरावल पार्श्वनाथ [सिरौही]

(१७३)

संवत् १९८३ वर्षे प्रथम वैशाख शुदि १३ गुरौ श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुङ्ग सूरिणां
पदोद्धारण श्री जय कीर्ति सूरिश्वर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

(२७१)

डीया सा० संग्राम सुत सा० सलषण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा०
डीडा सा० पीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीडा सुत सा० नाग राज सा०
काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर
सिंह भार्या कउनग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ
स्य चैत्ये देहरी १ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्द्धमान भद्रं मांगलिकं भूयात् ॥

(७७४)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री
भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कल वर्गा नगरे कोठारी बाहउ सामत स नाने को नरपति
भा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल झातीय कटारीया गोत्र श्री
जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥
ओं कटारिया गोत्र वर महीयं नास्तु पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर गुरुगुरव
अदेयाः श्री छालज मंडन मात्र शालं ॥ १ ॥

(७७५)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन
सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे श्री उसवाल झातीय सा० घणसी संताने सा०
जयता भा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोषसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका
कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात् ।

(७७६)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे भाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

(२७२)

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्ग्य नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलुसी संताने सं० रतन भार्या वा० वीरु सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस्र राज ।

(१७७)

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे मृदा० श्री रत्नाकर सूरि-
णामनुक्रमेण श्री अभयसिंह सूरिणा पढे श्री जय तिलक सूरेश्वर पढावतस मृदा० श्री
रत्न सिंह सूरिणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्वय मडन श्री० पेत सीह
नंदन श्री० देवल सीह पुत्र श्री० षोषा तस्य भार्या सं० प्रणल देव्ये तयोः सुता सं० सादा
स० दादा स० मूदा स० दूधाभिधै रतेः कारि ।

(१७८)

स्वस्ति संवत् १५०८ वर्षे आषाढ सुदि १२ शने सू० काला सुहडा नरसी भीमा
मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांचा सूरानित्य प्रणम्य अष्टांग सकुटुंब ।

(१७९)

ओं ॥ सं० १८५१ वर्षे आषाढ सुदि १५ दिने श्री जीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार
कारापितः सकल महारक पुरंदर महारक जी श्री श्री श्री श्री १०८ - शत्रु राज्येन
जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया परचीवी माल लीघो श्री जीरावल वास्तव्य
मु० । चजा । को । दला । सा० कला । सा० रसा । सा० सचा । सा० जोयन सा०
अणला । सा० वारम । सा० रामल । - - - यकी काम कारापितः । जोसी दुरगा ।
मातृ राजा जात्रा सफलः ॥

(२७३)

श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

(९३०)

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्तिक वदि ५ वुधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वैराग्य
सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पाति शाहि श्री अकबरा-
भिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेश यहुज्जयपुर धर्मोपदेश कर्णेन पूर्वक पुस्तक
कोश समर्पणं डावराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्ष पडमासिकामारि
प्रवर्तनं सर्वदा श्री शत्रुज तोर्य मुंडकाभिधान कर निवर्तनं जीजियाभिधान करकर्तन
निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनसदैव वंद्य रूप निवारणं चित्थादि धर्म कृतानि
प्रवर्त तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद शुक्लैकादशी दिनेजात
निवाणां शरीर संस्कार स्थानासन्न फलित सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्वराणां
प्रति दिन दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दर्शनादिकै जीय प्रभावाः स्तूप सहिताः पादुकाः
कारिताः पं० मेधेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजे
महारक श्री विजयसेन सूरिभिः ओं श्री विमल हर्ष गणि ओं श्री कल्याणविजयगणि ओं
श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पुज्यमानाश्चिधरं नन्दतुं ॥ लिखता प्रशस्ति.
पद्माणंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं भवतु ॥

श्री कापडा पार्श्वनाथ ।

(९३१)

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथी सोमवारे स्वाती महाराजाधिराज महाराज श्री
गजसिंह विजय राज्ये ऊकेशे रायलारवण संताने मांडागारिक गोत्रे अमरा पुत्र भांना केन
भार्या भगतादेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोठठा पौत्र सारा चंद खगार-नेमि दासादि

(९७४)

परिवार सहितेन श्री श्रीकपटहेटके स्वयंभु पार्श्वनाथ चैत्ये श्री पार्श्वनाथ
... .. सिंह सूरि पहालकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः शुभसन्तो भवतु ।

अलवर ।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है ।

(९७५)

सं० १२५५ माघ सुदि १ - - - - ।

(९७६)

सं० १२६४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - वंशे पिता मही प्याऊपिउ पितृ सोला श्रेयोर्थ पुत्र
नाग दिन् - न भा० जागत्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्श्वनाथो विषं कारितः ।
प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनदेव सूरिभिः ।

(९७७)

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्री० १ माला भार्या सिंगार देवी
पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शान्तिनाथ विषं कारित प्रतिष्ठित श्री सिंहदत्त सूरिभिः ।

(९७८)

सं० १३२४ वैशाख सुदि ३ धरुपति कुलेन साणे छोटा - - - - -

(९७९)

सं० १३७८ जेष्ठ वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग - । गोत्रे - - - सा० खिन्न घर
सिर पाल भार्या पुत्र कीलहा मुणि चंद्र लाहड वाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थ श्री
शान्तिनाथ विषं का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(१७५)

(१८७)

सं० १७८० वर्षे फागुण सुदि १० -- उ० छत्रवाल गोत्रे सा० तिहुणा पु० सोना भा०
सोनादे - - - - - शांति नाथ विंभ - - - - -

(१८८)

सं० १७८९ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकरिया गोत्र सा० सधारण तत्पुत्र सा० सांगा
श्री आदिनाथ विंभ करापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(१८९)

सं० १५०१ पौष वदि ६ बुधे श्री हुंभड ज्ञातीय परज गोत्रे ठ० कडुआ भा० कामल दे
सुत ठकुर पीया भा० रुपिणी -- सुसीया पीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० चमकू
सुत लखना घरमा धना वना देवी । करमा भा० गांगी लखमा भार्या भोली एवं समस्त
परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री सभव नाथ विंभं कारापित स्व पुण्यार्थं प्र० श्री
सर्व सूरिभिः ।

(१९०)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भार्या पूना पु० हांसा-
केम निज पूर्वजा जेमधर मोहा प्रीत्यर्थं श्री आदिनाथ विंभं कारितं श्री
गच्छे भ० श्री देव सुंदर सूरि पदे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः ।

(१९१)

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० खडबड गोत्रे सा० पाल्हा भार्या
पाल्हादे पुत्र सं० साद्य सायर सोठारय आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंभं कारितं प्र०
श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः ।

(२७६)

(११२)

सं० १५१९ वर्षे अषाढ वदि ९ शनौ अस्तपुर ज्ञा० डीघोडीया - - - सा जगसी
सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु०
नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंब का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः ।

(११३)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश जातीय नाहर गोत्रे षेता पु० रुहा
भार्या रजलदे खुकांषर अमरा - - - श्री शांतिनाथ विंब कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे
श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(११४)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल
पु० सुर जल सीहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पृजय विंब करापितं
प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

(११५)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल जातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रून् सुत हेमा
हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंब का० प्र० श्री सूर्यकर
गच्छे श्री धन प्रभ सूरिभिः । नेउिपुर नगरे ।

(११६)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ सुदि २ सोमं श्री उकेश वंशे संस्राल गोत्रे सा० मेढा पुत्र
सा० हेरुकिन आतृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंब का० प्र०
श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(२७७)

(११७)

संवत् १५५८ वर्षे -- सु० ११ गुरी उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र साण तथ सुत साठबू-
हडेन महाराज महिय -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंव कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पढे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

(११८)

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढा गोत्रे तउधरी लाधा भार्या
मैह्याणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयर्थे श्री अञ्जल गच्छे श्री भाव सागर
सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंव का० प्र० श्री र --

(११९)

सं० १६६१ वै० सु० ज० भ० सचटी - - - ।

(१०००)

सं० १६३१ माघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथी १२ बुधे श्री ऋषभ जिन विंव कारित अलवर
नगर वास्तव्य श्री संघेग मलधार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौम महारक श्री जिन
चंद सागर सूरि पढे सोमिनी श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं
मधुवन मध्ये ।

पटना म्युड्यम ।

(५२५)

संवत् १८७७ शके १७३६ प्रवर्तमाने शुभ च्येष्टमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथी सोमदिने
श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं महारक श्री जिनहृष सूरिभिः ॥

संवत् १८११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पाद न्यासः । प्रतिष्ठितः
स्वरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पास कुमारजी ॥

उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह “जैन लेख संग्रह” एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रर्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनोंसे निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान हैं, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनों ने “संग्रहमें” मदद दी है उन सभीका मैं कृतज्ञ हूँ । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता

ई० सं० १८१८

संग्रहकर्त्ता

श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची ।

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	
ओसवाल—११, १८, २४, ३५, ४६, ५१, ६४, ७६, ८५, १०५, १०६, ११५, १२३, १३३, २१२, २२६, २३८, २४२, २६३, २६६, २७७, २७६, २८७, ३८६, ४०१, ४०३, ४०६, ४११, ४१६, ४२०, ४३१, ४४५, ४५०, ४६०, ४६४, ४७५, ५६०, ५७७, ५७८, ५८८, ५८२, ५८७, ५८८, ६०४, ६३५, ६६२, ६६५, ६६८, ६८२, ७०५, ७०७, ७०६, ७११, ७३१, ७३६, ७६५, ७६६, ८०४, ८१८, ८२१, ८२७, ८७५, ८७६, ८८६		{ आयचनाग ७७, ५६६		
			{ आईचना ५३४, ६२३	
			{ आईचणी १५६	
			{ आभू स० १०७	
			{ उचितवाल ८७७	
			{ कदारिया १४, ६३७, ६७७	
			{ कठउड ४३०	
			{ कंठउतिया ४२६	
			{ कठारा १६०	
			{ काकरेवा ८०, ८२४	
			{ काकरिया ६७, ६८, २३५, ८८८	
			{ कांतल ६७	
			{ कावेडीया ७१६	
			{ कुहाड २७३, ८२९	
			{ कुर्कट ६१०	
			{ कोठारी १३३, ६७४	
			{ कोष्ठागार ६४५	
			{ खडबड ६६१	
		{ गणभर ८२१		
		{ गहलडा २६७		
		{ गहिलडा ५८७		
		{ गेहलडा ५७५		
		{ गादहिवा ७८२, ६२८		
ओसवाल [लघुशाखा]				
गोत्र				
गौधी मोती ६५२				
नागडा ६५४, ६५५				
ओसवाल [वृद्धशाखा]				
५६, ७१, ११३, ११४, १३० ५२६, ६१२, ६५६, ६६८, ६७७				
ओसवाल [गोत्र]				
आदित्यनाग ... ५०, ४७१, ६२५, ७२६				
[चोरवेडीया शाखा] ... ४६७				

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
श्रीमाल— ३, ६, ९, २४, ५५, ६६, १००, १०४,	
१११, ११६, ११७, १२५, १२७, १३२,	
१८०, २५७, ३८३, ४०७, ४२२, ४२३,	
४२७, ४३०, ४३७, ४५२, ४५४, ४७६,	
४८१, ४८४, ४८८, ५०६, ५१०, ५१६,	
५३२, ५३६, ५५४, ५६१, ५७२, ५७४,	
६०६, ६०८, ६१४, ६३०, ६५३, ६७३,	
६७४, ६८२, ६८०, ६८१, ६८३, ६८७,	
७४०, ७४१, ७४५, ७५३, ७६८, ७६९,	
८२५, ८२७, ८६६, ८७०, ८८५	

श्रीमाल (लघुशाखा)	२५, ६२९
श्रीमाल (वृद्धशाखा)	२६५, ६८५

श्रीमाल (गोत्र)

गोबलिखा	४१२
गेवरिया	२८४, ४१३
खंडालेखा	८३०
जम्बहरा	३६४
जरगड	१६३
टांक	१२
डउडा	३८
होर	४३
दोसी	३६१, ७६१
धामी	६७५
श्रीधीद	५२८
नलुरिया	६२४
पाताणी	७५०
पापड़	७७०

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
फोफलीया	७३७ ८२३
बदलीया	२००, २३१, ३२१
बहरा	५२१
भाडावत	५७७
भाडिया	४२, २८९, ७६३
मउवीया	४१४
महता	२१८, २६०
महरोल	६६
माथलपूरा	११०
मौठिप्पा	१८७
वहकटा	४६३
साह	७८
मिथूड	४४७, ५०२, ५२४
श्री श्री	११९, २६२, ६६४, ६६६

, , पल्लयड (गोत्र) ...

प्राग्वाट (पोरवाड)	२०१५, ४०, ५२, ५४, ५८, ७२, ९०, ९१, ९४, १०६, १५२, १५७, २८०, २८३, ३६२, ३६३, ३९५, ३९८, ३९९, ४०५, ४२७, ४४४, ४४६, ४५६, ४६३, ४६६, ४८३, ४८४, ४८६, ४८७, ४९१, ४९५, ४९७, ५३७, ५३८, ५४५, ५४६, ५५३, ५५७, ५६३, ५८५, ५८५, ६४७, ६४८, ६५०, ६६०, ६६१, ६६७, ६८४, ६८६, ६८८, ७००, ७०४, ७१३, ७१४, ७४२, ७५५, ७६२, ७७५, ७७७, ७७८, ८३६, ८३८, ८४६, ८४८, ८५१, ८५३, ८५४, ८५७, ८६७, ८७१, ८७७, ८७९, ८८३, ८८४, ८८६, ८८८, ८९१, ८९३, ८९४, ८९६, ८९७, ९०१, ९०३, ९०४, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००
----------------------	--

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
प्राग्वाट (वृद्धशाखा)	१५५, ८५४
[गोत्र]	
कोठारी	६४७, ६४८, ६५०
झूलर	४२८
दोसी	६५१, ६७७
मडारी	६२१
मुठलिया	७३
लीवा	१२६
अग्रवाल [अग्रोतक]	
[गोत्र]	
गामलु	३२६
गोयल	४५३
पिपल	१४५
वासिल	३२७
अत्ताल	
[गोत्र]	
गोपल	२७
कुर	३२५
खंडेलवाल	४५६
[गोत्र]	
गोभ्रा	४६५
संडिलवाल	३८८
जैरा	३२८, ४७२
[गोत्र]	
कष्टहार	२२१
धर्कट	८६२, ८६७, २६६

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
नना	५१६
नागर	६०१
नारसिंह	
[गोत्र]	
वोस्टेच	७७८
नीमा	६६
पल्लीवाल	६५७
पापडीवाल	७६, ३२३, ३२४
मंत्रिदलीय (महतियाण)	४८, २३६, ४८२
[गोत्र]	
उसियड	१८६
काणा	१०३, १६१, १६२, २१५, २१७, २१८, २८१, ४१८, ४३६
काद्रडा	१६२
घेवरिया	२८४
चोपडा	१७६, १८०, १८८, २४५, २७१
चोपडा (मडन)	६८१
चोपडा (श्रद्धार)	१८२
जीजीआण	१८२
जाटड	२३६, २५६
दान्डा	३६
डुलह	३६
नान्हडा	१८२
बालिडिवा	१६७
भाडिया	२८१
महता	२६०

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञानि गोत्र	लेखांक
मुडतोड	१७१, १७२	परज	१८९
रोहदिया	१६०	गोत्र (ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है)	
वायडा	२१६	उजावल	८८०
वार्त्तिदीपा	१६	उसभ	५४३, ७६७, ८६३
मयला	१६२	ओष्ठ	५५५
मालहण	८५	काठुड	७१५
मोट	५४०, ८८६	गोठी	५६७
राजपूत		जलहर	८०५
चाहमान	९४४	डोसी	५७८
चौलुक	६४२	दूताड	६२०
प्रतिहार	६४५	धांध	६८१
राठउड	७४३	फसला	५८४
सोलंकी	९५६	मिभूज	५६८
लघुशाखा	२६१	मुहता	१६२
बघेरवाल	२२८	राउखा वरही	६४३
[गोत्र]		रहुराली (!)	५८६
राय मंडारी	४३८	वणागीआ	५७६
शंखवाल	७२७	वपुगणा तुडिला	१०२
शानापति	६२८	वाल्लिडिवा	१९७
पंडरेक	८४२	श्रवाणा	५८६
सीढ	७६८	पटवट	७६४
हुबड	३४, ५०७, ५५१, ५७१, ६६६, ६८६	पाटरा	६१६
[गोत्र]		संखवालेखा	७६६
गंगा	५०२		
मंत्रीश्वर	१६		
रजीआण	६५		

आचार्यों के गच्छ और संवत की सूची ।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
अंचल गच्छ ।			१४४६	श्री सूरि	६३
१४४७	मेरुतुग सू०	६२८	१४४६	मुंथवे सूरि सू०	२८५
१४४६	"	२	१५५६	भाववधन गणि	७६२
१४८१	जयकीर्ति सू०	४११	आगम गच्छ ।		
१४८३	"	६७३	१४३८	जयतिलक सू०	७६५
१५०३	जयकेसरि सू०	४१६	१५०६	हेमरत्न सू०	३६१
१५०७	"	६७३	१५१२	"	७४१
१५०६	"	५७८	१५०७	शीलरत्न सू०	४७६
१५२२	"	१२३	१५१०	जिनरत्न सू०	१००
१५२३	"	४६	१५१०	पादप्रभ सू०	६६०
१५३०	"	६६४	१५१७	देवरत्न सू०	५५७
१५३१	"	६६५।६७४	१५४५	सोमरत्न सू०	४२३
१५३२	"	१०८	१५७५	आनंदरत्न सू०	१११
१५३६	"	६६६	उपकेश गच्छ ।		
१५५१	सिद्धान्तसागर सू०	११९	१२५६	कङ्क सू०	७६१
१५६१	भावसागर सू०	६६८	१३५३	देवगुप्त सू०	६२१
१५६५	"	५६८	१४०५	कङ्क सू०	४००
१५७४	"	५००	१४४५	सिङ्ग सू०	४६०
१५७६	"	७६२	१४७१	देवगुप्त सू०	७७४
१६७१	कल्याणसागर सू०	३०७-३१२।४३३	१४८०	सिङ्ग सू०	७७
१६५६	धर्ममूर्ति सू०	७४३	१४८५	"	३८९
१६२१	रत्नसागर सू०	६५२।६५४।६५५	१४८८	"	५५०
१४४७	श्री सूरि	६२८	१४१५	"	५३१

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१४६७	देवगुप्त सू०	२३८	१५८३	देवगुप्त सू०	६६८
१४६६	कक सू०	२१६।४७१	१६०३	कक सू०	७१७
१४६१	"	१३	उत्तराध गच्छ ।		
१५१२	"	४०१।६२३	१६८०	ऋ० ताराचन्द्र	३६७
१५१५	"	५३४	[क] छोलीवाल गच्छ ।		
१५१८	"	५५८	विजयराज सू०		
१५२४	"	५०।२२६	१५५४	कहुआमति गच्छ ।	
१५२५	सिद्ध सू०	५१	..		
१५२६	कक सू०	६६४	१६८३	८०१	
१५२८	देवगुप्त सू०	६२५	कगल-२-७३ गच्छ ।		
१५४६	"	३०	रत्न सू०		
१५४६	"	६७६	१७९०	कमलविजय गणि }	
१५५६	"	७१०	१८६१	विजयमहेद्र सू०	
१५५८	"	६६७	डुमरविजय गणि }		
१५५६	"	५६६	कृष्णार्पि गच्छ ।		
१५५६	कक सू०	६७२	प्रसन्नचन्द्र सू०		
१५६२	देवगुप्त सू०	१२८।४६७	१३७६	४२६	
१५६३	"	२०	१५०३	७८६	
१५७६	सिद्ध सू०	७४	१५०६	नयचन्द्र सू०	
१५८५	"	१५६	कोरंट गच्छ ।		
१६३४	देवगुप्त सू०	६२८	१३४०	नजसू० स० }	
१६५६	सिद्ध सू०	८६०	ककसू० पट्टे }		
१५०१	कुंकुम सू०	७३०	सर्वदेव सू०		
विविंदणीक गच्छ ।			सार्वदेव सू०		
(उपकेश)			१४८२	७६६	
१५२७	मर्त्त सू०	१८	१५०६	४१७	
१५६६	कक सू०	६६७	१५५३	३७	
			१५७६	कक सू०	
				६०३	

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	स्वरत्तर गच्छत ।				
१४१२	जिनचद्र सू०		१५३६	"	२११३८८
	हरिप्रभतणि	२३६	"	जिनममुद्र सू०	६१७
	मोदमूर्त्तिगणि		१५३७	"	७३५
	हर्षमूर्त्तिगणि		१५४८	"	२२०
१४३८	जिनराज सू०	२११	१५५१	"	४१
१४४१	"	६१५	१५५३	"	४६३
१४५६	"	५८३	१५५८	जिनहंस सू०	१०
१४६६	जिनवर्द्धन सू०	२२	१५६०	"	८१७
१४७६	जिनभद्र सू०	४६५	१५६३	"	२८६
१४८४	"	११६	१५६५	"	१८७
१४८५	"	२७५	१५६८	"	४६६१६३
१४८७	"	८	१५७६	"	४२
१५०३	"	६२०	१६५६	जिनचन्द्र सू०	७८०
१५०४	"	७३१	१६५७	"	४३
१५०७	"	२१४१४७३१७७	१६६१	"	५२३
१५०८	"	५०६१७३२१७३३	१६६६	"	७२३
१५०९	"	१२१	१६६८	"	१३५
१५१०	"	४७८	१६६९	"	७७३
१५११	"	१२६१७५६	१६७६	जिनरत्न सू०	७४७
	जिनचन्द्र सू०	४७	१६७७	जिनराज सू०	७७७७८५२५७
१५१७	"	५५६	१६८६	"	
१५१८	" १०३१८६१२१५१७१७१८			३० अभयधर्म	७७१
१५२८	" २१८१६१०		१६८८	"	१७६
१५२९	" ७८		१६८७	जिनराज सू०	
१५३२	" १०७			३० कमल लाम	
१५३४	" ५४५			५० लब्धकीर्ति	१६०
१५३५	" ५६२			५० राजहस	

नाम	लिखांक	संवत्
जिनलाभ सू०	६००	१५२७
जिनचन्द्र सू०	४५	१५२८
वा० अमृतधर्म		१५३१
वा० क्षमाकल्याण		१५५१
जिनचन्द्र सू०	६२७।६३३	१५२४
"	३५८	१५२७
"	१३८।१४४	१५६२
जिनहर्ष सू०	३३८	
"	६३	
"	८७।५२७	१५६६
"	२६१।२६२।५२५	१५६७
"	१६६	१५७१
"	२२४।३३८।३४०	१६६६
जिनसौभाग्य सू०	१२।३०६	१६८६
"	}	१७०७
पं० हीराचंद		१७८०
जिनसौभाग्य सू०	५६६	१७८७
"	१४७	"
"	३४७	"
जिनकीर्ति सू०	३८५	
वा० शुभशीलगणि	१७१।२३६।	१८०३
	२५६।२७०	
धर्मसुन्दरगणि	७७०	
उ० हीरधर्मगणि	४२५	
जिनसुन्दर सू०	४८०	१८२१
"	४८२	१८४६
जिनहर्ष सू०	४८।१६१।	१८७६
	२१६।२८१।४१८	१८७७

नाम	लिखांक
"	१८।५२
"	६६२
"	२८४
"	१४४
उ० कमलसंयम	२५७
"	२५८
जिनतिलक सू० पक्षे	}
जिनराज सू०	
श्रीभिः	
जिनचंद्र सू०	२६०।५२४
"	५६७
जिनरत्न सू०	१६२
आचार्यसिंह सू०	७२३
रत्नतिलक सू०	}
वा० लब्धिलेख गणि	
मन्त्राणकीर्ति	२४५
जिनरंग सू०	२०।
"	२०२
वा भुवनचंद्र	२०३
जिनकीर्ति सू०	}
करमचन्द्र	
हरखचन्द्र	
प्रतापसी	
महेंद्रसागर सू०	६७
रूपविजय	२०६
उ० रत्नसुन्दरगणि	६८
कीर्त्युदयगणि	३८०

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१८८८	जिनचन्द्र सू०	३४३	१५०३	जगन्नी गच्छ	३६६
१८८९	जिनमहेंद्र सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९०	जिननदिवर्द्धन सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९१	मा० विनयविजय शिष्य	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९२	प० कीर्त्यन्ध	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९३	जिनमहेंद्र सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९४	सु० मोहनचन्द्र	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९५	जिनकल्याण सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९६	जिनरत्न सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९७	चन्द्र गच्छ ।	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९८	पूर्णभद्र सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१८९९	चन्द्रप्रभाचार्य गच्छ ।	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९००	चित्रवाल गच्छ ।	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०१	मुनितिलक सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०२	सोमकीर्ति सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०३	सोमदेव सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०४	रत्नचन्द्र सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०५	मा० तिलकचंद्रमुः	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०६	चैत्र गच्छ ।	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०७	अजितदेव सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६
१९०८	गुणाकर सू०	२००३४५	१५२२	जगन्नी गच्छ	३६६

संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	विजयतिलक सू० पट्टे	७९७
	विजयधर्म सू०	
१५१७	लक्ष्मीसागर सू०	२८०।४८३
१५१८	"	६६३५
१५२१	"	४४४।५३५
१५२२	"	५८६
१५२३	"	१४
१५२४	"	१०५।१०६।२८३।५६०
१५२५	"	४८४।६२४
१५२७	"	३९८।७३६
१५२८	"	६६३
१५३०	"	७०।४८५।६२४
१५३२	"	७७७
१५३३	"	५८।३६६
१५३४	"	३६।५३
१५३५	"	५७०
१५३६	"	७३।४४६
१५३७	"	४८६
१५३८	"	५२३
१५३९	हेमसमुद्र सू०	७६०
१५४०	"	४४३
"	सोमदेव सू०	४४४
"	सद्यवल्लभ सू०	५३६
१५४७	जिनरत्न सू०	५३८
१५४८	"	७५५
१५४९	श्रीमसुन्दर सू०	७५३
१५५०	विजयरत्न सू०	६५३
१५५२	सद्यसागर सू०	६८२

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	"	४२०
१५४६	"	७६६
१५५१	"	७०७
१५४५	सोमरत्न सू०	४६०
१५४०	"	४२१
१५५२	श्रीमसुन्दर सू०	७७६
	इन्द्रनन्दि सू०	
	कमलकलश सू०	१५
१५५३	हेमविमल सू०	
	कमलकलश सू०	२४५
१६०३	कमलकलश सू०	
१५५६	हेमविमल सू०	५८०
१५६४	"	१३
१५६६	"	२९१
१६७१	"	६४६
१५७६	"	६६६
	पं० अनन्तसमगणि	
१५७०	वनरत्न सू०	५४०
१५७६	सौभाग्यसागर सू०	२६३
१५७६	राजरत्न सू०	२९४
१५८२	वनरत्न सू०	६१८
१६०३	विशालसोम सू०	१५३
"	विजयदान सू०	६४६-६४८
१६१२	"	६५०
१६११	हीरविजय सू०	७१३
१६२३	"	६५७
१६२८	"	६६७
१६३०	"	२१।९५३।९२५

नाम	लेखांक	संवत्
हीरविजय सू०	१२४	१६८१
"	६०५	१६८४
"	६२०।६३०	१६८६
"	७१४	१६८७
विजयसेन सू० शि०	}	१६८८
धर्मविजयगणि		१६६३
विजयसेन सू०	२२३।५०४	१६६७
"	६८०	१७०१
"	७८२	१७६२
"	१२०	१७६५
"	८२६।८२७	१७७१
विलयसुन्दर गणि	७५२	
कल्याणविजय गणि	११३	१८०१
बा० लब्धिसा० उदयसा०	}	१८५८
सहजसा० जयसा०		१८४५
विजयसेन सू०	}	१८७३
विजयदेव सू०		७२५
विजयदेव सू०	५८१।८५३	१८०३
"	४५२।७५०	१८४६
"	७५५।७५५	
"	५४२।८०५।६०६	
"	६०८	
"	६६४	
"	७८३।८०५।८२३।८३३	१५७१
"	४५५।६५५	
"	१२७।८६५।६७०	
"	७७५।८२८	
"	११५	१८७५

नाम	लेखांक	
जयसागर गणि	६०१।५५२	
विजयसिंह सू०	६०६	
"	८३८।८५६	
"	४५५	
"	५८२	
"	६५६	
"	११४	
"	२८५।५०६	
चन्द्रकुशल गणि	३३४	
विजयरत्न सू०	६४३	
"	}	२०७
जयविजय गणि		
सुमतिचन्द्र गणि		६४४
वीरविजय सू०		१३६
विजयजिनेन्द्र सू०		३१
"	}	
पं० मोहनविजय		६४५
पं० रूपविजय गणि		७४४
विजयराज सू०		३५५

कृतुवपुर्ग मन्त्र ।

[तपा]

इन्द्रावन्ति सू०	८४६
प्रमोदमुन्दर सू०	८२७।८५१
कौसावन्ति सू०	५४

तावकीय गच्छ ।

शान्ति सू०	८८७
------------	-----

लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	११८५	यशोभद्र सू०	७०१
८६६	१४३८	बुद्धिसागर सू०	१७२
११	१४४६	हेमतिलक सू०	८६८
४३०	१४५८	विमल सू०	११७
६०८	१५१९	उदयप्रम सू०	१०८
६	१५१७	वीर सू०	१०४१६१३
६६५	१५२०	शीलगुण सू०	४२२
	१५६६	गुणमुन्दर सू०	४४८
३			
६६२		भावहार गच्छ ।	
६२८	१४६६	वीर सू०	६१६
४८३	१५३२	भावदेव सू०	११८
५५४१		भिक्षमाल गच्छ ।	
४३	१५	...	८१६
७२			
३५		मलधारि गच्छ ।	
७६८	१२५८	देवनद सू०	८७
५६१	१३७८	निलक सू०	६८४
६६	१४८५	...	५०६
५६५	१५१२	गुणमुन्दर सू०	६८१
१३२	१५४६	गुणकीर्ति सू०	४१३
६०४	१५५३	श्री सू०	४८४
५५	१५५८	राहसी...	६४८
	१५७०	...	५८६
७६४		महाहृदीय गच्छ ।	
	१५०५	नयकीर्ति सू०	६२२
८१२	१५५६	मत्तिसुन्दर सू०	४१६

संवत्	नाम	लेखांक
	महुकर गच्छ ।	
१५२७	धनप्रभ सू०	६६५
	यशसूरि गच्छ ।	
१२४२	...	५३०
	रुद्रपल्लीय गच्छ ।	
१४५४	देवसुन्दर सू०	४६१
१५०१	सोमसुन्दर सू०	६६०
१५१६	"	१२२
१५२५	"	७३४
१५३२	गुणसुन्दर सू०	५७६
१५६६	उ० गुणप्रभ	५०१
१६८५	भावतिलक सू०	४६८
	लुपक गच्छ ।	
१६२५	उ० सागरचंद्र गणि	१४८१५०
१६२६	अजयराज सू०	१८४१२०७
१६५५	"	२३५
१६३३	अमृतचंद्र सू०	१६८१६८
	विजय गच्छ ।	
१७१८	सुमतिनागर सू०	७३८
१६३१	शान्तिनागर सू०	१६८१३६६
	३५१३१०३५६३६०३६२	१३७६
	३६४३६६३६८३७०३७२	१४५७
	३७६३७१०८०३८८१०००	१४६६
	विद्याधर गच्छ ।	
१४६६	उदयदेव सू०	८८६
१५३४	हेमप्रभ सू०	७६८

संवत्	नाम	लेखांक
	विधिपक्ष गच्छ ।	
१५०५	जयकेशर सू०	६५६
	वृद्धपोसल गच्छ ।	
१८८१	आनंदसोम सू०	६८५
	वृहद् गच्छ ।	
१२१५	पं० पद्मचन्द्र गणि	८३३८३४
१२६०	शांतिप्रभ सू०	७०२
१३१६	जयमङ्गल सू०	६४३१३४४
१४३३	विनयचंद्र सू०	८५८
१४३८२	अमरप्रभ सू०	३६
१४८६	प्रभ सू०	२७४
१४६३	हेमचन्द्र सू०	६१८
१५०८	महेन्द्र सू०	६८१
१५११	रत्नाकर सू०	२३
१५१८	महेन्द्र सू०	५५६
	सरवाल गच्छ ।	
१११०	..	१
	संडेरक गच्छ ।	
१२८	..	८३८
१३५०	सुमति सू०	५१६
१३७६	"	४१५
१४५७	शांति सू०	७५७
१४६६	सुमति सू०	७५८
१४७२	शांति सू०	४६४
१४८३	"	४६८
१४८६	"	५६६

संवत्	नाम	लेखांक	[जिनके गच्छोंके नाम नहीं लिखे हैं]		
संवत्	नाम	नं०	संवत्	नाम	नं०
१५०६	"	१५१२७८	१०११	बलभद्र सू०	८९८
१५१३	ईश्वर सू०	७६४	१०१२	देवदत्त सू०	१३४
१५२२	सावि (शांति ?) सू०	३८०	१०५३	शांतिभद्र सू०	८३८
१५३४	शांति सू०	७५१	११४४	ऐन्द्रदेव सू०	६१६
१५४५	"	१२४	११४६	— सू०	८८१
१५५७	"	५६४	११५०	महेन्द्राचार्य	३८७
१५६३	"	३६२	१२०३	महत्त सू०	८८५
१५६५	"	५६६	१२२०	आनन्द सू०	८५५, ८७३
१५७२	"	६११	१२३१	नेमिचन्द्र सू०	६१२
१५८६	साल सू०	१७०	१२३४	देव सू०	७२८
१५९७	ईश्वर सू०	८५२	१२३६	वृत्तिग	६०६
१६०३	शांति सू०	६७८	१२५१	सुमति सू०	८७६
१६४१	३० नयसुन्दर प०	७	१२५७	महेष्ठीराचार्य	४०८
१७२८	देवसुन्दर सू०	७१५	१२६८	रामचन्द्राचार्य	८६६
१०	जिनसुन्दर सू०	७१६	१२९६	पूणचन्द्रोपाध्याय	८६३
गच्छ ।			१३१४	चन्द्र सू०	६८६
१८२७	अमृतचन्द्र सू०	३०४	१३१८	भावदेव सू०	५७८
१८०३	शांतिसागर सू०	५६७	१३६८	धर्मदेव सू०	६८३
१८३५	"	५२६	१३७३	मणिभट्ट	६८७
गच्छ ।			१३९६	हंसाक्ष सू०	६१
१८६५	देवसुन्दर सू०	५७६	१३९८	मनेन्द्र सू०	५४५
गच्छ ।			१४८७	महामिन्द्र सू०	६८८
१५५०	विषदत्त सू०	६५	१४२३	सूरप्रभ सू०	९२६
३० शीलकुन्द प०			१४२६	उदयानन्द सू०	६१४
			१४३७	गुणभद्र सू०	४५६
			१४३८	जिनराज सू०	२११
			१४६३	जगप्रभ सू०	६९०

संवत्	नाम	नं०	संवत्	नाम
१४७१	विजयप्रभ सू०	६६	१५३४	श्री सू०
१४८०	विद्यासागर सू०	५८४	१५४०	साधुरत्न सू०
१४८१	सोमसुन्दर सू०	५४६	१५४७	श्री सू०
१४८१	पद्मशेखर सू०	५४७	१५४८	भ० हेमचन्द्र सू०
१४८२	सुविप्रभ सू०	४६७	१५५६	श्री सू०
	वीरभद्र सू०		१५६२	साधुसुन्दर सू०
१४८६	हेमहंस सू०	६५८	१५६३	श्री सू०
१४८६	नरसिंह सू०	६६१	१५८०	सुमतिरत्न सू०
१४८६	रत्नप्रभ सू०	४७०	१५८६	सुमतिरत्न सू०
१४८७	हेमहंस सू०	४२९	१६०५	जिनभद्र सू०
१४८९	नयचन्द्र सू०	६८८	१६१५	तेजस्व सू०
१५०१	श्री सू०	५८५	१६४७	कनकविजय ग०
१५०७	श्री सू०	५३२	१७००	शुभकीर्ति
१५०७	नयचन्द्र सू०	६७	१७०२	जिनचन्द्र सू०
१५१३	श्री सू०	३८३	१७१०	विजयानन्द सू०
१५१३	सर्वानन्द सू०	१०२	१७२१	भ० हीरविजय सू०
१५१४	रत्नशेखर सू०	६४	१७६१	कुशविजय
१५१६	वा० मोदगाज गणि	१३१	१७७१	विजयभृङ्गि सू०
१५१७	उगारत्न	२६३	१७८०	कर्पूर विजय ग०
१५१८	पद्मानन्द सू०	१७५	१८४१	श्रीसुन्दर सू०
१५१८	पद्मचन्द्र सू०	६६१	१८४८	श्रीसुन्दर सू०
१५२०	भ० विजयकीर्ति सू०	७४६	१८८३	श्रीसुन्दर सू०
१५२१	सुविहित सू०	५७४	१८८६	विजयजिनेन्द्र सू०
१५२६	साधुसुन्दर सू०	१२५	१८८८	वा० चारित्रनदि गणि
१५२७	श्री सू०	१५२	१८८९	जिनचन्द्र सू०
१५२७	भावदेव सू०	५६१	१८८९	वा० चारित्रनन्दन ग०